चक्र भेद

(प्रयागी गुण्डों का असम साहस)

बाबू गोपलाराम गहमर निवासी
सम्पादित ।

(जासूस से उद्धृत)

मई सं० १९२६ ई०

जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, काशी में मुद्रित ।

मिलने का पता—
मैनेजर जासूस,
गहमर (गाजीपुर)

मूल्य १।)

चक्रभेद ।

पहला बयान

हाथों में हथकड़ी ।

"मैंने आपको गिरफ्तार किया !"

पुलीस के प्रासिक्यूटर ने बडे तपाक से प्रतापसिंह के कन्धेपर पीछे से हाथ रख कर कहा ।

प्रताप अपने सजे सजाये बैठक में कानून की किताब उलट रहे थे । जहा बिना खबर दिये बिना नौकर गरीबा की परवानगी पाये कमरे में कोई आ नही सकता था वहाँ पुलीस अहलकार के इस तरह पहुच कर गुस्ताखी करने से प्रबल प्रतापी प्रतापसिंह वकील को जो क्रोध हुआ वह कहने की नही स्वयम् समझने की वस्तु है । लेकिन करते क्या । लहूका घूंट पीकर प्रताप ने अपने तईं सम्हाला और कहा— "गिरफ्तार ! किस कसूर में ?"

पुलीसवाले ने उसी तरह गम्भीरता से कहा—"मैंने खून के कसूर म प्रतापसिंह वकील को गिरफ्तार किया ।"

दूसरा बयान २५

प्रेमकी कड़ी ।

प्रतापसिंह इलाहाबाद के सूरजकुण्ड पर रहते थे। वह बड़े घराने के सुन्दर नवजवान थे । उनके बाप और दादा दोनों ही नामी वकील थे । उनके बाप ने बहुत बड़ी उम्र में एक वे अवलम्बको अबला से व्याह किया था । लेकिन प्रताप के पैदा होने पर थोड़े ही दिन बीते थे कि हैजे से उनकी मृत्यु हो गयी । प्रतापकी मा भी पति शोक न सहकर दूसरे ही महीने में पतिलोक सिधारी ।

प्रतापसिंह जब अपने मा बाप की अपार दौलत के मालिक हुए । सरकारी तौर से उनका अभिभावक नियत हुआ । प्रताप ने अपनी मेधा शक्ति और परिश्रम से वकालत पास करके बड़ा नाम पाया । प्रयाग के वकीलों में पंडित अयोध्या नाथ के बाद उन्हीं की बड़ी चलती हुई ।

एक दिन अपने आफिस में बैठे प्रतापसिंह एक सङ्गीन मुकद्दमे में नजीरों की किताब उलट रहे थे कि पुलीस ने पहुंच कर उनको हथकड़ी पहनायी थी ।

गाडीवान टोले में एक धनी आदमी हालही एक मकान किराये पर लेकर ठहरा था उसका नाम केशवसिंह था। उसका ठाट बाट और उसकी तैयारी देख कर महल्ले के लोग दंग हो गये ।

केशव के एक लडकी थी। जिसका नाम केशिनी था। केशिनी की चमक दमक, उसके रङ्ग रूप और बाहरी सजावट पर देखने वालों की आँखें भुलसने लगी। जो लोग स्त्रियों की बाहरी सुन्दरता को ही नारी जाति का महत्व मानते हैं जिनकी दृष्टि में स्त्रियों का मोहकरूप और आलङ्कारिक ठाट बाट ही उनका सर्वस्व है उनकी नजरों में केशिनी के रूप यौवन की बडी बडाई हुई। लेकिन जो लोग मातृत्व और सतीत्व को स्त्री जाति का भूषण समझते हैं। उनकी आखों में ऐसी चटक मटक की छयल चिकनियाँ कामिनियाँ नरक कुण्ड से भी अधिक जलती हुई जान पड़ती हैं। उनकी निगाह में ऐसी स्त्रियों की रूप माधुरी ज्वलन्त अग्नि के समान दाहक होती है।

गाडीवान टोले में ठहरने के पूरे पचास दिन के बाद केशव ने वहाँ के बडे लोगों को एक ठाटदार दावत दी। शहर के बहुतेरे आदमी उसमें नेवते गये थे। प्रतापसिंह भी उसमें बुलाये गये थे।

उन आये हुओं में केशिनी से प्रताप की ही आँख मिलौअल हुई। उसमें केशिनी के बाप केशव की भी मदद मिली। लेकिन मर्द की जाति कैसी होती है। प्रताप एक दूसरी के फन्दे में पड चुके थे तो भी केशिनी के कटाक्षों से घायल हो पडे।

एक दिन प्रतापसिंह रेलवे स्टेशन की ओर घूमने गये ज्योंही हाते से बाहर निकले। केशिनी अपनी साइकिल पर सवार उधर से आपडी। एक पत्थर के खम्भे से ठोकर लेकर उसकी साइकिल गिरी। केशिनी भी मानो गिर कर घायल

हुई। प्रतापसिंह ने दौड़ कर उसे उठाया। केशिनी ने और अपनी देह ढील दी। प्रताप उसको पकड़ कर पङ्खा करने लगे। उपकारी प्रताप ने उसकी बड़ी सेवा की। जब वह होश में आ गयी तब उसको घर पहुचाने का बन्दोबस्त करके आप मकान को लौट गये।

लेकिन चार ही पांच दिन पर प्रतापसिंह ने केशिनी की कला समझली। उसकी ओर से उनका मन एक दम फिर गया।

जब केशिनी को प्रतापका यह भाव उनकी बात और व्यवहारों से जान पड़ा तब उसने बड़ा विकट रूप धारण किया। अब प्रताप उसका सङ्ग छोड़कर अलग हो गये तो भी वह रूपकी देवी लेकिन काम की दानवी केशिनी उनके गले पड़ने का उपाय करने लगी।

पीछे प्रताप को पता लगा कि केशव अपनी बेटी के साथ इसी मतलब से इलाहाबाद में आया है। और बड़े बड़े लोगों को भोज देना भी इसी का एक अध्याय है।

इधर कुछ दिनों से प्रताप का मन पूना नाम की एक सुन्दरी से लग गया था। साधारण रूप देखने से पूना से केशिनी की लुनाई अधिक थी। लेकिन पूना और प्रताप के दिलों का पूरा मिलान हो गया था। पूना के पिता अभी कई कारणों से ब्याह करने में विलम्ब कर रहे थे। पूना की पवित्र लुनाई, उसकी मधुर और सरलता भरी सुन्दरता, चन्द्रमा की शीतल छटा के समान निर्मल और सुस्निग्ध थी।

केशिनी की सुन्दरता आग के समान दपदपा रही थी। उसके रूप में पडने से यदि हीनबल हो तो वह तुरत उबल जाता था। केशिनी की छवि पुरुष की शक्ति पर अधिकार कर के उसको दलित करने वाली मोहमयी थी और पूना की पवित्र शोभा प्यारी और मीठी आँखों को तर करने वाली थी। केशिनी की कान्ति चम चमाती हुई चाह भरी आँखों को चका चौंध लगाती थी। पूना की प्रभा पति के साथ मिलकर घर को स्वर्ग बनाने वाली थी और केशिनी पति को पास पाकर औरों की तृष्णा अपने ऊपर खींचने वाली थी। पूना पति की दासी होकर पति ही को परमेश्वर मान उसकी पूजा करने वाली थी और केशिनी पति के ऊपर चढ़ कर औरों का मान,औरों का बखान चाहने वाली थी। पूना अपने पति की मान मर्य्यादा और बडाई से अपनी मान मर्यादा और बडाई मानने वाली थी केशिनी अपना मान अपनी बडाई और अपना अहङ्कार पति से भी ऊपर चाहने वाली थी। अपने मिजाज और अपनी बडाई के आगे सबको मिट्टी समझती थी।

भगवान का विधान बडा विचित्र है। प्रताप और पूना के सुन्दर निष्कलङ्क मिलान में उनके पवित्र दाम्पत्य प्रेम में केशिनी ने न जाने कहा से आकर विष छिडकना शुरू कर दिया।

तीसरा बयान

हस्त नेस्त।

एक दिन प्रताप ने अपनी सफलता कहने के लिये पूना से भेट की। दोनों एक मोड पर खड़े बाते करने लगे। प्रताप

ने कहा—"अब मेरा तुम्हारा ब्याह पक्का हो गया। अब वह दिन आता है कि हम बेसङ्कोच तुम को धर्म पत्नी कहने में अपना गौरव समझेंगे।

पूना ने कहा—"मेरा अहोभाग्य है। आपको मैं स्वामी पाकर धन्य होऊगी यह मैं किस मुह से कहूं। लेकिन मेरे मन में आप पर जो श्रद्धा भक्ति और अनुराग है उसको मैं बाहर नहीं कर सकती।"

इसी समय घोड़े की टाप सुनाई दी। थोड़ी ही दूर पर एक घोड़ा खड़ा हुआ उस पर जो सवार थी उसने हाथ में चाबुक तान कर उसी के इशारे से पूताप को अपने पास बुलाया। पूताप ने कहा —"आयी पिशाचिनी।"

पू०—जाते क्यों नहीं सुन आओ क्या कहती है? बात कर आने में क्या हरज है?

पूना ने पूताप का चेहरा देख कर समझ लिया कि उनको उस पर बड़ी घृणा हो रही है। वह इससे पहले सुन चुकी थी कि केशिनी उनसे मिला करती है।

बात यह कि दुनियां में कुछ ऐसे आदमी हैं जो पराये का सुख देख कर भर मुह मिट्टी ले उठते हैं। और उसमें खलल डालने के लिये मित्र बन कर या साधु के रूप में पहुच कर तरह तरह की बातों से उसे नष्ट करने की कोशिश करते हैं।

लेकिन पूताप और पूनादेवी का प्रेम इन शैतानों की कसौटी पर पहले ही कसा जा चुका था। पूताप अपनी प्यारी

ठहरा कर केशिनी के पास पहुचे। उसने मुसकुराकर कहा—"अब तो आपका दर्शन दुर्लभ हो गया।"

पृ०—नही काम की भीड से नहीं आ सका। एक दिन मिलूंगा।"

घोड़े ही पर चढ़े चढ़े केशिनी पृताप के कान के पास मुँह करके कुछ कहने लगी। पूना ने मन ही मन कहा—"कैसी बेहया लुगाई है मेरे सामने ही इतनी ढिठाई। पराये पुरुष के मुह के पास मुँह लेजाकर बात करते इसको शरम नही आती।"

लेकिन पूना के मन में कुछ ईर्षा या दाह नही हुआ। इसी समय केशिनी बड़े घमण्ड से हिलती डुलती घोडा बढ़ाती चली गयी। जब पृताप लौट कर अपनी प्यारी के पास पहुचे। उसने देखा कि उनका मन दु खी और चिन्तित है।

पूना ने पूछा—"क्या हाल है?"

पृ०—हाल क्या! यह प्रेतिनी हमारे ऊपर सनीचर होकर इस शहर म आयी है। हँस कर पूना बोली—"इस पृेतिनी की क्या हकीकत जो हमारे सामने हमारे प्यारे का बाल बाँका कर सके।

फिर दोनों में और पृेमकी बातें हुईं। पूना ने कहा-"आज सुना समाज में भजन मण्डली आयी है। लेकिन हारमोनियम बजाने वाला बहुत बीमार हो गया है। मन्त्री जी ने मुझे हारमोनियम बजाने के लिये कहा है। तुम भी आओगे न?"

प्र०-हां मैं जानेवाला तो था लेकिन आज एक बडा सङ्गीन काम आ गया है। इसको निपटाये बिना हमको कुछ सुहाता नही है। आज उसका हस्तनेस्त करना ही होगा।

यही कहकर प्रताप वहां से चले गये।

चौथा बयान

कारवाई।

चन्द्रमा की उजियाली चांदनी में जमनाब्रिज पर खडी केशिनी प्रतापसिंह से बातें कर रही है। कोई दस बज गया होगा। आस पास शान्ति है। यमुना के शीतल जल से सुस्निग्ध होकर ठढी हवा चल रही है। दोनों के चेहरे पर उद्वेग दिखाई देता है। दोनों लोहे का मेहराब पकड़ कर अगल बगल खडे हैं। केशिनी ने कहा—

'तो आप ठीक कहते हैं मुझे नही चाहते?

प्र०—इसके जवाब से आप को दु:ख ही होगा नाहक क्यों ऐसी बात करना जिससे चित्त दु:खी हो।

गुस्से के मारे केशिनी की आखे लाल हो आयी। लेकिन प्रताप उसकी परवा न करके लोहे पर दाहने हाथ से ताल देने और ठकठकाने लगे।

साँपिन की तरह फुफुआकर केशिनी बोली-

"अच्छा यह बात ठीक है कि आप पूनाबाई को चाहते हैं?"

पू०--यह सब पूछने का आप को कोई हक नही है। अब रात बहुत हो गयी चलिये मैं आप को घर पहुचा आऊँ।

के०--जब घर चलना होगा तब आप पहुचा दीजियेगा। पहले मेरी बातों का जबाब दीजिये। अगर नही देते तो मुझे कई बातें आप से अभी पूछने की हैं।

पू०--अच्छी बात है आप पूछिये लेकिन इतना याद रखिये कि जिनका आपने अभी नाम लिया उनकी बात कुछ मत कहियेगा।

के०--क्या! पूना की बात मैं कुछ नही पूछू ?

पू०--नही! हरगिज नही।

के०--यह कैसी बात आप कहते है? ऐसी बेदर्दी का व्यवहार आप को करना उचित नही है। मैंने दो सवाल आप से पूछे हैं। आप मुझे चाहते है या नही? इतना पूछने का मुझे हक नही हैं? आप ही ने तो यह हक मुझे दिया है।

पू०--मेरी समझ में आप की बात नही आयी। मैंने आप को कब क्या पूछने का अधिकार दिया है? साफ कहिये आप का मतलब क्या है?

के०—साफ क्या कहूं खाक पत्थर ? आप को खुद मालूम है कि आपने क्या अधिकार मुझे दिया है। अगर सब खोल कर कहूं तो और हँसी होगी।

इतना सुनते ही प्रतापसिंह ठठाकर हँस पडे बोले—"यह तो आप अच्छा स्वाङ्ग करती हो बाई ! आप का मतलब क्या है ? मेरी समझ में नहीं आता"

के०—मुझे आप पागल मत समझिये। इसमें हँसने की कुछ बात नहीं है। आप मेरी सच्ची बात को हंसी में उडा देना चाहते हैं देखकर मैं भी दङ्ग हो रही हूँ।

प्र०—तो क्या आप के कहने का यह मतलब है कि मैंने कभी ऐसा भाव दिखाया है कि मैं आप को चाहता हूँ। या आप की चाह पाने की लालसा रखता हूँ ?

के०—हां यही मेरा मतलब है ?

प्र०—अच्छा बतलाइये कब मैंने ऐसा भाव दिखाया है ?

के०—आप ने साफ़ शब्दों में मेरे प्रेम की याचना की है।

प्र०—या भगवान् ! आप यह क्या बक रही हो बाई साहबा !

के०— बकती नही जो सच्ची बात है वही मैं कह रही हूँ। आप ने जिस आग्रह और लालसा से मेरी यांचना की थी। वह सब देखती हूँ आज उलट गया है। न वह बातें हैं न वह भाव। आप किसी दूसरे के फन्दे में पड गये हैं। और जिसके

पू०—आप क्या कहती हैं। आप की बातों से तो मैं अवाक हो रहा हूँ। मैंने जबान से या काम से कभी ऐसा भाव नहीं दिखाया जिससे जाहिर हो कि मैं आपको चाहता हूँ। यह तो बिलकुल फरेब की बातें आप कह रही हो।

को०—अब तो आप यह कहेंगे ही। एक अबला को फुसलाकर आपने प्रेमभाव दिखाया और दूसरी से शादी करने जा रहे हैं। अब झूठी बातें बनाकर ऐब छिपाने के सिवाय आपको उपाय क्या है?

पू०—ओ हो! अब मैं समझ गया। मुझ पर इस समय बड़े बड़े फन्दे रचे गये हैं जान पड़ता है। अब तो इस जगह मेरा इस घडी रहना खतरे से खाली नही है।

इतना सुनते ही केशनी ऊपटकर बोली—"तो बेहतर है तुम यहाँ से चल दो। लेकिन मेरा हक देकर-तो जाव।" यही कहकर मुट्ठी बांधे हुए केशिनी वहीं चेहल कदमी करने लगी। उसकी लाल लाल आखें देखकर प्रताप सिंह दङ्ग हो गये। उन्होंने दातों से ओठ काटकर अपना क्रोध सम्हाला और गम्भीरता से बोले—"यह क्या कहती हो केशिनी बाई। आप से भेंट होने से पहले ही मेरा ब्याह पूना से ठीक हुआ पड़ा है। इस बात को परमात्मा जानता है आप नाहक भ्रम में पडी हो। मैंने सपने में भी आप पर ऐसा भाव नही दिखाया जैसा आप कह रही हो। दो एक बार आपसे भेंट हुआ लेकिन मेरा कभी आपसे ऐसा भाव नही रहा न है। इसके सिवाय आप पर मेरी दिल से बडी नफरत है। आपको देखते ही मुझे डर लगता है। आपकी यह सब बातें ऐसी ही

है जैसे कोई बिलकुल बेजान पहचान का आदमी आकर मुझसे कहने लगे कि हमसे उसका प्रेम है।

के०—यह बात है! तो आप मुझे घिनाते हैं मुझे देखकर आप डरते हैं? क्यों मैं चुडेल हूँ या आदमखोर डाइन हूँ? खबरदार प्रताप! अपना भला चाहते हो तो पूना से शादी का इरादा इसीदम दिल से दूर कर दो। मैं कहे देती हूँ नहीं तो तुम दोनों के लिये मैं हौआ हो जाऊँगी।

प्र०—मैं आपको साफ़ कह देता हूँ। बेहतर है कि आज हमारा आप का निबटेरा हो जाय। हस्त नेस्त यही सही।

के०—अच्छी बात है मैं भी यही चाहती हूँ। भर बाँह चूड़ी कि एकदम राँड।

इसी समय एक आदमी उन दोनों की ओर घूरता हुआ बगल से चला गया। प्रताप ने कहा—"अच्छा मैं एक बात पूछता हूँ। आप क्रोध छोडकर अक़ल से काम लीजिये और मेरी बात का जवाब दीजिये।"

केशिनी चुपचाप उसकी ओर घूरती रही। अब प्रताप ने कहा—"आप यही बतलाइये कि जबरदस्ती करके कोई किसी का प्रेम पा सकता है या किसी से शादी ब्याह हो सकता है?"

केशिनी गर्जकर बोली—"सुनो प्रताप मैं असल बात अपने दिल की कहती हूँ। मैं अब तुमसे प्रीति करना चाहती हूँ। अब तो मैं भी तुम्हें घिनाती हूँ। अगर तुम इस रास्ते पर नहीं गये होते तो हो सकता है कि मैं तुमको प्यार कर सकती

के सांचे में ढाल दिया है। यह बात जरूर याद रखो कि स्त्री की ईर्षा और डाह के समान भयङ्कर वस्तु संसार में दूसरी नहीं होती।

पू०—दूसरी वस्तु संसार में जरूर है।

केशिनी ने कड़क कर पूछा—"है तो बतलाओ क्या है ?"

पू०—वह तो यही आप को यह मुहब्बत है।

इतना सुनने पर तो केशिनी आपे से बाहर हो पड़ी और हाथ उठाकर प्रताप पर वार करने चली। प्रताप ने भी उसका हाथ पकड़ लिया। दोनों में हाथापाही होने लगी। लेकिन प्रताप उसका धक्का सम्हाल नहीं सके। वह धरती में जा गिरे साथ ही केशिनी पुल के नीचे पानी में जा गिरी।।

अब केशिनी को जमुना की धार में चुभकियाँ लेते देखकर प्रताप के चोरे तो लोहू नहो। मन में उनके आया कि यह तो बड़ा अनर्थ हुआ। झट आप भी उसी जगह कूद पड़े। अब वह तीसरा आदमी जो बगल काटकर गया था वहां आ पहुंचा उसने थोड़ी देर तक धार में नजर गड़ाकर देखा फिर तेजी से किनारे पर दौड़ गया। और किनारे ही किनारे चला गया।

इस घटना के दूसरे ही दिन शहर भर में खबर उड़ी कि नये आये हुए धनी सज्जन की लड़की का पता नहीं चलता। बस पुलीस में रिपोर्ट हुई। बड़ी सरगर्मी से तहकीकात होने लगी। और प्रताप गिरफ्तार कर लिये गये। यह भी मालूम हुआ कि लाश जमुना तट पर पायी गयी है।

पाँचवाँ बयान

जुर्म से इनकार।

आज इजलास में भीड के मारे पीठ पर पीठ छिलती है। शहर भर में जिस खून की चर्चा थी आज उसी खून का मामला अदालत में पेश है। इसके सिवाय प्रयाग के नामी वकील प्रताप सिंह खूनी कहकर कठघरे में खड़े किये गये हैं। जिसके तीन पुस्त से वकालत चली आती है जिसने सैकडों खूनियों को अपनी बुद्धि और चाल की चाल निकालने की चातुरी के प्रसाद से फाँसी की तिकठी से उतारा है वही आज खूनी होकर असामी के कठघरे में खडा है।

इसी समय सडक पर से कोई चिल्ला कर गाता हुआ निकलाः—

एक दिनवाँ सबही पर बीती।
हम जानैं हमहीं पर बीती॥
सूरज चाँद बसे जग ऊपर,
ग्रहण लगे उनहूँ पर बीती।
एक दिनवाँ सबही पर बीती॥
रामचन्द्र दुनियाँ के मालिक,
सीता हरी उनहूँ पर बीती।
एक दिनवाँ सबही पर बीती॥
रावण नृप शासत त्रिभुवन को,

जगत अधीन किये जिसने सब,

लङ्क जरै उनहूँ पर बीती।
एक दिनवाँ सबही पर बीती॥

सब ने बडे ध्यान से उस गाने वाले की मम भरी बातें सुनीं। न्यायसिंहासन पर बैठे हुए मैजिस्ट्रट ने भी कलम कान पर रखकर शान्त भाव से उसका गाना सुना। फिर उसके आगे बढ जाने पर सबका ध्यान सामने टेबुल पर पडी हुई लाश पर गया। एक सफेद कपडे से लाश ढकी हुई थी अब उघार दी गयी। लाश पर पाच जगह चोट के निशान देखकर लोग दांतों उगुली काटने और आपस में कहने लगे—"जिस शैतान ने इस सुन्दरी पर हाथ चलाया है उस हत्यारे का पत्थर कलेजा तनक नही पसीजा। यह बडे शैतान का काम है।" एक ने बहुत धीरे से कहा—"वकील ऐसेही बेदर्द होते हैं सफेद को स्याह, स्याह को सफेद करते जरा भी नही हिचकते।"

अब मैजिस्ट्रेट ने कहा—"अच्छा जी असामी!

इतना सुनतेही इजलास पर सन्नाटा छा गया। किसी के मुँह से अब बात नहीं निकलती। प्रताप की इस दशा पर बहुतों को तरस भी आया। कितनों ने रूमाल निकाल कर आंसू पोंछे।

इसी समय केशव की पुकार हुई। वह गवाह के कठघरे में आ खडे हुए। उनकी उम्र बयालीस बरस की है। चेहरे के अच्छे हैं लेकिन मूरत देखने से मालूम हुआ कि रोते रहे हैं। और पुकार होते ही आंसू पोंछते हुए आये हैं।

अब केशव को हलफ दिया गया। और बलिद्यत कौमियत लिखा कर वह अपना बयान देने लगे। अपना बयान देते हुए बेचारे केशव ने जरा भी इधर उधर नहीं किया न आंसू ही गिराया। खूब सावधानी से अपने तईं सम्हाल कर सीधी सीधी बातें शुरू कर दीं। उन्होंने टेबुल पर रखी हुई लाश की ओर उंगली बता कर कहा—'यही मुझ अभागे की वह बदनसीब बेटी है। ६ तारीख रविवार को मैंने बैठक में पहुंच कर देखा तो यह घूमने जाने के लिये तैयार है। मैंने कहा—"अब सूरज डूब चुका इस रात के अकेले कहाँ जाओगी बेटी!" उसने कहा—जमुना ब्रिज पर घूमने जायगी। और यह भी कहा कि प्रताप भी वहाँ आने का वचन दे चुके हैं तब मैंने देखा कि सयानी लडकी के इस काम में रुकावट डालना ठीक नहीं है। चुप हो गया लेकिन फिर मुझे उसको जीते जी देखना नसीब नहीं हुआ फिर उसको मैंने मरा हुआ ही देखा है। लाश जमुना के किनारे घायल मिली है।

मेजिस्ट्रेट ने केशव को लाश के पास जाकर पहचान करने का हुक्म दिया। जब वह लाश देखकर हट गये तब प्रताप भी जो चुपचाप सिर झुकाये हुए मन में कुछ सोच रहे थे लाश के पास गये। लेकिन चेहरा देख कर मानो आस्मान से गिरे। उनकी आँखें चढ गयी। कुछ भी उनको समझ में नहीं आया कि क्या हुआ है? फिर उसी समय उनका चेहरा प्रसन्न हो आया मुसकुराते हुए अपने कठघरे में पहुचे।

इसी समय केशव ने विनती की—"अदालत की परवानगी मिले तो इस समय मैं एक छिपी बात निवेदन करूँ जिससे मालूम हो जायगा कि यह कैसा भयानक चक्र मुझ पर चलाया गया है।

हाकिम का हुक्म हुआ—"अगर उस बात से इस मामले का सम्बन्ध है तो हम सुनने को तैयार हैं।"

के०-हाँ हुजूर खूब सम्बन्ध है।

हा०-अच्छी बात है कहिये।

अब केशव वह गुप्त भेद कहने लगे—"मैं जो बात कहता हूँ वह बहुत गुप्त होने पर भी यहाँ के पुराने भेदू आदमी जानते हैं। प्रताप के बाप ने जिस स्त्री से शादी की थी उसके कोई नहीं है यह बात गप्प उड़ायी थी। असल में उसका एक नशेबाज भाई था। वह बड़ा पियक्कड़ महा गँजेड़ी था। इसी से उसकी बहन ने जाहिरा उससे नाता नहीं रखा। शादी होने पर उन्होंने प्रताप के पिता अर्थात् अपने पति से उसकी बात कह दी। वह गुप्त रूप से उसकी धन से मदद करते थे लेकिन वह भी लोगों में उसको अपना साला कह कर परिचय नहीं देते थे। जब प्रताप के मा बाप दोनों मर चुके तब उस मामा ने इनके पास पहुच कर अपना परिचय दिया लेकिन इन्होंने उसको अपना मामा कह कर जाहिर नहीं किया। लाचार होकर उस बेचारे ने अपना नाम बदल डाला और अपने बल व्यवसाय से गुजारा करने लगा वह इनका मामा मैं ही हूँ। उन्हीं प्रताप ने अपनी मौसेरी बहन का खून किया है।

अब प्रताप से रहा नहीं गया। क्रोध के मारे जोश म भर कर बोल उठे—"हुजूर दोहाई सरकार की इस आदमी ने जो बातें कही हैं सब झूठी और गढ़ी हुई हैं। इसकी एक बात भी सच्ची नहीं है। एक ओर मेरी बहन बनाया जाना है दूसरी ओर दूसरा ही अपराध लगाया जाता है।"

मैजिस्ट्रेट ने असामी को रोक कर कहा—'इस बात से मुकदमे का कुछ सम्बन्ध नहीं अगर आगे जरूरत पड़ेगी तो इस पर खयाल किया जायगा। तुमने लाश देख ली है। अब अपना मतलब तुम जूरी को बता सकते हो।

केशव ने कहा—'हजूर चेहरा ऐसा बिगड़ गया है कि मैं हलफ लेकर नहीं कह सकता कि यह मेरी लड़की है। इसके हाथ के निशान, बाल, दांत सब हमारी लड़की के से ही हैं जांघ में एक निशान था वह भी इसमें मौजूद है। इसके हाथ में हमारे नाम की अङ्गूठी मिली है। इसके कपड़े मेरी लड़की के हैं। इन्हीं सब बातों से मैं कह सकता हूं कि यह मेरी लड़की है।"

फिर डाक्टर का बयान हुआ जिसने लाश की जांच की थी। उसने उसके मरने का कारण बतलाया। उसके बाद एक और आदमी की पुकार हुई। जब वह गवाह के कठघरे में आया उसको देख कर लोग अवाक् हो रहे। उसने बयान किया—

'मेरा नाम रघुपति है। मैं उस रात रविवार को पुल पर से आया था। जिसकी लाश है उसको और असामी को बातें करते देखा था। वह यही कपड़ा पहने थी जो लाश पर है।

एक जुरी ने पूछा—'उस समय कितना बजा था?"

गo—नव बजकर बाईस मिनट हुए थे।

जुo—मिनट भी याद है?

गo-हां क्योंकि हमको गाड़ी पकड़ना था। पुल पर आकर घड़ी वहीं मैंने देखी थी फिर आगे बढ़ गया।

ज़ु०—आपने ठीक ठीक इसी असामी को वहां बात करते देखा था।

ग०—हाँ! हाँ! उँजेली रात थी। मैंने अच्छी तरह पहचाना था।

मैजिस्ट्रेट ने कहा—"अच्छा कहते चलो।"

ग०—मैं जब इन लोगों के पास पहुंचा तब इनकी बातें बन्द हुईं। जब आगे बढ़ गया तब सुना स्त्री कहती थी—"तुम्हारे ही विश्वासघात से मेरी मुहब्बत दुश्मनी से बदल गयी है। इस मर्द ने भी बड़ी बेदर्दी से कड़क कर बातें कीं। मैंने समझा कि कुछ घटना न हो जाय। इसी से मेरे मन में डर हुआ कि वहां तीसरा कोई नहीं था। मैं थोड़ी दूर पर छिप रहा। वहां से मुझे उनकी बातें तो नहीं सुनाई देती थीं। लेकिन एक बार इस मर्द को यह कहते सुना—"बस अब मेरी जान इसी से बचेगी कि तुम्हें इसी जमुना में डाल कर खतम कर दूं। या उठा कर यहीं से गिरा दूं। दूसरा कुछ उपाय नहीं रहा।" यह आवाज जोर से आयी इसी से मैंने सुन ली और झट छिपी जगह से निकल कर इनके पास चला मुझे मालूम हुआ दोनों में गुत्थम गुत्थी हो रही है। मर्द का हाथ मैंने उठते कई बार देखा और हुमक कर मारते भी सुना। फिर धम्म से पानी में गिरने की आवाज आयी। उसके बाद ही फिर आवाज सुनाई दी। यह मुझे नहीं दिखाई दिया कि मर्द के हाथ में कोई हथियार था या नहीं? लेकिन इतना मैंने समझ लिया कि जान लेने देने का मामला हुआ है। बस मैं इतना ही जानता हूँ।

उसका बयान हो चुकने पर इजलास में सन्नाटा रहा। असामी बड़ी धीरता से कठघरे में खड़ा था। उसके चेहरे पर घबराहट नहीं थी। एक और आदमी ने गवाही दी वह रेल का लाइन खलासी था। उसने बयान किया मौके पर हाथा पाही के निशान देखे थे लेकिन कहीं खून के दाग थे या नहीं इस पर खयाल नहीं किया। एक चौथे आदमी ने भी इजहार दिया सब का बयान हो जाने पर मैजिस्ट्रेट ने असामी से पूछा—"तुम को कुछ कहना है। मैं दौरा सुपुर्द करने से पहले तुम्हारी बात सुनना चाहता हूँ।"

असामी ने कहा—"इस टेबुल पर जो लाश पड़ी है इसके खून की बाबत मैं कुछ नहीं जानता। मैं इसके खून में बिलकुल बेगुनाह हूँ। इस बात को परमात्मा जानता है। मैं इस समय और कुछ कहना नहीं चाहता।"

इतना सुनने पर देखने वालों में बड़ी खुशी हुई। एक आदमी ने तो दौड़ कर असामी से गले लगना चाहा लेकिन सन्त्री के मना करने पर वह लौट गया।

छठा बयान

असामी दौरा सुपुर्द।

इसी समय बड़ा शोर मचा। एक आदमी बेतहाशा दौड़ा हुआ इजलास पर पहुँच गया। सिपाहियों ने बहुतेरा रोका लेकिन उनकी कोशिश नाकाम हुई। जब वह मैजिस्ट्रेट के सामने पहुँच गया तब दो सिपाही दौड़े लेकिन हाकिम के

इसके बाद मैजिस्ट्रेट को असेसरों ने कहा कि प्रताप इस मामले में खूनी है उसी ने खून करके लाश जमुना में फेंक दी है।

अब मैजिस्ट्रेट ने प्रताप को दौरा सुपुर्द कर दिया। सिपाहियों ने बड़ी कठिनता से भीड़ हटायी। प्रताप के कुछ परिचित भी वहाँ गये। उन लोगों ने हलफ लेकर कहा कि उन लोगों को अच्छी तरह मालूम है कि इस मामले में तुम बेगुनाह हो लेकिन वकील बैरिस्टर क्यों नहीं करते।"

प्रताप ने मुसकुरा कर कहा—"दौरा अदालत में मालूम हो जायगा कि किस वास्ते वकील बैरिस्टर नहीं करते।"

अब सब लोग निराश हो कर चले गये। सन्त्री भी प्रताप को हवालात में ले गये।

सातवाँ बयान

लंगट बाबा।

अब शहर भर मे प्रताप के मुकद्दमे की चर्चा होने लगी। छोटे बड़े सब की जबान पर इस खून की बातें थीं। हाट बाट सर्वत्र लोग इस पर बात बहस करने लगे। किसी ने कहा—केशव महा शैतान नरपिशाच है इसने बेचारे सहायहीन प्रताप को सिकंजे में डालकर चांपना शुरु कर दिया है। और अदालत में मामा बन कर भांजे का सत्यानाश करना चाहता है। उसका मतलब है कि प्रताप इस अपराध में फाँसी चढ़ जायँ

व्रिज पर पहुँची । वहां जाकर खडी हुई और परमात्मा से विनती करके बोली 'हे नाथ ! हे प्रभो ! हे दीनवन्धु ! मेरे स्वामी का सकट दूर करो । हे जमुना मैया ! सहाय हो माता ! उन्होने ठीक कहा था कि यही चुडैल मेरा सर्वनाश करेगी । वही हुआ । हे बहन केशिनी ! बहन केशिनी ! आओ ! तुम अगर नही मरी हो तो आओ । मेरे प्यारे को बचाओ ! वह मुझे चाहते है मुझ म उनका सच्चा प्रेम है अगर इसी लिये तुमने उन पर आफत डाली है तो आओ बहन ! मैं ही ऐसी जगह जाती हू जहाँ मुझे कोई नही देख सकता । मै तुम्हारे वास्ते ससार छोड दूंगी । बहिन तुम आओ ! मेरे प्यारे को बचाओ । हे भगवान ! बचाओ ! गुहार लगी नाथ ! 'त्रिया गोहार ! गाय गोहार ! इस अभागिनी की विन्ती पूरी करो प्रभो ! हे नाथ हे अखिलनायक विश्वम्भर !

ऐसा जान पडा मानो कोई देवकन्या परमात्मा से प्रताप के लिये मङ्गलकामना कर रही है । इसी समय पीछे से आवाज आयी –"चिन्ता मत करो बेटी ! तुम्हारी विनती भगवान पूरी करेंगे । तुम्हारे प्यारे को परमात्मा बेगुनाह साबित करेंगे ।"

पूना इस आवाज से चौंककर पीछे देखती है तो एक आदमी थोडी दूर पर खडा है । उसको देखते ही डरी और चिल्लाकर बोली –"कौन है । कौन मुझे प्रबोध दे रहा है ।"

"मै हू बेटी ! मुझे लोग लँगड़ कहते है ।"

अकचकाकर पूना ने कहा—"अरे बाबा ! तुम किधर से आ गये ।"

"क्या कहूँ मै इजलास पर सच्ची बात कहने गया था ।

उसी सची बात के कहने से हमको सिपाहियों ने हवालात में बन्द कर दिया। कहने लगे झूठी बात कहो तो छोड देंगे।"

पू०—तो हवालात से कैसे निकल आये बाबा! क्या झूठ बोल के छुट्टी पाये हो?

"तुम ऐसी बात क्यों कहती हो बेटी! मुझे तो आज पाच बरस से तुम देखती हो। मैं गाजा भाग खाता हूँ। दम लगा कर ही दिन बिताता हूँ लेकिन मै झूठ कभी नही बोलता न कभी बोलूगा। पुलीस जब किसी मामले में अपराधी को नही पाती तब मेरे ऊपर चाप चढ़ाता है यह बात सही है लेकिन सारी दुनियाँ तो मुझे पागल कहा करती है। मेरे ऐसे पागल का पुलीस कर ही क्या सकती है। न हम उसके किसी काम के है न मुट्ठी ही गरम कर सकते हैं उसको।

पू०—तब छुट्टी कैसे मिली बाबा तुमको?

"यह तो मेरा मन है। जब मैंने चाहा कि निकल जाऊँ झट निकल आया।"

पू०—अरे तब तो तुमने सब चौपट कर दिया बाबा। जब तुम भाग आये हो तब हाकिम तुमको विश्वासी नही समझेंगे न तुम्हारी बात पर विश्वास करेंगे। नतीजा यही होगा कि हमारे मालिक को फांसी हो जायगी। यह तुमने क्या कर दिया?

"नही मैं अपने मन से भाग कर नही आया हूँ बेटी! वहा तो मुझे मौज था। गाजा भाग को भी मिल जाता रहा।"

"तब आये कैसे?"

ल०—आया हूँ मैं प्रताप को बचाने के वास्ते।

पू०—तो जो कुछ तुमने बयान किया है बाबा! उसके

सिवाय तो और कुछ नहीं न कर सकते ?

"हाँ काहे नहीं कर सकता। उस लौंडिया को लाकर मैं कचहरी में हाजिर कर दूगा।"

पू०—अच्छा यह तो बोलो! तुमने ठीक पहचाना था। बाप बेटी को बातें करते देखा था? भूले तो नहीं न? नशा पानी तो नहीं किया था?

"नहीं बेटी! नशा पानी की बात नहीं जैसे तुमको पहचानता हूँ वैसे ही केशिनी को पहचानता था उसकी बातें मैंने सुनी थी। क्या सचमुच तुम भी मुझे अब पागल समझने लगी!"

पू०—लेकिन तुम उसको कहाँ ढूढोगे? अगर नहीं मिली तब तो सब चौपट हो जायगा। तुम्हारी गवाही के सिवाय और कुछ तो सफाई हई नहीं है उनके वास्ते!

"कुछ परवा नहीं बेटी। मुझे गवाही देने से जेल में रखा था। मैं चला आया हूँ। फिर इजलास पर बड़ी अदालत में जाकर गवाही दे आऊँगा बस! इसमें क्या आता जाता है।

आठवाँ बयान

पूना का विश्वास।

पूना ने बडी नरमी से पूछा—"काहे बाबा! सच बोलो तुम कौन हो? हम लोग जो समझते है वह तो तुम हो नहीं। कहो अपना भेद नहीं दोगे?"

ल०—क्यों बेटी! ऐसी बात क्यों कहती हो?

पू०—"असल बात ऐसी है बाबा कि तुम्हारी आज की बातें सुनने से मेरे मन में यह आता है कि जैसा हम लोग तुमको साधारण समझते हैं वैसे तुम हो नहीं। अब सच्ची बात कहो तुम कौन हो?"

इतना सुनते ही लँगटू बाबा ठठाकर हँस पड़े। उनके चेहरे पर अनुपम ज्योति फूटी। बोले—"हाँ बेटी! ठीक कहती हो तुम्हारा अटकल दुरुस्त है। मैं उतना देहाती गँवार नहीं हूँ जितना सब लोग मुझे समझते हैं। मैं यूनिवर्सिटी का एम० ए० पास हूँ।"

पू०-ओ हो! तब तुम इस तरह क्यों रहते हो बाबा? क्यों नहीं अपने असली रूप में आते?

"ना बेटी! उसमें आने की जरूरत नहीं है। जैसे चक्र में आज प्रताप पिस रहा है उससे भी विकट चक्र में पड़ कर मैं इस हालत को पहुँचा हूँ।"

पू०—तो चक्र चालियों को फल देने के बदले तुमने अपनी आदमियत ही छोड़ दी?

"सुनो बेटी तुम जैसी दया मुझ पर करती हो प्रताप का भी वैसा ही विश्वास है। लेकिन कुछ चिन्ता की बात नहीं मैं ने प्रताप का उपकार करने की ठानी है। इसके वास्ते मैं अपनी जान की भी परवा नहीं करूँगा। पहले मैं प्रताप को बचाऊँगा। पीछे अपने प्राण की रक्षा करूँगा। तुम परवा मत करो। चक्र चालियों का सब व्यूह टूट जायगा। दुनिया में सत्य की ज्योति असत्य के पहाड़ से भी नहीं छिप सकती।"

पू०—इसके वास्ते तो धारा कुछ भी चिन्ता नहीं है। आज तुम्हारी बात से मुझे दूना बल हो आया है। अब मैं घर

आऊँगी। तुमसे फिर कहाँ भेट होगी बाबा! देखो छिप कर रहना नहीं तो पुलीस पकड़ ले जायगी तुमको।

ल०—सो ठीक है बेटी उसकी परवा नहीं लेकिन तुमको एक बार प्रताप से भेट करना होगा। मुझे रुपये की जरूरत है लेकिन अपने वास्ते नहीं उसी प्रताप को बचाने के लिये रुपये का काम पड़ा है।

पू०—कुछ परवा नहीं। उनको बचाने के लिये जो कहो मैं करने को तैयार हूँ बाबा।

"अच्छा आओ बेटी तुम हमारे साथ।" यही कह कर लगडू बाबा बड़ी तेजी से आगे बढ़े। पूना भी उनके साथ चली। कुछ दूर जाकर जमना के किनारे से थोड़ी दूरी पर एक पत्थर का टुकडा दिखाया। कहा—कलह इसी समय यहा आना अगर मुझसे भेट नहीं हो तो इसी के नीचे एक चिट्ठी मिलेगी उसको ले जाकर प्रताप को देना। और वहां जो कुछ बीते सो लिख कर लाना। रात के अगर नहीं मिलू तो इसी पत्थर के नीचे रख जाना। हो सकेगा इतना ?"

खुशी से पूना बोली—"हां हा! हो जायगा।"

"अच्छा एक बात याद रखना। मेरे चले आने पर अब वहा खोज शुरू होगी। तुम्हारे पीछे भी आदमी लगेंगे। लेकिन खूब खबरदारी से रहना। यहां का तुम्हारा आना जाना या कुछ चीज यहा से ले जाना अथवा रख जाना किसी को किसी तरह मालुम न होने पावे नहीं तो सब गुड गोबर हो जायगा।"

पू०—यह सब तो मैं समझ गयी। लेकिन तुम्हारी खोज में मेरे पीछे क्यों आदमी लगेंगे बाबा ?

"इसका कारण है। लोग समझेंगे कि मैं जब बातें प्रताप से करूगा तब तुम्हारे ही जरिये करूगा।"

पू०—ऐसा समझने की वजह क्या ?

"वजह ऐसी कि सरकार को तो ऐसा ख्याल नही होगा लेकिन केशव अपनी इस कारवाई से नही चूकेगा। और उसके ऐसा करने का एक कारण भी है।"

पू०—वह क्या ?

"वह यह कि प्रताप के तो और कोई है नहीं। जब उसको फांसी का हुक्म होगा तब अपनी सब सम्पत्ति वह तुम्हीं को बख्श देगा। इसी से सब तुम्हारे पीछे पड़ेंगे।"

पू०—ओ हो! या भगवान! यह क्या प्यारे फांसी पर चढ़ेंगे और मैं उनकी दौलत भोगूगी। इससे तो पहले ही मुझे मरजाना अच्छा है।

"वह बात है नहीं बेटी। न यहा तक नौबत आवेगी। लेकिन यह तुम अच्छी तरह जान रक्खो कि प्रताप काही सब हड़पने की नीयत से केशव यहां आया है पहले उसने अपनी केशिनी का फन्दा डाला। जब उससे काम नहीं बना तब यह पाखण्ड रचकर चक्र चला रहा है इसी से मैं कहता हू कि तुम खूब खबरदारी से रहना बेटी। जरा भी चूक न होने पाये।"

पू०—तुमने यह सब खबर कहां से पायी बाबा ?

"अब किसी दूसरे दिन पूना! मैं आज चलता हूँ।" यही कहकर लंगटू बाबा यहा से चलते बने। किसी के पांव की

आहट पाकर ही वह सरके थे। पूना भी वहीं छिप गयी। जब वह चला गया तब वहां से निकल कर अपने घर को रवाना हुई।

नवाँ बयान

जुर्म की गवाही।

बड़ी तेजी से पूना अपने घरको जा रही थी। लेकिन जहा अब माघ मेले का टिकट घर बनता है वही पुल के पास पहुचते ही किसी ने रोका कहा—"अरे कहाँ चिरई। इतनी तेजी से क्यों उड़ी जाती हो?"

इतना सुनते ही पूना के तो देवता कूच कर गये। बेचारी कांप कर वही खड़ी हो गयी। मुह से कुछ कहते नहीं बना। वह आदमी उसके पास आया और मुह के पास मुह लेजाकर बोला—'ओ हो! तुम हो पूना!"

पूना ने पहचान लिया कि वह केशव था उसने सम्हाल कर कहा—"अच्छा रास्ता छोड़िये मैं जाऊ।"

के०—हाँ! हाँ! तुमको कोई रोकता नहीं लेकिन मैं जो पूछता हूँ सो बतलाती जाओ।

इतना सुनते ही पूना का डर क्रोध से बदल गया आंखें लाल हो आयी। कड़क कर बोली—"इतनी रात के मैं आपकी बात का जवाब नहीं दे सकती।"

के०—कितनी रात गयी है मालूम है निशाविहारिणी?

"ना"

के०—बारह बज गया है।

"बजने दीजिये। मैं जाती हूं हट जाइये आप।"

के०—अच्छा बतला सकती हो इतनी रात के कहां किस काम के वास्ते गयी थी।

"मैं आपको नहीं, जानती।"

के०—यें! जानती नहीं हो आप! जिस अभागिनी केशनी का जमना के पुल पर खून हुआ उसीका तो मैं बाप हूं आप! आप मुझे भूल गई?

"मुझसे इससे क्या लगाव है?"

के०—लगाव हो चाहे नहीं लेकिन मुझे यह जानना है कि इस खून में आप कहां तक शामिल हैं।

"अबतो आप एक अबला की बेइज्जती करते हैं साहब।"

के०—नहीं साहब! इस खून में जो पकड़ कर दौरा सुपुर्द किया गया है उसी की प्यारी से मैं पूछता हूं कि इस रात के उस खून की जगह पर किस नीयत से घूम रही है।

"मैं आप से अब बात नहीं करना चाहती। बेहतर है कि आप रास्ता छोड़िये मैं चली जाऊं।" इतना सुनने पर वह हट तो गया लेकिन कड़क कर इतना कहा-"अच्छी बात है आप मेरी बातों का जवाब नहीं देतीं तो न सही लेकिन ऐसी जगह मैं आपको ले जाऊंगा जहां आपको जवाब देनाही पड़ेगा। जान पड़ता है इस खून में कोई प्रताप का दिली आदमी भी था।"

अब पूना से नहीं सहा गया। क्रोध के मारे जोश में आकर बोली—'जरूर यह भी हो सकता है कि आपका यह हक उसी जगह पर टूट जाय जहां आप हमको बुला ले जाने वाले हैं।"

यही कह कर पूना तेजी से चल पड़ी थी। चलते चलते उसने केशव की यह बात सुनी—'यह भी हो सकता है कि आपको इसकी वहीं जवाब देही करना पड़े।"

दसवां बयान

प्रताप के बेरिस्टर।

दूसरे ही दिन यह खबर शहर भर में बिजली की तरह दौड़ गयी कि लगट्ट बाबा हवालात से भाग गये हैं। लेकिन पूना का दिन कटना मोहाल हो गया। वह मन में कहने लगी कि कब सूरज डूबेंगे। कब रात होगी। इसी इन्तिजारी में तीसरे पहर को नोकर ने खबर दी कि एक भलेमानस भेंट करने आये हैं।

इतना सुनते ही पूना की आत्मा उड़ गयी। उसने समझ लिया कि उसी पातकी ने प्रताप का मुझे दिली कहकर रिपोर्ट की है और पुलीस मुझे पकड़ने आयी है। पूना सरल स्वभाव की थी लेकिन उसके भीतर बल बहुत था। प्यारे के सङ्कट समय में उसकी बुद्धि और तेजी दिखाई देने लगी। झट स्थिर चित्त होकर उस भले आदमी से भेंट करने के लिये बैठक में

आयी। वह आदमी उसको देखते ही आसन छोड़कर उठ खड़ा हुआ और सन्मान से बोला—"आपही पूना बाई है ?"

'हां! हां! विराजिये कहिये किस काम से आप पधारे है?"

"मेरा नाम योगेन है। मै प्रताप का वेरिस्टर हूं। उन्ही के कहने से मैं आपसे भेट करने आया हूं।"

खुश होकर पूना बोली—'ओ हो। तब तो बड़े भाग से आपके दर्शन हुए। कहिये उनकी क्या दशा है। तकलीफ तो उनको बहुत हो रही है। न जानें भगवान की कैसी विचित्र लीला है। लेकिन इस तरह किसी बेगुनाह आदमी को ऐसा दुःख होगा तो किसी को धर्म्म में कैसे आस्थार सकेगी। अच्छा यह तो कहिये आप उनको इस सङ्कट से बचा सकेंगे न ?"

यो० —भरोसा तो ऐसा ही होता है लेकिन उन पर सुबूत ऐसे हैं कि हिम्मत छूट जाती है। इसके सिवाय एक लॅगटू बाबा ही की गवाही पर दार मदार है। लेकिन वह जेल से भाग गया है। इससे अब हमारे पास कोई उपाय नहीं रहा न मुझे यही समझ में आता है कि क्या करूं ?

पूना ने चारों ओर ताक कर कहा—"लॅगटू बाबा तो जरूर पेशीपर आकर बयान देंगे।'

अब तो खुशी से मानो वकील का चेहरा प्रसन्न हो आया। पूछने लगा—'आपको ठीक मालूम है यह बात ?"

"हॉ! हॉ! इसमें क्या पूछना है ?"

"कैसे यह बात आपको मालूम हुई ?"

पू०—खुद बाबा ने ही मुझ से कहा है।

'तो उनसे आप से भेंट हुई थी ?"

पू०—हाँ ! हाँ !

"कब ! कब ?"

पू०—कल्ह रात के।"

"पहले से उनकी खबर मिली थी ?"

पू०—जी नहीं। आकस्मात भेंट हो गयी।

"तब तो बड़ी खुशी की बात है। मैं तो उनके लिये अधीर हो रहा था। आप मुझे वह सब बातें बतला सकती हैं जो उन्होंने कही हैं उन बातों की मुकदमे में मुझे बहुत जरूरत है।

"हाँ ! हाँ ! क्यों नहीं बतलाऊँगी।" यही कह कर पूना ने वह सब बातें कहीं जो उनसे लँगटू बाबा की हुई थीं। यह भी कह दिया कि आज रात के उनसे भेंट होने की बात है। वह मुझे एक चिट्ठी देंगे। लेकिन उन्होंने मुझे खूब खबरदारी से रहने को सावधान कर दिया है। मुझे उनकी बातें ठीक भी जान पड़ती हैं क्योंकि कल्ह जब मैं घर को आ रही थी तब रास्ते में केशा ने मुझे रोका था।

वकील ने चेहरा मलीन करके कहा—"ओहो ! तब तो बड़ा बदमाश है वह आदमी।"

पू०—बदमाश क्या ऐसा तैसा। वह मुझे रात के बहुत धमकाता रहा।

"उस बदमाश के धमकाने में क्या धरा है। लेकिन आप आज लँगटू बाबा से भेंट जरूर करना।"

पू०—अच्छा मैं उनसे जेल में भेंट करने जाऊं तो इसमें कुछ गड़बड़ तो नहीं है न ?

"हां गोलमाल हो भी सकता है नहीं भी हो सकता लेकिन बेहतर है कि इतना जल्दी आप भेंट मत कीजिये जो कुछ कहना सुनना हो आप हमारे जरिये कहिये हम जाकर सब कह आवेंगे और आप तो जवाब ले आवेंगे।"

पू०—नहीं साहब चाहे जो हो मुझ से तो अब उनको एक बार देखे बिना नहीं रहा जायगा। उनको मेरी बात सुनना और मानना ही पड़ेगी।

"अच्छा मैं दो तीन दिन में बन्दोबस्त कर दूंगा। एक बात मैं कहे देता हूँ। मेरी मुलाकात की बात आप किसी से मत कहियेगा। अपने मा बाप या लॅगटू बाबा से भेंट हो तो उनसे भी नहीं कहना।"

पू०—काहे?

"हम लोग वकील हैं। हर बात की वजह हम लोगों से पूछना ठीक नहीं होता। जो कहता हूँ उसके अनुसार आप काम कीजिये बस।"

पू०—मैं इसकी पूरी पाबन्दी नहीं कर सकती।

"क्यों? क्यों?"

पू०—क्यों तो आप ही कह चुके हैं। हम लोग स्त्री जाति हैं हर बात की वजह बतला देना मैं भी मुनासिब नहीं समझती।

वहां वकील साहब इस जवाब पर झेंप गये। उनसे इसको काटते नहीं बना। फिर दो ही चार और बातें करके आप बिदा हो गये।

उनके जाने पर फिर पूना रात होने की राह ताकने लगी। उसके भीतर जो ज्वार भाठा हो रहा था वह शब्दों में कह सुनाने योग्य नहीं रहा।



ग्यारहवां बयान

लँगट्ट गायब।

रात के ग्यारह बज गये। सब नौकर चाकर नींद में खर्राटे लेने लगे। लेकिन बेचारी पूना की आंखों में नींद कहां। वह कौच से उठ कर कमरे में टहलने लगी। चुप चाप वही पहले का रङ्गीन अलवान ओढ़कर बहुत धीरे धीरे घर से बाहर हुई।

जब पुल के पास पहुंची तो मालूम हुआ कि कोई ऊपर से जा रहा है। जहां आहट मिली थी वहां उसने कुछ देर तक टक लगाकर देखा। लेकिन कोई नजर नहीं आया। कुछ दूर और आगे बढ़ी फिर उसको किसी की आहट आयी। पूना ने समझा कि यही लँगट्ट बाबा होंगे। बहुत धीरे उसने पुकारा-'बाबा! बाबा! ओ बाबा!"

लेकिन उसने जवाब नहीं दिया। तब वह और जोर से बाबा! बाबा करके पुकारने लगी। इस पर भी जब उसने कुछ उत्तर नहीं दिया तब उसके मन में डर हुआ। लेकिन साहस से फिर वह आगे बढ़ी।

जब पूना अपने मुकाम पर पहुँच गयी। उसने चारों ओर ताक कर अच्छी तरह जाँचा। कहीं किसी की आहट नहीं

पाकर उसने बतलाये हुए पत्थर को उठाकर देखा। अंधेरे में टटोलने पर उसके हाथ में एक कागज लगा। खुशी से उठाकर उसने जेब में रखा।

जब वह वहां से उठकर दो कदम चली सामने ही काला आदमी सा मालूम हुआ। उसने कुछ रूखे होकर कहा—"क्यों यहां क्या हो रहा है।"

इस समय पूना से कुछ जवाब नही मिला। तब वह और कड़ककर बोला-"खबरदार अगर फिर यहा इस तरह घूमती हुई मिलोगी तो मैं गिरफ्तार करलूंगा।"

पूना ने इस अवसर पर भी अपने तईं बहुत सम्हाला। कुछ रुककर उसने पूछा—'तुम कौन हो ?"

'मैं कौन हूँ इसकी खोज पूछ से तुमको कुछ नही मिलेगा। सीधी बात यों है कि ,पत्थर के नीचे से जो कागज उठाया है वह मेरे हवाले करो।"

पू०-क्यों वह मेरी चीज है उसमें किसी का क्या दावा है ?

"जी नहीं वह मुझे देना ही होगा। अगर नहीं दोगी तो यहीं जमुना में बोर दूंगा।

"बस अपनी जबान पर लगाम लगा चुप रह।" कह कर पूना बगल से चलती हुई।

पूना तेजी से जा रही थी। वह आदमी भी उसके पीछे पीछे गया। जब पुलपार होकर वह आगे बढ़ी उस आदमी ने चिल्लाकर कहा—'खबरदार! अब आगे बढ़ोगी तो मैं फैर करूंगी।"

अब पूना का साहस छूट गया। वह जानके डर से वहीं चुप चाप खड़ी हो गयी। भय से उसका शरीर थर्राने लगा। वह आदमी अब तेजी से उसके पास आने और कहने लगा—"क्यों अब भागती क्यों नहीं ?"

अब पूना बड़े जोर से चिल्ला उठी—"अरे दौड़ा दौड़ो गुहार करो ! जान मारता है।'

इसी समय किसी ने बड़ी कड़क से कहा—"कौन है रे बदमाश ! दूर हो सामने से। स्त्री की देह पर हाथ लगाया तो जान नहीं छोड़ूगा।"

पू०— कौन लगट्ट बाबा ?

वह आदमी बाबा का नाम सुनते ही खुश होकर बोला "वाह रे हम ! एक ही तीर से दो शिकार !" साथ ही उसने सीटी बजायी। उसका जवाब किसी दूसरे ने उसी तरह सीटी से दे दिया।

"हो बेटा बड़े नसीब वाले।" कहकर लगट्ट बाबा ने पूना को कहा—"जाव बेटी तुम अपना रास्ता लो यहां ठहरने का कुछ काम नहीं तुम्हारा।"

'इतना जल्दी निकल भागेगी।" कह कर वह आदम तेज दौड़ती हुई पूना की ओर ज्योंही झपटा लंगट्ट बाबा ने दौड़ कर उसको एकही धक्के में गिरा दिया। अब पूना बेखटके चली लेकिन उसी समय एक दूसरा आदमी आया उसको उस पहले ने डाटकर कहा—"अरे देखता क्या है। पकड़ उस लौंडिया को नहीं सब किया कराया मिट्टी हो जायगा।

अब वह दूसरा पूना के पीछे दौड़ा। वह बड़े जोर से

भागने लगी उसके सिर की साडी नीचे खिसक गयी। खुले केश हवा में फर फराने लगे। पूना हाफती हुई आगे चली जाती थी वह बदमाश भी अपनी ताकत भर दौड़ रहा था एक स्त्री सो भी भले घर की जिसको दौडने का अभ्यास नही एक बदमाश से कहा देश आ सकती थी। उसने देखा कि पाजी से पीछा नही छूटता तब बहुत ही डर गयी। पीछे से पहुच कर ज्यों ही उस दुष्ट ने उसका झोंटा पकडा वह मूर्छित होकर गिरी थी कि उसने झपट कर थाम्ह लिया।

जब उस बदमाश ने पूना को पन्जे में पाया। बडा प्रसन्न हुआ। लेकिन उसकी प्रसन्नता देर तक नही रही। इसी समय एक आदमी वहा आ धमका उसको उसने अपना जोडीदार समझ कर कहा—"अरे यार बडी मिहनत से यह काबू में आयी है लेकिन बात करते ही कपार पर उसके वज्र घहराया। उसके सिर पर वह डण्डा पडा कि वेहोश होकर अलग गिर गया।

वह बदमाश पूना के जेब से वह कागज नही लेने पाया था कि चोट से घायल होकर गिर गया। अब पूना होश में अयी और झाड पोछ कर खडी हुई। उसके मन में यह देखकर खुशी हुई कि लगट्टू बाबा से वह बदमाश ॲट नही सकता।

अब बाबा उसकी छाती पर चढ कर जेब टटोलने लगे। और कुछ तो नहीं लेकिन एक जोडी उनको हथकडी मिली। उसने अब होश में आकर कहा—"अरे। खबरदार ! मैं पुलीस का आदमी हू। इस सरकारी चीज से पकड जायगा।"

'अच्छी बात है बेटा। मै तो जानता हू कि यह तुम मेरे वास्ते लाये हो लेकिन अभी मैं तुम्हीं को यह पहनाता हू।"

यही कह कर लगट्ट बाबा ने उसको हथकड़ी भर दी और अपनी रस्सी से उसके पांव कस कर बांध दिये। लंगट्ट बाबा हमेशा बाल के बनी हुई एक मजबूत किन्तु पतली रस्सी लपेटे रहते थे।

वह बदमाश अबतो बेबस हो पड़ा लेकिन जब हाथ पांव चलाकर थक गया तब बोला—"हम फेर कहते हैं। पुलीस के सरकारी आदमी हैं। तुम अपनी जान आफत में मत डालो।"

ल०—मैं भी पुलीस का देखकर डर रहा हूं। अब तेरे डर से बिल में घुसने जाता हूं। लेकिन तोको आराम को जगह करे देता हूं। यहीं मजे की रात काटना।

यही कहकर लगट्ट ने उसको वहां से घसीटा और पास वाली झाड़ी में कर के पूना से बोले—"जाव बेटी! अब कुछ डर नहीं है।"

पूना अब तक खड़ी यह लीला देख रही थी बोली—"आज तुम नहीं रहते बाबा तब तो मेरा सर्व नाश हो गया था।"

लं—वह बात जाने दो बेटी! तुम पहले घर चलो।

पू०—लेकिन यह चिल्लायगा तब तो और पुलीस वाले आकर तुमको गिरफ्तार कर लेंगे बाबा?

हंसकर लगट्ट बाबा बोले—"नहीं बेटी यह पुलीस का आदमी नहीं यह केशव का टुकड़खोर गुन्डा है। उसी ने तुमको पकड़ने के वास्ते इसको भेजा था। यह बदमाश अब चिल्ला नहीं सकता। ऐसा फादरपन अगर केशव को मालूम हो जायगा तो इसकी रोटी मारी जायगी इसी से यह चुप

चाप यहीं पड़ा रहेगा। कल सवेरे जो यहां आवेगा वही इसका बन्धन खोल देगा। चलो बेटी अब मकान चलो। देर मत करो।"

पू०—तो बाबा! आपको यह पुलीस में देना चाहता था?

ल—ना बेटी यह सब शैतान हैं। पुलीस के यहां काहे को जायगे। हमको किसी सुनसान जङ्गल में ले जाते। केशव मुझसे बहुत डरता है। वह समझता है कि मैं ही इसका भण्डा फोड सकता हू। लेकिन मैं ऐसा नहीं चाहता। रास्ते पर रहता तब मुझे इससे कुछ काम नही था।

पू०—लेकिन अब तो बाबा बड़ा टेढ़ा मामला हो गया। तुम्हारी खबर इन लोगों को मिल गयी। अब ये सब तुम्हारे पीछे आदमी जरूर लगायंगे।

ल०—उसके लगाने से कुछ नही होगा। मुझे पकड़ लेना चट रोटी पट दाल नही है। लेकिन यह तो बतलाओ बेटी कि इन बदमाशों को इसका पता लगा कैसे कि तुम यहां कागज लेने आओगी जिससे उस बदमाश ने आदमी तैनात करा दिया?

पू०—ना बाबा! इन लोगों को पता कुछ नही लगा। ये लोग संयोग से यहा आ गये हैं।

ल०—नही बेटी यह बात नही है। इनको पता जरूर लग गया है। और तुम्हारे ही पीछे ये सब आये थे। नहीं तो वह कागज कैसे मागते?

पू०—मैंने तो तुम्हारी बात किसी से कही नही लेकिन—

ल०—लेकिन है न? जरूर यही बात है इसी से लोग कहते हैं स्त्री जाति को कोई गुप्त भेद बताकर उस पर भरोसा करना मूर्ख का काम है। सत्राजित ने कृष्ण के मणि, चोरी करने का सन्देह करके अपनी घर वाली से कहा बस सबेरे ही नगर भर में बात फूट गयी। इसमें तुम्हारा कुछ अपराध नहीं है बेटी हमारी ही भूल है। अच्छा बतलाओ तुमने किस से यह बात कही थी।

पू०—हाँ बाबा! उन्हीं ने अपना बेरिस्टर हमारे पास भेजा था। उसी को अपना आदमी समझ कर मैंने भीतरी बात कही थी। उसके सिवाय और के सामने तो मैं कभी कहीं इस भेद की बात जबान पर नहीं लायी।

लं०—बस! बस! समझ गया मैं उस शैतान की करनी। अच्छा उसने अपना नाम क्या बतलाया था।

पू०—नाम योगेन सेन बतलाया। इस शहर में तो उसका बड़ा नाम है।

लॅं०—ओहो! अच्छा उसका चेहरा कैसा था?

जब पूना ने बेरिस्टर का चेहरा मोहरा बतलाया तब लॅंगड़ बाबा दांत-पीस कर बोले—'ओफ! ये सब हैं बड़े शैतान! योगेन साहब तो बिलकुल नाटे कद का है। सिर के बाल घुंघुआर होने से सब सफाचट है।

पू०—अरे बापरे! तो हम को ठग गया है। तब तो बड़ी आफत है बाबा! अब किसका विश्वास किया जाय?

'मैंने तो तुम से कह दिया था बेटी कि बड़ी खबरदारी से रहना। लेकिन तुम उस शैतान के फरेब में पड़ गयी।

अच्छा अब तुम घर पहुंच गयी। देखो एक बात याद रखो अब तुम को मुझ से भेट करने के लिये कही जाना नही होगा। मैं खुद आकर तुम से भेट कर जाऊँगा। लेकिन जब जैसा मौका होगा तब उसी भेष में आऊँगा मेरे रूप रङ्ग का कुछ ठिकाना नही रहेगा।" यही कहकर लँगड़ बाबा विदा होने लगे। पूना ने रोककर कहा—'कलह वह फिर आवेगा बाबा! उससे मैं डाँटकर पूछूँगी कि किसको यह सब कह दिया था ?"

"अरे ना! ना! उससे कोई बात नही कहना। यही तो तुम्हारी समझ की कमी है बेटी। तुम बिलकुल इस घटना को पी जाना। उससे ऐसी कोई बात नहीं कहना। ऐसा भाव दिखाना जिससे मालूम हो कि तुम इस ठग पने को कुछ भी नही समझती।"

पू०—अच्छा! अच्छा! अब मैं समझ गयी। अब मुझे कोई नही ठग सकेगा। एकबार ठगी गयी तो क्या अब ऐसा नही होगा।

लँ०—हां बेटी यही मैं चाहता हूँ कि खबरदार रहो किसी का विश्वास मत करो। इस अवसर पर मुझे तुम्हारा ही एक सहारा है। अच्छा अब इस चिट्ठी को तुम प्रताप के पास पहुचा दो लेकिन खूब खबरदार उस शैतान केशव के किसी आदमी के हाथ न पड जाय।

पू०—नही अब तो यह चिट्ठी मेरी जान के पीछे है। मर जाने पर भी इसको नही छोड़ूंगी।

लँ०—हां बेटी! अगर मरना पडे तो भी इसको नाश करके तो मरो।

इसी समय किसी ने सीटी बजायी। पूना ने झट घर में जाकर किवाड भीतर से बन्द कर लिये। और लगट्टू बाबा वहां से तुरत गायब हुए।



बारहवाँ बयान

वकील की नकल।

दूसरे दिन ठीक समय पर वकील साहब आ पहुंचे। लौंड़ी से खबर पाकर पूना बैठक में गयी। वहां उन्होंने पहले दिन की तरह उठकर आदर किया। पूना ने भी बहुत सम्हल कर उन्हें बिठाया। आप भी बैठी। अपने भीतर का भाव बड़ी तकलीफ़ से सहती और सम्हालती रही लेकिन उसके चेहरे पर क्रोध और घृणा का जो भाव था उसको वकील घूरते हुए बड़ी नरमी से बोले—"कल रात के जहां जाना था वहीं हो आयी न ?"

पू०—जी हां।

'तो जिस लगट्टू बाबा की बात पर हमारे प्यारे मवकल प्रताप की जान अटक रही है उससे भेट हुई थी ?"

पू०—हां लेकिन न जानें कैसे दुश्मनों ने ख़बर पाली। उनके आदमी भी वहा पहुच गये थे।

इतना कहकर पूना ने उस वकील पर जांच की नजर डाली लेकिन उसके चेहरे में किसी तरह का हेर फेर न देखकर आप भी शान्त हो गयी। उसने पूछा—"अरे! तब आप बची कैसे ?"

पू०—एक बदमाश मुझपर वार-करने चला था लेकिन उसी अवसर पर लँगटू बाबा ने पहुंच कर मेरी जान बचायी।

"अच्छा! तब तो ठीक हुआ। लँगटू से भेंट हो गयी थी?"

पू०—हां!

"उन्होंने कोई चिट्ठी दी है?"

पू०—नहीं वह मुझे यहां पहुचा गये और कागज पत्र न देकर जो कुछ करना है सब जबानी समझा गये।

"लेकिन वह बात भी तो हमको मालूम हो जाना चाहिये!"

पू०—तो मैं खुद उनसे मिलकर जो कहना है कह दूगी। वह जो उचित समझेंगे करेंगे। ऐसी हालत में उनके वकील से कहने में कुछ लाभ नहीं रहा।

अब तो नकली वकील साहब झेंप गये। कपार खुजला कर बोले—'तो आप कब प्रताप से मिलेंगी।"

पू०—अभी इसका भी कुछ ठीक नहीं है।

अब वकील देवता अपना सा मुंह लिये हुए पूना के यहा से प्रस्थान कर गये।



तेरहवां बयान

बुढ़िया का रूप।

जेल की कष्ट कोठरी में पड़े प्रताप बड़ी चिन्ता में समय बिता रहे हैं। वह चाहते तो रुपया खर्च करके उस जगह भी सुख से रह सकते थे। एकाध आदमियों ने ऐसे अवाजा

तवाजी भी की और ऐसी बातें उनको साफ कह भी दी गयी कि जेल में वे लोग रुपये वालो की इन्तिजारी में पसेरी पटकते रहते है और जब कोई रुपये वाला उस हाते में आता है तब उनकी आशा के पौधे लहलहा उठते है लेकिन उनके आने पर उनकी सब कोशिशों पर पानी फिर रहा है। तौ भी प्रताप ने इन बातों पर कुछ कान नही दिया।

जिस दिन उन्होंने केशिनी का खून होना सुना और पुलिस ने खूनी कहकर गिरफ्तार किया उसी दिन से उनके भीतर बडी बड़ी चिन्ता की लहरें उठ रही है। कभी बिलकुल जिन्दगी से उदासीन हो जाते हैं कभी संसार से उनको विराग हो जाता है। आप ही आप कहने लगते हैं—"बात तो बडी टेढी जान पडती है। क्या जाने यह केशव मेरा मामा ही हो मेरी मा का नाम केशा था। लडकी का नाम केशिनी है। अगर यह केशव ही हमारा मामा हो तो कुछ आश्चर्य नही लेकिन है यह आदमी बडा फन्दीला शैतान इसमें भी कुछ सन्देह नही है। नही तो इस को कैसे मालूम हुआ कि सब जायदाद कब केसे किसके नाम लिखी गयी है। इसको मेरे घर का सब पता है और यह मुझे मार डालने की कोशिश भी कर रहा है। अगर मैं मरा तो सब दौलत इसी के हाथ जायगी। लेकिन चूल्हे पडे जो जिसके नसीब का होगा वह उसको जरूर पावेगा लेकिन यह केशिनी मरी कब और कैसे मरी। भीगे कपडे से किनारे उठकर मैने खुद उसको घर जाते देखा है। अगर फिर लौटकर डूब मरी हो तब तो बात दूसरी है। क्या सचमुच किसी ने उसको मार डाला है? मुझे तो जान पडता है वह मरी नही है। लेकिन फिर वह गयी कहां?

इसी समय किवाड खुला। प्रताप ने पूछा—"कौन ?"

"आप से एक बुढिया भेंट करने आयी है।"

प्र०—पहले नाम बतलाओ।

इतना सुनते ही सिपाही लौट गया। उधर जेलर के आफिस में एक बुढिया बैठी थी। उससे जाकर पहरे वाले ने कहा-"आप का नाम जाने बिना वह भेंट करना नहीं चाहते।"

अब वह बुढिया क्या जवाब दे यही सोच रही थी कि उसी कमरे के दरवाजे पर किसी ने हाथ मारा। जब सिपाही ने दरवाजा खोला। बुढिया को यह चिन्ता हुई कि वह कौन आदमी आया। जब वह भीतर आया तब देखा कि केशव है तब बुढ़िया को बडी चिन्ता हुई।

केशव ने धीरे से कहा—"जवान स्त्री जब बुढिया बनती है तब उसके चेहरे पर बहार नहीं रहती।"

उसे सुनकर जेलर ने कहा—"क्यों आप इनको पहचानते हैं ?"

के०—मैं बुढ़िया को नहीं पहचानता लेकिन जो युवती बुढिया के वेष में आयी है उसको पहचानता हूँ।

जे०—आप खामखाह मेरे काम में खलल देने आये हैं देखता हूँ।

के०—क्यों साहब ! ऐसा क्यों कहते हैं ?

जे०—और नहीं क्या ! आपने मुझे अन्धा समझ रखा है या इतना ना समझ बनाया कि मैं नकली रूप नहीं पहचान सकता। या आप मुझे सिखलाने आये हैं ?

के०—अच्छा साहब ! गुस्ताखी माफ कीजिये लेकिन

इतना तो आप समझते ही होंगे कि रूप बदल कर कुछ गैर कानूनी मतलब से आयी है।

जे०—यह सब फजूल बातें आप छोड़िये मुझे अपना काम मालूम है कह तो दिया कि आप मुझे सिखलाइये नहीं।

अब वह बुढिया उठकर बोली—"आप उनको इत्तिला कराइये कि पूना भेट करने आई है। 'मेरा नाम पूना बाई है।"

सिपाही ने कहा—यह आपने अच्छा किया जो अपने तई छिपाया नही। ठहरिये। तलाशी लिये विना आप को जेलर साहब भीतर नही जाने देंगे।"

'हमारे पास चिट्ठी तो है।"

सि०—हाँ चिट्ठी तो ठीक है। लेकिन चिट्ठी में यह नहीं लिखा है कि बे कायदे, विना तलाशी लिये जाने दो।

इसी समय केशव बोल उठा—"देखिये साहब यह वेष बदल कर भीतर जाती है। अगर आसामी भाग, जायगा तो आप पर जबाव देही आयेगी। मैं आप को खबरदार कर देता हूँ।"

जेलर थोडी दूर पर बैठे अपना काम कर रहे थे। भाव से उन्होंने ऐसा दिखलाया मानो वह सुनते ही नहीं। सिपाही बड़ा समझदार था। जेल में रहते रहते सब बातों में पक्का हो गया था। उसने बुढिया उर्फ पूना से कहा—'क्यों आप इनकी बात पर कुछ कहना चाहती है? मैं जेलर साहब से क्या कहूँ।"

पू०—मैं यही कहती हूँ कि इस आदमी ने जाल फरेब की बातें की है।

के०—तो आप अपनी सूरत पर फरेब देकर क्यों इस तरह से आयी हो ?

पू०—तुम्हीं से बचने के लिये मैंने यह रूप बदला और किसी खराब नीयत से नहीं।

के०—आप प्रताप से भेंट करने जाओगी तो मेरा इसमें क्या बिगड़ता है जो मुझसे छिपाती हो आप ? जिसको ठग कर आपने प्रताप का प्रेम पाया है उसको तो खून कराकर आप बेखटके हो गयी न ?"

पू०—आपकी ताने भरी बातों का जवाब मैं नहीं देना चाहती आपको अच्छी तरह मालूम है कि मुझे आप से कितना और क्यों भय है।

के०—ताने की बात नहीं। आप पर मुकद्दमा चला ही चाहता है। आप ही की खूब सूरती में फसकर प्रताप ने यह खून किया है। इसका सुबूत मैं पाचुका हूँ।

तमक कर पूना बोली—"खबरदार ! जबान सम्हाल कर बात कीजिये। कोई मर्द होता तो इसी दम आपको हाथों हाथ बदला दे देता।"

के०—तो तुम स्त्री होकर हमारी बदनामी करोगी यही न। कर डालना जो तुम चाहो।

इतनी देर तक जेलर सब सुनते रहे अब उनसे सहा नहीं गया। बोल उठे—"क्यों जनाब आपने तो कानून हाथ में ले लिया है और ऐसी बातें कर रहे हैं कि यहा मैं कोई होता ही नहीं। जेल के मालिक आप ही हो गये हैं। यह आप की हरकत किसी भले आदमी को पसन्द नहीं हो सकती। पूना

बाई अपने रूप बदलने की वजह काफी बतला देती अभी मैं उनको प्रताप से भेंट करने के लिये ले जाऊँगा।"

पू०—मैं इस आदमी के सामने कुछ कहना नहीं चाहती।

जे०—अच्छी बात है। आप मेरे साथ आवें।

इतना सुनते ही पूना उठी लेकिन केशव ने कड़क कर कहा—"देखिये साहब! इस स्त्री के पास प्रताप को भागने के लिये एक नकशा है अगर आप उसको नहीं लेंगे तो वह जरूर भाग जायगा और आपको सब फजीहत सहना होगी।

केशव की बात पर जेलर को बड़ा क्रोध आया। लेकिन पूना का चेहरा देखते ही वह सहम गये। नकशे की बात से पूना के भीतर जो चञ्चलता हुई उसका आभास चेहरे पर पाकर जेलर के मन में बड़ा सन्देह हुआ। पूछने लगे—"क्यों जी पूनाबाई! यह क्या सच कहते हैं?

पू०—मैं इस विषय की कुछ बात नहीं कह सकती।

के०—देखिये साहब! इनकार कर गयी न? आप अगर तलाशी नहीं लेंगे तो इसका फल आप ही भोगेंगे।

चौदहवां बयान

जासूसिनी।

जेलर ने पूना से कहा—"देखो बेटी! मुझे इस मामले में सन्देह है। और तुम्हारे वेष बदलने से मुझे और सन्देह मजबूत हो गया है। इससे मैं तलाशी लेकर ही जाने दूँगा।"

अब पूना बडे सङ्कट में पड़ी। उसके पास कागज जरूर था। उसके पाते ही जेलर सब भेद जान जायगा और पूना पकड जायगी। यहाँ पूना पर बडी विपत्ति पडी। क्या करे कैसे तलाशी देवे इसकी चिन्ता के मारे वह हवास में नहीं रही। वह बेचारी सीधी सादी छोकड़ी अब बडे भारी भुईफोड से काम पड गया है। कुछ देर तक वहां सन्नाटा छा गया। सोच विचार कर पूना ने कहा—"जाने दीजिये मैं आज उनसे भेट ही नही करूँगी। इस तरह बेइज्जती सह कर मैं भेट करना नही चाहती।"

फिर केशव बोल उठा—"तो जाइये लेकिन वह कागज देते जाइये। जेलर साहब ऐसा जरूरी कागज कभी नहीं छोडेंगे। नहीं तो उनकी नौकरी पर खलल आवेगा। बेहतर यही होगा कि आप कागज दे दीजिये न तलाशी ली जायगी न बेइज्जती ही होगी।

पूना ने केशव की बात का कुछ जवाब न देकर जेलर से कहा—"क्यों साहब! अगर मैं आज भेट नही करके योंही चली जाऊँ तो आपको कुछ इनकार है ?"

जे०—हां यह तो बनी बात है। अब मैं देखता हूँ मामला बडा सङ्गीन हो गया है। एक तरह से आप कबूल कर चुकी हो कि आपके पास ऐसा कोई कागज जरूर है। ऐसी हालत में मै उसको देखे बिना कैसे छोड सकता हूँ। अब मैं समझ रहा हूँ कि असामी को छुडाने के लिये कोई चक्र चल रहा है। और उस चक्र को तोडना हमारा कर्त्तव्य है।

पू—तो राजी न होने पर भी आप जबरदस्ती तलाशी ले सकते हैं ?

'हां खास खास मौके पर ले सकता हूँ। और उन मौकों की यहां कमी नहीं नजर आती।"

अब भी पूना झूठ नहीं बोल सकी। आप ही आप मन में कहने लगी—देखें अब भगवान् क्या करता है?"

इसी समय केशव बोल उठा—'अब तो फन्दे में आ गयीं। बाई साहब! कागज दे दीजिये क्यों नाहक फसाद बढाती हो।"

जे०— हां बेटी! यह सज्जन ठीक कह रहे हैं कागज दे दो सब बखेडा पाक हो जाय।

'यह मैं नहीं जानती कि आप लोगों को मुझ पर ऐसा जुल्म करने का अधिकार है या नहीं। मैं कागज अपने पास होने न होने की बात न मानती ही हूँ न इनकार ही करती हूँ। अब आप लोगों को जो अच्छा जान पड़े सो कीजिये लेकिन इतना मैं जरूर कहूँगी। कि आप लोगों को देने के वास्ते मेरे पास कोई कागज नहीं है।" यही कह कर पूना वहीं एक चौकी पर धप्प से बैठ गयी। लेकिन भीतर कलेजा धुकपुक करने लगा। जेलर ने पूछा—"तो आप कागज नहीं दोगी?"

पू०—ना।

"अच्छा धनकुमार तुम केशवसिंह के साथ बाहर जाव। मैं इस रुचिविरुद्ध तलाशी का काम कर डालूं। क्या करना ऐसे मौके आजाते हैं कि ड्यूटी करने के लिये सब करना पड़ता है।"

के०—तो मुझे बाहर जाने की क्या जरूरत है, मैं यहां रहूं तो क्या हरज है?।

जे०—मैं कहता हूं आप बाहर जाइये। जरूर आपको मेरा कहना मानना पड़ेगा।

इसपर भी केशव ने चाहा कि जाना नहीं पड़े लेकिन जब उसने जेलर का रुख देखा धन कुमार के साथ बाहर गया अब जेलर ने किवाड बन्द कर के कहा—"अच्छा अब कहो बेटी! मैं अब तलाशी लेने को तैयार हूं। अब तुम्हारे ही हाथ में यह बात है कि हमारी भी मर्य्यादा देखो अपनी भी इज्जत बचाओ।"

इसका पूना ने कुछ जवाब नहीं दिया। तब फिर जेलर ने कहा—"देखो बेटी! मैं तुमको नरमी से समझाता हूं ऐसा काम करो कि तुमको इस नापाक काम से रिहाई मिले।"

पूना उसी तरह चुप रही। अब जेलर ने एक स्त्री बुलाई और उसको तलाशी करने का हुक्म दिया। उस स्त्री ने पूना के सब जेब और कपडे देख कर कहा—"नही है।" अब जेलर ने आकर कहा—"देखो बेटी! यह मालूम है कि तुम्हारे पास वह कागज है लेकिन मिलता नही और उसको पाये बिना हम कमरे से बाहर जाने नही देते मुनासिब है कि वह कागज तुम खुद दे दो।

पू०—मैंने तो कह दिया आपको देने के लिये मेरे पास कोई कागज पत्र नही है।

जे०—बेहतर है ये काम मैं जासूसिनी मूला से ही कराऊं। उसी दम जेलर ने उनको धनकुमार से बुलावाया। वहां एक मोटी थरा थलही क्रिश्चियन लेडी आ पहुची। फिर जेलर ने कहा—"अब भी कहता हूं बेटी। इनकी तलाशी पर यह कागज नहीं छिप सकता।"

जब पूना ने अपनी बात नही बदली तब जेलर अपनी जेलरन को कागजात की बात समझा कर बाहर हो गये। अब

उस कमरे में वही पूना और मोटी बीवी रह गयीं। उनको देखते ही पूना के प्राण सूख गये। उसने समझा कि यह बड़ी बेदर्द स्त्री है। ऐसी सूखी इस तरह का निर्दय चेहरा उसने कभी जिन्दगी म नही देखा था तो भी विनती करके बोली—"मैं आपसे यह निवेदन करती हूं कि अगर आप मुझपर जुलुम नहो करें तो यह लेडी रास्कोप वाच चेन सहित आपको नजर करूगी।

"नही नही! मैं जुल्म क्यो करूगी।" यही कहती हुई उसने घड़ी चेन सहित लेकर अपने जेब में रख ली।

लेकिन उसका भाव देखकर पूना को तसल्ली नहीं हुई उसने मन में कहा—'इसने प्रसाद तो चढ़वा लिया लेकिन अभी काम नहीं किया करने का ढङ्ग भी नही दिखाई देता।"

जब उस मोटी बीवी ने पूना से जोड़ा खोलने को कहा तब उसकी रूह काप गई। लेकिन धीरज धरकर जोड़ा दे दिया। अच्छी तरह देख भालकर लौटा दिया तब उसके जी में जी आया।

मोटी बीवी ने अब किवाड खोल कर जेलर को पुकारा। लेकिन फिर रुक गयी। उसने पूना से उसकी चोली मांगी। दोहरे कपडे की चोली उतार कर पूना ने उसके हाथ म दी। बीवी ने उसे फाड कर देखा और वही फेंक कर अब साहब को पुकारा। किवाड़ा खुलने पर साहब, केशव और धनकुमार तीनों भीतर आये बूढ़ा सिपाही भी अन्दर आया। जेलर ने आते ही पूछा—"क्यो कागज मिला।"

बीवी ने कहा—"नहीं कागज इस बेचारी के पास कोई नहीं है। यह मैं हलफ लेकर कह सकता हूँ।"

केशव ने पूछा—"यह कौन है?"

जेलर ने कहा—"सरकारी जासूसिनी हैं। इनका मुझे पूरा विश्वास है। अब मुझे तसल्ली हो गयी कि इनके पास कोई ऐसा कागज नहीं है।

पन्द्रहवाँ बयान

जेल में भेट।

अब जेलर ने पूना से कहा—"अब मैं तुम को असामी से भेट करा दे सकता हूं बेटी।" फिर सिपाही से कहा—"कह दो कैदी से कि पूना बाई तुम से मिलने आती है।"

थोडी देर पर, जेलर के साथ पूना अपने प्यारे प्रताप से भेट करने चली। खुशी में अपना जोडा और चोली छोड जाती थी। मोटी बीबी ने पुकार कर कहा-"क्यों बेटी प्यारे से मिलने की खुशी में तुम ने अपना जोडा भी बिसार दिया?"

सम्हल कर पूना लौटी और जोडा चोली पहन कर प्यारे से मिलने चली। भीतर एक कोठरी दिखा कर जेलर ने कहा-'जाव बेटी! इसी में असामी प्रताप है। भेट कर आओ। आधा घंटा मुलाकात करने को दिया जाता है।"

जब पूना भीतर गयी। झट किवाड बाहर से बन्द करके जेलर लौट गये। चलने से पहले केशव ने रोककर हिदायत की थी कि ऐसा काम मत कीजिये। लेकिन जेलर ने उसको डॉट दिया था अब उसी विषय पर जेलर आप ही आप कहने लगे—"है बेचारी सीधी सादी लडकी और उसी से छिपने के

लिये इसने वेप बदला है और कोई खराब नीयत इसकी नहीं है।"

भीतर जाते ही इधर पूना के आँसू बहने लगे। देह थर थर काँपने लगी। प्यारे की हालत देख कर बड़ा दुःख हुआ लेकिन प्रताप से मिलने के लिये हाथ बढ़ाया। पताप ने रोका। कहा-"प्यारी पहले मेरी बात का जवाब दो।" अब पूना हवास में आकर सहम गई। उसने चोली के भीतर से एक चिट्ठी निकाल कर पताप के हाथ में दी। प्रताप ने इसे रखते हुए पूछा-"तुम मुझे गुनहगार समझती हो या बेगुनाह?"

पूना जो प्रताप के रोकने पर सूख गयी थी। हवास में आयी। उसने पहले समझा था कि यह क्या हुआ। किसी तरह विकट सङ्कट काट कर यहाँ आयी तो प्यारे का रुख दूसरा क्यों हुआ? लेकिन सवाल सुनकर वह बोली—"यह क्या? मैं तुम को गुनहगार समझूँगी? ऐसा तो कभी मेरे मन में कोई भाव भी नहीं आया?"

प्र०—लेकिन मेरे ऊपर बड़ी गवाहियाँ हैं। बड़े बड़े सुबूत हैं। तब भी तुम मुझे बेकसूर समझती हो?

पू०-मैं सब समझती हूँ। यह सब झूठ का चक्र मैं अच्छी तरह जान गयी हूँ।

प्र०—नहीं प्यारी सब झूठ नहीं है। असल बात यह है कि मैं एक बात से डरता हूँ। अगर तुमसे कोई असल बात पूछ ले तो भी मैं चक्र में पिस जाऊगा।

पू०—यही बात न जो तुम केशिनी से कहकर आये रहे?

प्र०—हाँ तुमको याद है?

पू०—याद क्यों नही है। तुमने तो यही कहा था कि आज इसका निवटेरा करके ही तो लौटोगे इतनेस्त करने को कहे थे न?

प्र०—हां यही बात है लेकिन उस रात के उसका खून हो गया। तब भी तुमको विश्वास है कि मैंने खून नही किया।

पू०—हां मैं खूब जानती हू तुमने खून नही किया।

प्र०—उस रात के उसी पुल पर जरूर मुझसे उसकी भेंट हुई थी और मैंने ही उसको धक्का देकर जमुना में गिरा दिया।

पू०—अरे यह तुम क्या बक रहे हो?

प्र०—बक नही रहा हू सच्ची बात कहता हू। हम दोनों हाथा पाही करते हुए पानी में गिर पडे थे। जिसने हमारे ऊपर गवाही दी थी उस आदमी ने हम लोगों को लडकर गिरते हुए देखा था। अब भी तुम मुझे बेगुनाह ही समझती हो?

इतना सुनते ही पूना ने प्रताप का गला पकड लिया। कहने लगी—"हे भगवान क्या बात है। हमारा प्यारा क्या बक रहा है। यह क्या हो गया?"

प्र०—तुम मुझे पागल मत समझो प्यारी मैं अभी पागल नही हुआ लेकिन तुम्हारी सी देवी मेरे लिये दुःख सह रही है। इसी से मैं पागल हो जाऊगा।

पू०—अगर पागल नही हो तब तुम क्यों इस तरह बक रहे हो। क्या तुम मेरी जाच कर रहे हो?

प्र०—नही। नही। मैं जाच नहीं करता प्यारी असल बात कह रहा हू। तो भी तुम मुझे बेकसूर समझती हो?

पू०—हाँ। हाँ। बेकसूर समझती हूँ।

प्र०-मैंने जो कहा उसको तुमने अच्छी तरह समझ लिया?

पू०—हाँ अच्छी तरह समझ लिया।

अब प्रताप का मलीन मुख प्रसन्न हो आया। बोले—'बस प्यारी मैं और कुछ नही कहना चाहता। मुझे खुद नही मालूम है कि यह खून का मामला कैसा है? किसने खून किया और किसका खून किया यह सब मुझे कुछ भी मालूम नही है।"

पू०—अच्छा यह सब मैं समझ चुकी हूँ। अब काम की बात करो समय बीत रहा है।

प्र०—बस मुझे अब और काम की बात नही है। तुम दुनियाँ में एक हो जो मुझे बेकसूर समझती हो बस इतने ही से मुझे सन्तोष है।

लेकिन हमारे विश्वास करने से क्या होगा। दुनियां के सामने तुमको बेगुनाह बनना होगा।

प्र०—यह तो मेरे मरे बिना इस लोक में नही हो सकता। तुम भी इसके लिये तैयार हो जाव। अब मुझे इस फन्दे से रिहाई नही मिल सकती।

पू०—जरूर मिल सकती है। केशिनी जीती है। फिर उसके खून के वास्ते तुमको फाँसी कैसे होगी?

प्र०—नहीं अब मैं चक्र में पड़ गया हूँ। बिना पिसे मेरा निस्तार नही है।

पू०—नही तुम घबराव मत भगवान सब ठीक करेगा लगट्ट बाबा सब काम पूरा कर देगा।

प्र०—वह तो जेल से भाग गया है। बेचारे ने सच्ची बात कही थी।

पू०—तो तुम इसकी चिन्ता मत करो वह पेशी के दिन आकर सच्ची बात कहेगा।

प्र०—बात क्या कहेगा। चक्र जो तैयार है उसको तोड़ना अनहोनी बात है।

पू०—चक्र तो टूटा ही हुआ है। वह इसी कोशिश में है कि केशिनी को जीते जी इजलास पर लाकर पेश कर दे।

प्र०—मुझे तो इस बात पर विश्वास नहीं होता।

पू०—तो तुम लगडू बाबा पर विश्वास नहीं करते?

प्र०—वह भाग गया है इसी से मुझे उस पर अब भरोसा नहीं रहा।

पू०—वह तुम्हारे ही भले के लिये भागा है। कचहरी में जरूर हाजिर होगा।

इसी समय जेलर ने बाहर से पुकारा। कहा—"अब समय हो गया। बाहर आओ बेटी।"

"बहुत अच्छा" कहकर प्रताप से पूना विदा हुई और जेल से बाहर होकर अपने घर को चलती बनी।



सोलहवाँ बयान

मुठभेड़।

पूना को जेल से निकल कर घर आते आते सन्ध्या हो चली अभी रास्ते में थी कि पीछे से किसी ने कन्धे पर हाथ

रखा। लौट कर देखती है तो एक बुढ़िया अच्छी पोशाक में खड़ी है। वह बोली—'आओ बेटी पूना हमारे साथ।"

पू०—आप कौन हैं ?"

"अहे कोई हो तुम्हारा भला चाहने वाले हैं।"

पू०—बिना नाम पता बतलाये मैं नहीं आऊँगी!

अच्छा इस कच्ची उम्र में तुमने इतनी बहादुरी का काम कर डाला फिर भी इस मामूली काम के लिये घबराती हो। आओ आओ! लँगड़ू बाबा ने तुमको कुछ सन्देशा भेजा है।

पू०—मैं समझ गयी। तुम दुश्मनों के आदमी हो। चलो जाय हटो यहां से।

इसी समय एक और जवान वहां पहुंचा। उसने उस बुढ़िया से इशारे से कुछ बातें कीं लेकिन पूना की आंखों से वह इशारेबाज़ी बची नहीं। उसने समझ लिया कि दोनों दुश्मन के आदमी हैं। लेकिन बुढ़िया की आवाज़ कभी कभी ऐसी निकल आती थी कि पहचानी हुई जान पड़ती थी। वह बुढ़िया बोली—'अरे लँगड़ू बाबा ने कुछ कहा था तुम से ?" कहकर पूना के कान में कुछ मंत्र की तरह फूंकने लगी। पूना ने चौंक कर कहा—"देखें तुम्हारा मुँह ?"

"लेकिन और कोई मेरा मुँह देख लेगा तो आफ़त में पड़ेगा।"

पू०—क्यों तुम्हारे पीछे क्या कोई आदमी लगा है ?"

'नहीं' मेरे पीछे नहीं आदमी तुम्हारे पीछे लगा है।"

पू०—ओ हो! तब तो लँगड़ू बाबा ही हो। चलो कहां चलना होगा ?

अब दोनों बातें करते हुए आगे बढ़े। लगट्टू बार बार पीछे ताक रहा है देखकर पूना ने पूछा—काहे बाबा! मेरे पीछे कौन लगा है ?"

ल०—केशव का गुण्डा है जो योगेन बनकर तुम्हारे पास गया था।

पू०—कैसे जानते हो कि वह मेरे पीछे लगा है।

ल०—मैंने उसको देखा है। आज उसी जून से मैं तुम्हारे पीछे छाया की तरह घूम रहा हूँ। उसके साथ खुद केशव भी आया था। मैं अगर बुढिया के वेश में नहीं होता तो छिप कहा सकता था ?

पू०—अरे मैं भी बुढिया बनकर आयी और तुमने भी बुढिया का रूप भरा है लेकिन तुम्हारा रूप तो कोई पहचान ही नहीं सकता बाबा!

ल०—हां मुझे बराबर ऐसा रूप भरना पडता है। अब बतलाओ प्रताप से क्या क्या बातें हुई ?

पू०—पहले मैं अपनी विपत कह लूँ तब भीतर की बात कहूँगी। फाटक पर बडी बडी आफतें आयी थी।

ल०—वह सब मुझे मालूम है तुमको कहना नहीं पडेगा।

पू०—ऐं! मालूम कैसे हुआ वह सब ?

ल०—वही आदमी हमको सब बोल गया जो अभी भेंट करने आया था।

पू०—वह है कौन ?

ल०—वह इसी जेल में रहता है'।

पू०—वह आदमी उस घड़ी वहां पर था ?

ल०—हां वहीं था।

पू०—लेकिन मैंने नहीं देखा।

ल०—वहां जासूसिनी मूला जिसने ने मेम बनकर तुम्हारी तलाशी ली थी।

पू०—अरे वही इस वक्त जवान मर्द के वेष में है ?

ल०—मैं ने तो तुमको खबरदार दिया था न कि ऐसे बहुत मामले अभी होंगे तुमको तैयार रहना चाहिये इन सब के वास्ते

पू०—अरे यह सब क्या हो रहा है लॅगट्ट बाबा मुझे तो यह सब सपने की तरह मालूम होता है।

लँ०—सब देखते देखते सह जायगा। घबराना नहीं।

पूं०—तो उसको मालूम था कि कागज कहाँ था ?

लॅ० हाँ सब मालूम था। तुम घर जाकर मिजाज ठिकाने करके समझोगी तो जान जाओगी।

अब पूना ने वह सब बातें कही जो प्रताप से कोठरी में उससे हुई थी।

लॅ०—तो प्रताप ने चिट्ठी पढ़ी नहीं ?

पू०—ना।

लॅ०—अच्छा चलो तुमको घर पहुंचा आवे।

पू०—क्यों अब क्या डर है कुछ अभी ?

लॅ०—केशव के दूत छूटे हुए हैं डर तो कदम कदम पर है।

इसी समय पीछे से किसी की आहट मिली। लॅगट्ट ने फिर कर देखा कहा—चलो यह सब आ गये।"

पू०—कौन है सब ?

लँ०—वही केशव अपने दूतों के साथ फसाद करने की नीयत से आया है। डरना मत तुम। इन शैतानों की बदमाशी तो मैं चुटकी बजाकर हवा कर दूंगा।

अब केशव अपने साथियों सहित आ पहुंचा। उसने आते ही कहा—"पूना बाई। मुझे आप से कुछ कहना है ?"

इतना सुनते ही पूना खड़ी हो गयी।



सत्तरहवाँ बयान

प्यादे शहमात।

केशव ने पहले यही पूछा—"यह आप के साथ कौन है ?"

पू०—वह कोई हो आप से कुछ मतलब नहीं है।

के०—हाँ कोई ऐसा जरूरी मतलब तो नहीं है यौंही पूछता था।

पू०—तो अभी आप की लालसा नही पुजी है क्या ? आज तो आप ने खूब मुझे हैरान कर लिया। अब जाइये अपना काम देखिये मैं अपने काम को जाऊँ।

के०—अभी क्या हुआ है पूना। अभी देखना आगे आगे होता है क्या ? मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि आप ही मेरी लड़की के खून में सिद्ध साधक हो।

अच्छा प्रताप का मुकद्दमा हो जाने दीजिये फिर आप की ढिठाई का भगवान आपको फल जरूर दे देगा।"

के०—नहीं उतनी देर नहीं है। मैं सुबूत जुटा कर खुद आपके नाम नालिश दायर कर चुका हूं।

पू०—मेरे नाम ? किस कसूर में ?

के०—यही कि आप ही इस खून में प्रधान हैं। यह पुलीस के आदमी आपको गिरफ़ार करने आये हैं। लीजिये साहब यही पूना बाई हैं। मैं सनाख़ करता हूं।

बस इसके बाद ही वह पुलीस का आदमी आगे बढा और "पूना बाई मैं आपको गिरफ़ार करता हूं" कहकर ज्यों ही हाथ बढ़ाया कि सामने ही बुढिया आकर बोली 'तुम कौन है गिरफ़ार करने वाला ?"

'मैं पुलीस का प्रासिक्यूटिंग अफसर हूं। मेरे पास इनकी गिरफ़ारी का वारंट है।"

बुढिया—कहॉं है वारंट देखूं।

"तुम कौन हो वारंट देखने वाले ?"

"मैं इसकी फुआ हूं। घर पहुंचाने जाती हूं।"

पु० क०- तो तुम किस हिम्मत से हमारे आगे होकर सरकारी काम में खलल डाल रही हो ?"

"मैं खलल नहीं डालती लेकिन चाहती हूं कि सामने ही गैरकानूनी काम न होने दूं। बेकायदा आप गिरफ्तार नहीं कर सकते।"

पु०—मैं तुमसे फजूल बातें करके अपना समय नहीं खोऊंगा।

"तो तुम अपने रास्ते से चुप चाप चले क्यों नहीं जाते।"

पु०—वारंट हो या न हो मैं जरूर गिरफ्तार करूंगा। हाथ

में भुजाली तानकर लगटू ने कहा—'अच्छा करो गिरफ्तार ?"

"अरे यह तो स्त्री नहीं मर्द है यार ?"

"मर्द तो मर्द अभी शैतान पहलवान से सामना करना पड़ेगा। सब चौकडी भूल जायगी। चालाकी करके आये हो किसी की लडकी चुराने ?"

के०—मर्द हो चाहे औरत हो। सरकारी काम में खलल डालने का मजा मालूम हो जायगा।

हां और ढोंग भगत किसी लडकी को उडा लेजाने के लिये आकर मौज करेंगे क्यों ?'

अब तो केशव अपना नाम सुनकर आस्मान से गिरा। चौंककर बोल उठा—'अरे बाप रे ! तू कौन रे ?'

"अरे मुझे पहचानता नहीं मैं तेरा काल हूं। यही तेरे पाप की नाव डुबो दूंगा। खबरदार होजा ? बच्चा कहे देता हूं।"

के०—अरे दुनिया में ऐसा कौन पैदा हुआ जो मुझे डराने आया।

इसी समय सवारी लिये हुए आठ आदमी आ पहुंचे। केशव ने उछल कर कहा—'हां ठीक मौके पर आ गये हो तुम लोग।' फिर लगटू से कहा—'हमसे बहुत बघारो मत।"

अब लगटू से इस बडी बात नहीं निकली तब हंसकर केशव बोला—'क्यों अब वह सत्र क्या हुआ बघारना तुम्हारा दुम दबाकर अब सरकोगे ?"

"अच्छा ! अच्छा ! हमारा भी मौका आयेगा।"

के०—अच्छा जब मौका आयेगा तब देखा जायगा। तुम लोग अब गिरफ्तार क्यों नहीं करते ?

"किसको गिरफ्तार करें ?"

के०—यह जो बुढिया बनी हुई है। इसी के नाम वारंट है।

अब दो आदमी पूना को पकडने के वास्ते आगे बढे। वह बेचारी चिल्ला उठी बोली—"अरे लगूंट बाबा यह तो हमको पकडते हैं। पुकारो पुकारो आदमियों को।"

के०—अरे पकडो! पकडो! उसको भी वह भी जेल का भगा हुआ कैदी है।

'इतना जल्दी मे नही लोटूंगा।"

पु० क०—इसके नाम वारंट है ?

"वारंट का क्या काम यह तो जेलखाने से भागा हुआ असामी है।"

पु० क०—तो जवाबदेही किसके सिर पर होगी।

"जवाबदेही को तो मैं खुद तैयार हूँ।"

'अच्छी बात है" कहकर पुलीस के अहलकार लँगूट बाबा को पकडने चले। पहले उसने जोर लगाया लेकिन अंत को हथकडी पड गयी। और आदमी पूना के साथ साथ चले।

अब पूना रोने लगी। लँगटू ने उसको प्रबोध देकर कहा—"तुम डरती क्यों हो रोओ मत अभी तो इन लोगों का ढकोसला खतम हो जाता है।"

सब सवारी पर बैठे। और गाडी रवाना हुई थोडी दूर आगे जाने पर सबके सब ठहाका मारकर हसने लगे। लँगटू ने कहा—"ले भाई खोलदे यह कडुण।"

अब लँगटू की हथकडी खुल गयी। जो पूना दुख म रोती चिल्लाती थी वह उन लोगों की खेल देखकर अकचका गयी।

गट्ट ने कहा—"बच गयी पूना इसबार बदमाशों का फन्दा बेखेर दिया गया।

पू० —हम लोग तो गिरफ्तार हुए हैं ?

लेकिन उसी समय देखा तो गिरफ्तार करने वालों में एक स्त्री की आवाज में बोली—"नहीं तुम्हारी तो गिरफ्तारी और रिहाई एक साथही हुई है। अच्छा चोली के जेब में चिट्ठी तो ठीक ठिकाने से थी न ?"

पू०—हां वह तो जोड़े के साथ मैं उठाती गयी थी। कागज मेरा जहां का तहां वैसेही रखा था लेकिन मुझे तो उलटी ही उम्मीद थी।

'मैंही वह भूला हूं। मैंने ही तुम्हारी तलाशी ली थी। घड़ीभी मौके से पहुंच जायगी तुम्हारे पास।

पू०—मुझे तो वह सब सपने की तरह मालूम हुआ। आपको मालूम था कि चिट्ठी कहां थी ?

और क्या बिना मालूम ही !"

पू०—तो इसी से चोली आपने मेरी फाड़ कर फेंक दी जिससे देखने वाले को कुछ सन्देह बाकी न रह जाय?

"हाँ इसके साथ ही मुझे भी तो हलफ लेकर कहना था कि इसके पास कोई कागज नहीं है।"

पू०—ठीक है। कानून का बचाव आपने किया कि वह चीज तो धरती में पड़ी थी। क्यों ?

"हां। हां।" हंस कर उसने इतना कहा। पूना ने फिर पूछा-"तो आपको केशव का वह चक्र मालूम था।

"वह सब इस घडी तुमको जानने की क्या जरुरत है ?"

पू०—तो उसको क्या यही मालूम है कि आप लोगों ने उसी का काम साधने के वास्ते हम लोगों को गिरफ्तार किया है।

"हाँ वह तो जानते ही हैं।"

पू०—अरे हो आप लोग कहाँ लिये जाते हैं हमको ?

"अब घर पहुचाने चलते हैं। केशव ने खेल तो अच्छा खेली से किन यही वह प्यादेशाह मात हो गया।"



अट्ठारहवां बयान

शत्रु का रुप।

उधर प्रताप के मुकद्दमे की पेशी पास आ गयी। दो ही दिन बाकी रह गये। दोनों ओर से गवाहों की तैयारी जोरों पर है। पूना जिस दिन केशव के पजे से छूट आयी उसी दिन से वह घर के बाहर नहीं होती। लॅंगट्ट बाबा ने उसको बाहर निकलने और किसी बेजान पहचान के आदमी से भेट करने की एक दम मनाही कर दी थी। यह भी समझा दिया था कि किसी से डरना नहीं न किसी ऐसे वैसे की बात पर कान देना।

बहुत दिन हुए पूना से लॅंगट्ट की देखा देखी नहीं हुई इससे मन में पूना को चिन्ता थी। अपने कमरे में बैठी वह मन ही मन कुछ सोच रही थी कि लौंडी ने पहुँच पर खबर दी— एक भले मानस भेट करने आये हैं।"

पूना—नाम गाम पूछ आओ कि क्या काम है ?

नोकरानी ने लौट कर कहा—"उ मित्र हैं। जेल से प्रताप का कुछ सन्देसा लाये हैं।"

पूना—कह दो काम के मारे फुरसत नही है। इस घड़ी भेंट नही होगी।

लेकिन उसने नही माना कहा—'बोल दो मेरा नाम मूला है जासूसिनी है।"

"अच्छा ले आओ" कह कर पूना ने हुक्म दिया लेकिन अब वह कमरे में आयी। उसका चेहरा देखते ही पूना क्रोध के मारे जल उठी। बोली-"अरे फिर तुम यहां कपड़े बदल कर आये। तुमको शरम नही आती ! योगेन ! नकली योगेन।

यही कह कर पूना उठी और अपने बाप को पुकारने चली।

उस आदमी ने कड़क कर कहा—'खबरदार जाना नही यहाँ से !"

पू०—अरे तेरी इतनी हिम्मत ! मेरे घर में घुसकर मुझे धमकाने आया है ?

पूना की इस बात में बड़ी रुखाई बड़ा साहस और बड़ा ही विकट भाव था। अब उस आदमी ने भी मुरब्बी की तरह कहा—"अरे सुन तो ले छोकड़ी बात तो सुन ?'

पू०—मैं तुम्हारी एक बात भी नही सुनुगी।

'अच्छा योगेन की नही तो लंगड़ू की बात तो सुनोगी न ?"

इतना कह कर उसने अपना नकली वेष चेहरे से उतार डाला। अब पूना अकबका कर बोली—'तुम भी तो बाबा

कमाल करते हो। चेहरा तो चेहरा आवाज भी बदल देते हो कितनी बोली बोलते हो। इतना जीभ ऐंठना कहां सीखा तुमने ?"

"मेरी पढने की जिन्दगी इन्हीं सब फन्द फरेबों में तो कटी है।"

पूना—तो दुश्मन के रूप में तुम मुझे डराते क्यों हो ?

"डराता नहीं मैं अपने रूप भरने का इम्तहान दे रहा था। अब पास हो गया बेटी।"

पूना हँसती हँसती लोट गयी। बोली—"मैं भी अकचका गयी बाबा कि यह बदमाश फिर मेरे घर में किस हिम्मत से आया। उस दिन तो तमक कर चला गया था।"

लॉ०—अच्छा बेटी अब मैं दुश्मन के बेड़े में जाता हूँ। शेर की माद में से लौटूं या नहीं इसी विचार से भेंट भी करने आया था।"

पू०—तो उन से जेल में भेंट कर आये ?

लॉ०—हाँ मैं उनके वकील से मिल चुका और हलफ लेकर एफिडेविट भी दे आया। मैंने कह दिया है कि जो कुछ मैंने कहा है वह सब हरफ बहरफ सच्चा है। परसों मुकदमा शुरू होगा। मुझे पता लग चुका है कि जिस लड़की के खून करने का अपराध लगाकर प्रताप को जेल में बन्द किया गया है वह अपने बाप के घर में छिपी हुई है।

पू०—तो उसने छिपाया भी तो घर में ? कहीं दूर देश नहीं भेज दिया ?

लँ०—शैतान को पूरी शैतानी करने की बुद्धि मिल जाय तो भले आदमी दुनिया में रहने कैसे पावेंगे ?

पू०-तो यह रूप भरा है उसी के कमरे में घुसने के वास्ते।

लै०—हां लेकिन एक और काम के लिये भी मैं तुम्हारे पास आया हूँ। कर सकोगी बेटी ?

पू०—कहिये कौन काम है। जहां तक बनेगा पीछे तो हटूंगी नही।

"अच्छा अगर मैं नही लौटूँ, और यह समझ में आ जाय कि मैं मर गया हूँ तो यह चिट्ठिया जिनके जिनके नाम है उनको पहुचा देना।"

पू०—तो यह कौन बड़ा मुश्किल है। इसको तो मैं आनन फानन म कर डालूगी।

ल०—अच्छा अगर मैं पेशी के दिन नही आ सकू तो यह चिट्ठी प्रताप को देना। अगर आ जाऊँ तो जला देना।

पू०—अच्छी बात है।

लँ०—अच्छा एक बात और है। मूला को तुम अपना विश्वासी समझना। वह भी हमारे ही ऐसा तुम्हारा हित करने वाली है। अगर मैं मर जाऊं तो उससे वैसी ही आशा रखना। वह इस चक्र को तोडे बिना चैन नहीं लेगी। उस दिन उसी ने जोड तोड लगाकर केशव की सब चौकड़ी भुलादी और तुम्हारी रक्षा की थी।

इसी समय किवाड पर किसी ने हाथ मारा। लँगट्ट सहम कर बोला—"देखो फिर कोई शैतान आया। अच्छा जाय पूना! दरवाजा खोलो। अगर कोई मर्द हो तो उससे कुछ बातें

करना। जब लौटकर यहां आवोगी तब जो कुछ यहां देखना उससे घबराना नहीं।"

"अच्छा" कहकर पूना ने कांपते हाथों से दरवाजा खोला। लेकिन किसी गुण्डे बदमाश को वहां नहीं देखा। एक लड़का जोर से बोला—'कुछ खाने को दे माई।"

पूना ने उसको कुछ देकर विदा किया लेकिन जब लौटी तब उसने कमरे में लॅगट्ट को नहीं पाया खिड़की के पास गयी तो छड़ों की हालत देखकर समझ गयी कि उसी की राह लॅगट्ट बाहर चले गये हैं।



उन्नीसवां बयान

जासूसी कुत्ता।

प्रताप का मुकदमा इजलास पर हो रहा है। मुद्दई के गवाहों का बयान और जिरह खतम हो चुकी है। एक तरह से अपराध साबित ही है। केवल असामी के गवाहों की सफाई बाकी है। जिस दिन मुद्दई के गवाहों का बयान खतम हुआ उसी दिन प्रताप को पूना के पिता ने एक चिट्ठी दी। प्रताप ने उसे पढ़ा। लिखा था—"मैं मुकदमे में हाजिर नहीं हो सका इससे निराश नहीं होना। मैं आता तो भी मेरा बयान नहीं लिया जाता। अगर तुम कसूरवार साबित हो जाव तब भी कुछ हानि नहीं है। मैं सदा तुम्हारे साथ साथ हूँ। जब तक तुमको बेगुनाह नहीं साबित कर लूंगा तब तक मुझे चैन

नहो है किसी तरह का कुछ डर या मन में दूसरी बात नहीं लाना।"

चिट्ठी पढकर प्रताप ने हसते हुए अपने वकील को दे दी। पूना कचहरी में किसी दिन नही गयो। लेकिन बाप से रोज रोज मुकद्मे का हाल जो सुनती रही उसीसे उसको बडी व्याकुलता बडा उद्वेग था।

मुकद्मे के चौथे दिन बडा पानी बरसा। आंधी और बिजली का भी बडा जोर था। पूना उस समय अपने कमरे में बैठी सोच रही थी। उसके भीतर जो चिन्ता और विचार की विकट आंधी चल रही थी वह इस बाहरी अन्धड झक्कड से कही भयानक और ढहोढाह करने वाली थी।

इसी समय किसी ने जंगले पर ठक ठकाया। पूना ने समझा पेड की डाली या हवा का झोका लगा है। लेकिन फिर वही आवाज आयी। तब खोलकर देखा लेकिन कही कोई दिखाई नही दिया। तब समझ गयी कि केवल भ्रम हुआ है।

इसी समय फिर सिसकारी दी और साथही कुत्ते का गुर्राना और भौकना सुनाई दिया। फिर किसी ने कहा—"बन्द करो खिडकी बन्द।"

अब झट पूना ने उसको बन्द कर दिया।

लेकिन फिर उसी तरह खट खट करके तीन बार आवाज आयी फिर पूना ने खोला और कहा कौन है?'

बाहर से किसी ने कहा—"कुछ खाने को दो माई"

आवाज़ पूना ने पहचानी। यह वही लडका था जो एक बार पहले आ चुका था। झट वह खिडकी की राह भीतर

आया । पूना हट गयी और पूछा—"तू कौन है क्या चाहता है ?"

"मेरा नाम दमडी है । बाप का नाम दोकडा । दादा का छदामी लाल । नाना का पचकौडी है । परनाना सतकौडी ।

हंसकर पूना ने कहा—"सात पुश्त म भी एक पैसा पूरा नही होता । खैर क्या चाहता है । भीतर किस साहस से कूद आया है तू?"

"मैं खबर देने आया हू ।"

पू०—किसकी खबर ?

"लगट्ट बाबा की ।"

पू०—क्या खबर देगा लगट्ट बाबा की ?

"बडी आफत से मै अभी बचकर आया हू बहन जरा सम्हल लो सास लेले ।"

पू०—क्यों क्या हुआ था ?

"ज्यों ही तुमने पहली बार जँगला खोला । एक आदमी नजर आया । वह किसी फन्दे में खडा था । इसी से मैं सहम गया । अच्छा यहाँ आप के पिता के सिवाय और कोई है ?"

पू०—नहीं । नहीं ।

"तब जरूर वह घात से था । मेरा कुत्ता मुझे जब खबरदार कर दिया तब मैं सम्हल गया ।"

पू०—वह था कहा ?

"एक पेड़ के पास था । आप के दरवाजे पर क्या पुलीस का पहरा है । निगरानी बैठी है ?"

पू०—बैठी होगी। बैठने दो हाल कहो।

"हाल तो यही चिट्ठी लाया हूँ।"

पूना चिट्ठी उसके हाथ से खोल कर पढ़ने लगी उसमें लिखा था:—

"बेटी पूना !

मैं केशिनी को देख आया हूँ। पेशी पर नही आ सका। लेकिन आकर भी मैं इस घडी कुछ कर नही सकता था और पकडा जाता तो सब कोशिशें मेरी बन्द हो जाती। मैं इसी घात म हूँ कि जीती जागती केशिनी को इजलास पर हाजिर कर देने से सब बखेंडा मिट जायगा। अगर प्रताप को फांसी की सजा सुनायी जाय तो भी तुम डरना नही। कोई उसका बाल बाँका नही कर सकता। अन्त को वह बेकसूर साबित होगा मेरा कहना सच्चा जानना जरा भी डरना नही न निराश होना। प्रताप से कह देना मैं उसके अच्छे के लिये ही हाजिर नहीं हुआ हूँ। मेरे इस दूत दमडी का भरोसा करना।"

पूना सब पढकर खुश हुई लेकिन यह बात उसकी समझ में नही आयी कि केशिनी को देख चुकने पर भी वह उसको क्यों गिरफ्तार करके नही लाये हैं। उसने लडके दमडी से पूछा—"और कुछ ?"

"बस जो कुछ है उसी में है।"

पू०—तुम हो कितने बरस के ?

तेरह बरस तेरह महीना तेरह दिन बस अब मैं जाता हूँ।"

पू०—लँगड़ू बाबा से कितने दिन की पहचान है तुम्हारी ?

"ढाई बरस ढाई महीना ढाई दिन।"

पू०--तुमको मानते हैं ?

"खूब मानते हैं उन्होंने मुझे पढ़ना लिखना सिखलाया है। पानी में पैरना, जमीन में लेटे लेटे चलना, रूप बदलना, जबान पैंठकर दूसरी बोली बोलना सब मैं मैं उन्हीं का चेला हूँ। सदा उनके साथ रहता हूँ उनके हुक्म पर हाजिर रहना ही मेरा काम है।

पू०—उस दिन जब तुम आये थे तब यह जानते रहे कि लँगटू बाबा यहां हैं ?

"हां जानता था।"

पू०—तुम ने खाने को दो माई कहा था न ?

"हां यही हम लोगों का इशारा है। अब मैं जाता हूँ लेकिन जिधर से आया था उधर से नहीं जाऊँगा।"

पू०—क्यों ?

"हम को पकडने के लिये घात लगाये बैठा है।"

पू०—तो आते वक्त काहे नहीं पकड़ा ?

"वह सब जानते थे कि मैं काम करने आया हूँ चिट्ठी पत्री दूँगा इसी से जाती बेर पकड़ेंगे सब। लँगटू बाबा को पकडने के लिये वे सब घूम रहे हैं"

पू०—ऐसा क्यों करते हैं वे सब ?

'बात यह कि बाबा उन बदमाशों का सब फन्द फरेब जानते समझते हैं। उनसे ये सब डरते नहीं हैं।"

पू०—तो यह सब उनको पकड कर करेंगे क्या ?

'करना क्या जान से मार डालेंगे।"

पू० तो बाबा पुलीस को खबर क्यों नहीं देते।

"उनकी बात सुनता कौन है। शहर भर में गुण्डों ने उन

को पागल प्रसिद्ध कर रखा है। लेकिन अब जल्दी उन सब की बदमाशी चूल्हे में चली जायगी। बाबा छोड़ने वाले देवता तो हैं नहीं।"

पूं०—किधर से जाओगे ?

"सामने के दरवाजे से।"

पू०—क्यों खिड़की से नहीं ?

'नहीं उधर से जाने में पकड़ लेंगे वे सब। उनको पता नहीं लगेगा लेकिन मैं भुलावा दे कर इधर न चला जाऊँगा। दरवाजा चल कर खोल दो मैं झट भाग जाऊँगा।"

ज्यों ही पूना ने दरवाजा खोला वह लड़का एकही छलांग में बाहर हो गया। पूना ने झट दरवाजा बन्द कर लिया। इसी समय कई फेर सुनाई दिये। किसी के जोर से चिल्लाने की आवाज आयी। पूना बहुत घबरायी। बोली— अरे! यह क्या हुआ बड़ी आफत हुई। जान पड़ता है गुंडों ने बेचारे लड़के को मार डाला है। यही कह कर पूना ने शाल ओढ़ ली और धीरे धीरे दरवाजा खोलकर बाहर चलती हुई।

———

तीसरा बयान

जानते की कारवाई।

पूना तेजी से जब चलने लगी पानी की बूंदें आस्मान से आ आ कर मानो उसको जाने से मना करने लगी। लेकिन पूना ने उनकी कुछ परवाह नहीं की उसको किसी का कुछ

डर भय नही। वह बेचारे बालक दमडी को बचाने के वास्ते घर से निकली है।

जाते जाते पूना को उस दमड़ी का कुत्ता दिखाई दिया। अब उसी के साथ साथ वह भी चलती हुई। उसने समझ लिया कि यह दमडी का विश्वासी कुत्ता है उसी के पास जायगा। इसी भरोसे पूना उसके पीछे पीछे चलती हुई।

आँधी पानी से अँधेरा हो गया था। चलते चलते पूना ने देखा तो फिर उसी पुल पर आगयी है। थोड़ी दूर और आगे गयी होगी कि उसने पीछे से किसी के आने की आहट पायी फिरकर देखती है तो कोई उसके पीछे तेजी से आ रहा है।

पूना भी तेजी कदम उठाती हुई आगे बढी लेकिन पीछा करने वाला और झपटा और "अब कहाँ जाती हो। अब नही निकल सकती। दौडो देखता हूँ कितना दौड सकती हो?"

पूना दौड़ती हुई नदी के किनारे जा पहुँची। अब उस पीछा करने वाले ने जोर से पुकार कर कहा-'बस आगे बढोगी तो पङ्क में फँसकर या नदी म डूब कर जान देना पडेगा। खबरदार!"

पूना ने सङ्कट का सामना देखा तो भी चुपचाप खडी नहीं रह सकी। किनारे से लौट कर जङ्गल की ओर बढी। वह आदमी भी-"अब कहाँ जाती हो सुन्दर गोरिया! अब तो पकड गयी।" कहकर दौड़ता चला पूना अब डर के मारे थोड़ी दूर और आगे जाने पर गिर गयी वह आदमी खुश होकर उसे पकड़ने चला लेकिन पीछे से किसी ने डाँट कर कहा-"खबरदार! आगे बढा कि खोपडी उडा दूँगा।"

अब तो वह पाजी रुकी सकपका बोला-"अरे तु कौन है?"

'मैं हूँ तेरा यम !"

"यम ! एक यमदूत के बच्चे को तो अभी ठीक तरह से सर कर के आया हूँ। अब खुद यमराज कोही ठीक करता हूँ। आ निकल आ सामने ?"

इतना सुनते ही वह आदमी ठठाकर हसने लगा। उसने कहा— अरे यह तो किसी लडके की आवाज है।" फिर उसी ओर ताकने लगा जिधर से आवाज आयी थी।

वह फिर ठहाका मार कर हँसा और बोला—"कुछ खाने को दोगे जी ?"

अब वह आदमी वहां से यह कहता हुआ हट गया—"मैं इस लौंडे को नही देख पाता लेकिन वह मुझे अच्छी तरह देख रहा है।" यही कहता हुआ वह आदमी पीछे हटने लगा।

कहीं से आवाज आयी।"भाग भाग क्यों जान खोता है ?'

अब दमडी ने पूना के पास पहुँच कर कहा—"उठो ! उठो ! बहन घर चलो ! अब कुछ डर की बात नहीं रही।"

पूना— किधर से चलूँ। रास्ता कहां ?"

'उनकी चिन्ता नही। मैं ले चलता हूँ। देर करने से आफत होगी। चार पॉच आदमी इधर आ रहे है।"

पू०—ये सब हैं कौन ?

"गुण्डे हैं और हैं कौन ?

"बाप रे बाप" कह कर पूना उस लौंडे के साथ तेजी से चल पडी। कुछ दूर जाने पर दमडी ने कहा—"अच्छा थोडी दूर तकलीफ है। आप इसी में झुक कर चलिये।"

"कुछ परवाह नही " कह कर पूना दमडी के पीछे उसकी नकल करके चलने लगी।

चलते चलते दमड़ी ने कहा "अब डर नहीं है। हम लोग अब सड़क पर पहुँचते हैं इधर सवेरा भी हो आया है। अब ये सब निशाचर अपनी अपनी माँद में जा छिपेंगे।"

दमड़ी ने पूना को घर पहुँचाया और-"कुछ खाने को दो भाई।" कह कर वहाँ से चलता बना। उधर पूना ने घर पहुँच कर देखा तो वहाँ बड़ी आफत पड़ी हुई है। बन्दूकों की आवाज सुन कर ही उसके बाप जागे थे और जब उन्होंने पूना को नहीं पाया तब चारों ओर आदमी ढूढने को निकले। लेकिन कहीं पता न पाकर उनको बड़ी चिन्ता हो गयी थी। वह बेटी पूना को देखते ही बड़े खुश हो गये। लेकिन हाल सुन कर बोले -"अच्छा आज तो अतवार है कचहरी खुलते ही मैं केशव पर नालिश कर दूँगा। बड़ी शैतानी करने लगा है।"

पू०—लेकिन साबित कैसे करेंगे कि यह सब उसी का काम है ?

"हाँ यह बात तो है जरूर कि गवाही नहीं मिलेगी।"

पू०—जाने दीजिये यह सब कचहरी का बम बखेड़ा करने की कुछ जरूरत नहीं है। भगवान इसका उसको जरूर फल देंगे।

"लेकिन फल पाने के पहले ही अगर ये सब कुछ खून खराबी कर डालें तब ?"

अब अंत को यही बात ठहरी कि प्रताप के वकील से सलाह लेकर तो इस मामले में जाबते की कारवाई की जायगी।

इक्कीसवां बयान



असामी का बयान।

अब असामी की ओर का बयान हुआ। प्रताप ने कहा- "मैं अपनी प्यारी पूना से बात कर रहा था जिससे मेरी शादी पक्की हो चुकी है। उसी समय घोड़े पर सवार केशिनी उधर से निकलीं। उन्होंने मुझे हाथ के इशारे से पास बुलाया मुझे जाने की इच्छा न होने पर भी जाना पडा। उन्होंने मुझे नव बजे रात को भेंट करने के लिये कहा और यह भी कहा कि जरूरी काम है। कोई भले घर की स्त्री हम लोगों की बातें सुनेंगी। मैं इस बात पर राजी हो गया। मुझसे अब तक दो बार उनकी भेंट हो चुकी थी। मुझे पहली ही बार में सन्देह हुआ था। मुझे इच्छा थी कि उसी रात के हमारे उनके सफाई हो जाय। पुल पर जाकर देखा तो वह पहले से पहुँची हैं। मैंने पूछा वह स्त्री आयी है। उन्होंने कहा- नहीं मैं अकेली आपसे मिलने आयी हूं।"

इसके बाद जो हुआ था वह हमारे पाठक पढ चुके हैं प्रताप ने वह सब बातें इजलास पर कह सुनायी और बतला दिया कि जब वह पानी में गिर गयी वह भी उनको बचाने के लिये कूद पडा। लेकिन जब देख लिया कि वह तैरना अच्छा जानती है और तैर कर किनारे पहुँची तब उसने समझ लिया कि यह सब चक्र रचा गया है। इसमें कुछ गूढ़ भेद है।

प्रताप का बयान हो चुकने पर उनके वकील ने लँगड़ बाबा

का एफिडेविड पेश किया। बहुत कुछ उज्र माजरत के बाद मजूर हो गया। उसके बाद पूना के मां बाप का भी बयान हुआ। कई सफाई के गवाहों का बयान हुआ।

अब प्रताप के वकील ने जुरियों को सम्बोधन करके कहा—"यह एक बड़े भयङ्कर चक्र का मामला है। केशिनी से प्रताप का ब्याह सम्बन्ध भी नहीं हुआ। प्रताप की दौलत हड़प जाने के लिये केशव ने उसका मामा बन कर जाल रचा है। इसी बात को उन्होंने अपनी स्पीच में बड़ा जोर देकर कहा।

प्रताप की मा की एक चिट्ठी पेश की गयी जो यह साबित करती कि केशव उनका मामा नहीं थे। लेकिन मुकदमे से उसका कुछ सम्बन्ध नहीं है कह कर यह नामजूर कर दिया गया।

जूरी अपने मन्त्रणागृह में गये। और लौट आने पर एक राय होकर बोले —"असामी अपराधी है।"

इतना सुनते ही सबके चेहरों पर सूखा बरस गया। लेकिन प्रताप का मुख मण्डल वैसाही प्रसन्न था। उन्होंने निडर भाव से कहा-"मुझे खूब मालूम है कि मैं इस मामले में बेगुनाह हूँ इस कारण फांसी से नहीं डरता न मृत्यु का भय करता हूं। मुझे विश्वास है कि भगवान जो कुछ करता है सो भले के लिये करता है। मैं यहां के इजलास से परमात्मा के इजलास पर जाने में प्रसन्न हू। वहां किसी वकील मुख्तार की जरूरत नहीं पड़ती न किसी की सई सिफारिश चलती है। वहाँ मेरा जरूर सुविचार होगा।"

बाईसवाँ बयान

बहरा बूढ़ा

प्रताप को फांसी का जिस दिन हुक्म हुआ उसी दिन तीसरे पहर के अपने बालाखाने में बैठी पूना बेकसूर की फांसी*पढ़ रही थी। रास्ते में एक ने अपने साथी से कहा—"सुनते हो यार! आज तो बड़ा अनर्थ हो गया।"

"क्या हुआ?"

"प्रताप को फांसी का हुक्म हो गया।"

इतना सुनते ही पूना कोठे पर मूर्छित हो गयी। पड़ा पानी करने पर भी होश नहीं हुआ। बीस दिन तक उसको बेहोशी रही। लेकिन बड़ी कोशिशों के बाद उसकी जान बच गयी।

जब वह शोक से उठकर बैठी नीचे बरांडे में कुर्सी पर हवा ले रही थी। उसको कुछ भी संसार का सुहाता नहीं था। देखा तो सामने से एक बूढ़ा लाठी टेकता हुआ आ रहा है। वह धीरे धीरे पूना के सामने आकर धप्प से बैठ गया। थका वट के मारे हाँफने लगा। उसका चेहरा देखने से पूना को दया आयी। पूछा—कहाँ से आते हो बूढ़े।"

बूढ़ा०—आता हूं तो बड़ी दूर से।

पू०—कुछ खाओगे?

बू०—हां बड़ा धरम होगा। दो कुछ खाने को।

*जासूस आफिस से ।) पर मिलता है।

"आओ" कह कर पूना ने भीतर बुलाया। अपनी मा से उसके लिये खाने को माँगा। मा उसको अकेले में डाँटने और कहने लगी—'तुम अब यह सब बखेड़ा मत लाया करो बेटी।"

पू०—बहुत थका हुआ भूखा है दे दो मा। फिर उससे पूछा —"क्यों मकान कहाँ है तुम्हारा?"

"हमारा घर द्वार कहाँ है?"

पूना की मा बोली "तो धरमशाले में काहे नहीं जाते तुम"

"मैं गया तो था। अच्छा नहीं लगा इसी से चला आया।" अब पूना के कान में उसकी मा समझाने लगी—"तुम ऐसों को मत बुलाया करो बेटी। यह सब बखेड़े की बातें हैं।

अब वह बूढा बोला—"मैं जाऊँ?"

पू—क्यों! क्यों?

'यह माई मुझ पर सन्देह करती है।'

अब पूना की मा ने उसका खाने के वास्ते ला दिया। बूढे ने खुश होकर खाया। जब उसकी मा चली गयी। पूना से कहने लगा—'यह कैसी बात हुई। सन्देह भी किया। खाने को भी दिया?"

पू०—हाँ सीधे सादे देहात लोग तब के आदमी होते हैं। इनके मन में कोई किसी बात नहीं आती। आयी भी तो झट दूर हो जाती है।

पूना और बूढे में बातें हो रही थीं कि दो सराड मुसएड उधर से बातें करते हुए निकले। दोनों घूर घूर कर पूना की ओर ताकते जाते थे।

उनको देखते ही पूना के चेहरे पर सूखा बरस गया। ढङ्ग देखकर बूढ़े ने पूछा—"काहे बच्ची कुछ तकलीफ हुई क्या तबीअत कैसी है।"

पू०—तबीअत अच्छी नहीं है। कैसा तो भीतर खराब हो रही है।

"तुम्हारे बाबूजी कब आवेंगे?"

पू०—वह तो आज नहीं आवेंगे।

'ओ हो! तभी न? तब तो बड़ा कठिन हुआ।"

पू—क्यों क्या काम है?

"काम कुछ नहीं, अब रात हो गयी। मैं चाहता था यहीं दो हाथ जगह मिल जाती रात काट लेता। तुम्हारे बाबूजी होते तो हमको जगह मिल जाती।"

पू०—हां लेकिन माताजी को यह बात पसन्द नहीं है। तुम धर्मशाले या सराय में जाकर ठहरो।

'बड़ी आफत है। भला इस रात के मैं कहाँ जाऊँ?"

पू०—जाव पास ही मुसाफिरों को ठहरने की जगह है। खर्चा मा से मैं दिला सकती हूँ।

'ना ना हमको रुपया पैसा नहीं चाहिये।"

"तो जाव मैं भीतर जाती हू" कह कर पूना ने किवाड बन्द कर लिये। वह भी—"जाव आराम करो" कह कर चला गया।

जब वह बूढ़ा वहाँ से थोड़ी दूर पर पहुँचा। वे ही दोनों गुरुएड उसके पीछे पड़ गये। एक ने अपने साथी से कहा —"है तो यही! देखो तो हिला डुला कर कुछ काम आवे।"

दूसरे ने पूछा—"कौन है? कहाँ जाओगे बूढ़े?" उसने ताक कर कान पर हाथ रखा। तब गुण्डे ने कहा—"अरे यह तो बहरा है यार! चिल्ला कर बात करना होगा।"

जब चिल्ला कर पूछा—"कहा जाता है?" तब भी जवाब

उसने नही दिया। लेकिन अपने पास से एक कागज पसिल निकाल कर उसको दिया। उसने लिखा—'तुम उसी घर के आदमी हो जहां बातें करते थे ?"

बूढे ने मूंडी झटककर इनकार किया। अब उसने लिखा "उस घर के किसी को पहचानते हो ?"

इस बार भी उसी तरह उसने नाही की। फिर उसने लिखा-'इसी शहर में रहते हो ?' इसके जवाब में भी उसी तरह इनकार हुआ। अब उसने पूछा -"केशव को पहचानते हो ?"

"कुछ कुछ जानता हूँ।"

"वह आदमी कैसा है ?"

सो ठीक नहीं जानता।"

अब दूसरे साथी ने कहा—'लो हो गया अब चिल्लाने का क्या काम है ?"

पहला बोला—'जाने दो चलो। जिस लडकी को ले जाना है वह है वही जो इससे बातें करती थी। लेकिन यार काम तो ऐसा वैसा नही बडा सङ्गीन है। एक बार काफी रकम का उससे बन्दोबस्त करके तो हाथ डालना ठीक होगा।"

अच्छी बात है चलो लेकिन जरा दुधुआ पीलो। मिजाज ठिकाने आ जाय तब।" अब दोनों होली की ओर चले। वह बूढा भी कुछ दूरी पर उनका पीछा करने लगा। जब दोनों भीतर दुकान में चले गये। बूढा बाहर ही बैठा कहने लगा—'सालो बच्चे! तुम लोग खूब मस्त हो लो। तुम्हारे पीछे कोई छाया की तरह लगा है यह तुमको खबर नहीं है। यही तुम लोगों को पूरी खबर लेगा यही बूढा, बहरा बूढा। तुम लोगों को सिखला देगा।

तेईसवाँ बयान

गुण्डों की बैठक।

केशव अपने गुण्डों के साथ एक सुनसान मकान में बैठा है। शराब की बारह बोतलें और तीन गिलास रखे हैं। बारहो बोतलें खाली हो चुकी हैं। मस्त होकर केशव ने कहा—"देखा न। कैसी चाल है। सब मात हो गये या नहीं?"

एक ने मुँह का गाज पोंछ कर कहा—' अभी मात की बात मत कहो। तुम्हारी लड़की है कहां। अगर वह आकर हाजिर हो जाय तो तुम मात होगे या मात करोगे यह भी कुछ सोचते हो? हम दोनों ही मिट्टी में गड़ जायँगे कि बचेंगे?"

दूसरा बोला—'उसको तो बड़े कायदे में रखा है। उसका पता कोई नहीं पा सकता। वह तो मर गयी। समझिये। लेकिन ऐसी ये कही लड़की है कि क्या कहें। अब जोश में आवेगी किसी की कुछ सुनने वाली नहीं है। झट हाजिर हो जायगी।"

पहला—लेकिन यार इस लौंडे को फासी हो चाहे न हो जब वह इसके जीते जी वह लौंडिया नजर आजायगी तब तो सब फन्दा फट जायगा।

दू०—अरे तुम कहते क्या हो। वह लौंडिया क्या इसको बचाने के लिये कम हाथ पांव पीटती है। लेकिन भरोसा इतना ही है कि मुद्दत बीत चुकी। अब की हफ्ते म उसको फासी हो जायगी।

इसी समय आवाज आयी—' वही लौण्डा लौंडिया नहीं उसको बचावेगा और तुम लोग तिकठी पर चढोगे।" ऐसा मालूम हुआ जैसे आकाश वाणी हुई हो। आवाज भी ऐसी ही भरी हुई थी कि आदमी उस तरह नही बोलता। सबके प्राण सूख गये। दोनों गुण्डे कूद कर खड़े हुए। केशव ने कहा—"कौन बोलता है ?"

"शैतान की आवाज है।'

के०— अरे! तब तो हम लोगों को कोई देख रहा है। जान पडता है।

यही कह कर वह उठा। खिडकी जँगले देखते देखते एक में से छड निकल देख कर बोला—"देखो! जरूर कोई इस में आया है वही हम लोगों की बातें सुनता था। नही तो शैतान कहां से आ जायगा। देखो देखो कही पास ही होगा।

एक ने कहा —'हां तुम्हारे वास्ते बैठा है।'

के०—कौन रहा यार वही लगडुआ तो नही है ?

"उसके सिवाय और को क्या पडी है जो इस तरह पीछा करेगा ?"

इसी समय एक नोकर ने पहुँच कर खबर दी —'दो आदमी सरदार से भेंट करने आये है ?"

के०— शकल सूरत ?

"गुण्डे हैं दोनों।"

"अच्छा बुला लाओ।" सुन कर नोकर चला गया।

जब दोनों भीतर आये केशव उन्हें देखतेही खुश हो गया। बोला—' ओहो! ठीक मौके से आये। कहो देख आये मकान! लडकी को पहचान लिया!"

गुण्डा बोलने लगे—"हम लोग देख तो सब कुछ आये। लेकिन काम बड़ा सङ्गीन है। हम लोग तो नही कर सकेंगे।"

के०—अरे एक बार राजी होकर अब लगे पीछे हटने ?

गु०—पहले हम लोगों ने देखा नहीं था। अब तो सब देख सुनकर आये हैं। अब न सब हाल मालूम हुआ है।

के० तो समझ लिया। इनाम जियादा चाहते हो। यही बात है न ?

एक उनमें बोला—"साहब रुपये से सरये। रुपये से क्या नहीं होता। रुपया मिले तो सिर काट लाऊँ या नहीं तो कटा आऊँ। हम लोग जान को डरते हैं थोड़े। क्यों यार बोलते काहे नहीं ?"

'तुम तो कहते ही हो इसमें दोनों को बोलने का कौन काम है ?"

के०—अच्छा जाव दोनों को सौ सौ अशरफी देंगे। अब राजी हो न।

'हाँ अब हम लोग पीछे नहीं हटेंगे।"

प०—तो हम लोग ठिकाने पर पहुँचा कर अलग हो जायँगे।

दू०—हाँ आप सवारी शिकारी ठीक रखें। हमलोग यह सब नहीं जानते। लल्लो चप्पो की बात नहीं साफ कहते हैं।

के०—हा, हाँ सब ठीक रहेगा। जब दोनों वहां से विदा होकर बाहर चले किसी ने कहा 'खबरदार! खबरदार!"

इतना सुनते ही दोनों भाग कर घर में घुस गये। केशव ने घबराकर पूछा-"अब क्या रे! लौटे क्यों ?"

पहला—यहाँ कोई शैतान है दादा हम लोगों को काम मे आगे बढ़ने नहीं देता है। हम लोगों से यह सङ्गीन काम होगा नहीं देखते है. बड़ी बड़ी आफतें हैं।

केशव ठहाका मार कर बोला—'ओ हो! मालूम हुआ यही मैना बोला है। पिंजड़ा में बैठा वह यों ही बका करता है। तुम लोग कैसे कायर हो उसकी बात पर डर गये।"

"अरे! तब वही रहा है।" कह कर दोनों सम्हल गये। और हँस कर चलने लगे। लेकिन उनके भीतर बड़ा खटका हुआ।

केशव दोनों को बाहर पहुंचा कर, लौटने पर साथियों से बोल—"यह तो बड़ी आफत की बात है। यह कौन पाजी इस तरह पीछे पड़ गया। जरूर दुश्मनों का कोई आदमी चक्र के भीतर घुस आया है। अब उसका सर उतारे बिना काम ही नहीं चलेगा। यह बच्चा को नहीं मालूम है कि इस चक्र में आकर पिस जाना पड़ेगा।"

चौबीसवां बयान

होली में मस्ती।

दोनों गुण्डे जब होली से मस्त होकर बाहर निकले वह बूढा भी उनके पीछे हो लिया था। लेकिन उसको उन दोनों ने देखा नहीं था। जब केशव के उस जङ्गल वाले घर में दोनों घुसे वह बूढा भी पिछवाड़े की ओर सेररोई घर में जा बैठा था।

थोड़ी देर पीछे एक लौंडीने आकर बूढ़े के कान में कहा-'काम तो आज ही होगा। तुम यहाँ से चले जाव अब अँजोरिया उगेगी तब पुल पर आ कर मिलूँगी।"

यही कहकर वह झट पट चली गयी बूढा भी बाहर होने के लिये सामने के सदर दरवाजे को चला। इसी समय एक ने पहुँच कर कहा-'कौन है रे। यहाँ क्या करता है ?"

बूढा थथम कर खडा हुआ और कान पर हाथ रख कर अपने को बहरा बतलाया। इसी समय एक और आदमी वहाँ पहुँचा। वही केशव था। उसने पहले आये हुए से पूछा—"यह कौन है लच्छन ?"

ल०—यही तो मैं भी देखता हूँ। नही मालूम होता कि यह आदमी है या बन्दर ?

के०—इसको पकड कर ले चलो देखें कौन है ?

लच्छन केशव का दहना हाथ था। उसने कहा—"चलो बड्डो। भीतर चलो। तुम्हारी तलाशी लेना है कि हो कौन तुम ?"

यही कहकर लच्छन ने उसके कांधे पर हाथ रखा। वह बूढा उसके साथ चुपचाप चलता हुआ। मुँह से कुछ नहीं बोला।

जब भीतर गया केशव ने पूछा "तू कौन है मेरे घर में अंधेरे में आकर क्या करता रहा ?"

उसने कुछ कहा नहीं-कान दोनों दिखा कर सर हिलाया।

केशव ने पूछा—"तू बहरा है

बूढे ने फिर कान पर हाथ रखा और कागज पेंसिल दे दिया। अब लिखकर बातें होने लगीं—

सवाल—तू कौन है ?

'गरीब आदमी हूँ भूख लगी है। आप की रसोई में खाना माँगने आया था।"

स०—कहाँ रहता ?

"मेरा घर द्वार नहीं है। जहां साँझ वहीं विहान।"

इसी समय केशव की लौंडी गुलबी वहां पहुँच कर पूछने लगी "भोजन तैयार है।"

केश०—अभी ठहरो। अच्छा गुलबी इसको पहचानती है।

गु०—हाँ पहचानती हूँ।

के०—कहाँ रहता है कौन है यह?

गु०—सो तो नहीं मालूम है लेकिन, कभी कभी आकर खाना माँगता है। मैं बासी कुसी जो बचा रहता है दे देती हूँ।

के०—कभी कभी क्या माने? तुम तो कई हफ्ते पर आयी है यहाँ?

गु०—हां यह आठ दिन पर आता है हर अतवार को।

के०—तुमने इसको बुलाया था?

गु०—हाँ कहा था खाना ले जाना।

के०—इसका कभी नाम पूछा था?

गु०—ना॰ नाम मोको कौन काम है भिखमगा का।

के०—अच्छा नाम तो पूछ ले?

गु०—आप लिख के देवें तब जवाब देगा।

"अच्छा जाव।" कहकर केशव ने गुलबी को विदा कर दिया आप लच्छन से बातें करने लगा। कहा—"यह तो हम लोगों का यह मयना नहीं मालूम देता।"

अ॰ लच्छन उसके पास जाकर जोर से बोला—"अरे यह सात रुपये दं लेगा?"

उसने कुछ जवाब नहीं दिया उसकी ओर टुकुर टुकुर ताकता रहा। तब केशव ने कहा—"जाने दो इसके पीछे मग़ज

मारना ठीक नही है। वह लौंडा जासूस क्या करता है। कुछ खबर लेना चाहिये।"

"नही, नही! छोडना ठीक नहीं है। यह है वज्र बाहर इसमें सन्देह नही, लेकिन इस लौडिया को जो रखे हो इसके बारे में कुछ मालूम है तुमको?"

केश०—नही मेरी स्त्री जब गयी तब लौंडी को लेती गयी थी। रसोई बनाने वाली पडाइन भी चली गयी तब मैंने चारों ओर नौकरानी के लिये आदमी भेजे लोगों से कहा भी फिर यही मिल गयी। इसी को रख लिया।

ल०—तो इस घडी घर में जनाना कोई नही है?

के०—ना—

ल०—मुझे तो इसके ढङ्ग अच्छे नही जान पडते।

के०—काहे! काहे?

ल०—क्योंकि यह साधारण स्त्री की तरह नहीं दीखती। आँखों पर इसको ज्योति देखने से बडी अक्ल की जान पडती है। हाथ पैर भले घर की स्त्री के समान है। बात करते समय चारों ओर देख सुन कर बडी खबरदारी रखती है। कोई बात हो तुरत जवाब दे देती है।

के०—बात तो ठीक कहते हो। मैंने यह सब इतना ख्याल नहीं किया।

ल०—यह बूढे से इशारे में कुछ बात कर रही थी मेरी नजर पड गयी देखा नही खाना देने के बहाने कैसे ठीक मौके पर पहुँच गयी।

के०—अरे तो क्या समझते हो कोई भेदिनी है। अगर ऐसा है तब तो यह जीती लौटती नहीं यहा से?

अभागे को प्रबोध दें। प्रताप ने कहा—"यह मैं जानता हूँ कि सत्य इस झूठे चक्र के छिपाये नहीं छिप सकता क्योंकि चाँद को कोई अंधेरे से आड नहीं कर सकता। एक न एक दिन असल बात जाहिर हो जायगी। इसी से मैं समय माँगता था। मेरा कलङ्क इस चक्र के कारण मरने पर भी रह जायगा। हाय! विधाता! मैं अब उसको सुनने नहीं आऊँगा लेकिन मरती बेर यह जगत का बोझ लेकर दूसरे लोक में जाना बडा दुःखमय जान पडता है। इतना जरूर है कि अब इसका सच्चा भेद खुलेगा। जब यह चक्रभेद होगा तब मेरा कलङ्क धुल जायगा लेकिन मैं उसको देख सुन नहीं सकूंगा।"

वकी०—क्या करें हम लोगों ने तो बडी कोशिश की लेकिन मुहलत मिली ही नहीं। यार तुम भी तो वकालत करते ही रहे। मैंने भी कभी ऐसा चक्र नहीं सुना कि गवाहों के मारे समझ बूझ कर एक हाकिम ने एक बेगुनाह को फाँसी का हुक्म दिया हो।

प्र०—तो अब आपकी क्या राय है। आप क्या करना चाहते हैं। आपने अपनी ओर से तो जहाँ तक बना किया। लेकिन और क्या कहना है? जिन लोगों ने मुझ पर बिना वजह के यह सब चक्र रचा है उन पर परमात्मा कृपा करे बस मैं और इस समय कुछ भी नहीं कहना चाहता। लेकिन मैं अपनी जायदाद के लिये वसीयत कर जाना चाहता हूँ।

व०—क्यों आप का कोई अपना है?

प्र०—ना मेरा कोई नहीं है।

व०—तब वसीयत किसके नाम करना चाहते हैं?

प्र०—अपनी प्राणप्यारी पूना के नाम वसीयत करूँगा

जिसमें उसको मालुम हो जाय कि मेरी सब जायदाद जो व्याह के वाद उसकी होती वह उससे कोई छीन नही सकता। हमको जो शैतान चक्र रच कर उससे छुडाते है उनको यह ताकत नही कि उसकी प्राप्य सम्पत्ति से छुडा सकें।

"यह तुम कैसी बात करते हो यार वकील हो कर ऐसी लचर बात कोई कहता है। तुम्हारे बाद क्या होगा इसकी चिन्ता अगर करना चाहते हो तो यह नही समझते कि चक्र चलाने वाले जब तुम्हारी जिन्दगी खतम कर सकते है तब तुम्हारी जायदाद को पूना से छीन लेना कौन बडी बात है। उसके आगे इसकी बिसात क्या है?"

प्र०—हाँ बिसात है।

व०—अच्छा एक बात तो सुनो। केशव जो अपने तई तुम्हारा मामा बनता है यह बात बिलकुल झूठी है?

प्र०—बिलकुल झूठा चक्र रचा है भई। अभी तक तुम इतनी बात नही समझ सके?

व०—अच्छी बात है तो उसका एक रफ लिख दो मैं तैयार कर दूँगा। अच्छा वसीयत की जायगी किसको?

प्र० उसी पूना को दी जायगी।

व०—वह तो आयी नही यहाँ! आवेगी?

"अहा! बेचारे कई बार मेरे पास आने के लिये उसने आग्रह किया। लेकिन मेरे ही आग्रह करने से वह नही आयी। नही अब मरती बार मैं अपनी प्यारी को भर आँख जरूर देख लुगा। और दो चार बातें विदा होते समय कह दूँगा। उस देवी का चलती बेर दर्शन करके पवित्र होना उचित ही है।"

यही मन में कहकर प्रताप ने कहा—"नहीं ! आवेगी ! अब उसके आने में रुकावट नहीं होगी।"

व०—अच्छी बात है तो हम लोग कल्ह बारह बजे के बाद यहां आवेंगे।

"अच्छी बात है।" कहकर प्रताप ने मजूर किया। बस वकील साहब वहाँ से चले गये। सहायक जेलर वहां खड़े सब बातें सुन रहे थे। सुन चुकने पर उनका चेहरा कुछ प्रसन्न हुआ।

जब वकील चला गया प्रताप अपने कमरे में टहलने लगे। मन ही मन उनके चिन्ता का ज्वार भाटा हो रहा था। आप ही आप कहने लगे "जरूर यह वसीयत कर डालना होगा। इसमें तो कुछ पाप नहीं है। मैं इस मामले में बेगुनाह हूँ तौ भी चक्र चालियों के मारे मुझे फाँसी पर चढना पड़ता है। जब मैं तिकठी पर छटपटाता रहूँगा तब मेरे दुश्मन खुश होकर उछलेंगे और हजारों आदमी खड़े तमाशा देखेंगे। लेकिन जाने से पहले अपनी प्यारी का मैं आलिङ्गन करूँगा। उसका पवित्र और उज्ज्वल मुँह चूम कर अपने हाथों वसीयत उसको सौंप कर तो संसार से विदा होऊंगा।"

इसी समय संत्री ने पहुँच कर प्रताप से पूछा—"एक और आदमी आप से मिलने आये हैं। भेट कीजियेगा ?"

प्र०—कोई पहिचाना हुआ आदमी है ?

"मैंने तो उनको पहले कभी नहीं देखा। कोई बूढे आदमी हैं।"

मन में प्रताप ने प्रसन्न होकर कहा—"यह जरूर लंगड़

बाबा होंगे। वही तरह तरह के रूप में घूमा करते हैं।" फिर सत्री से बोले—"अच्छा बुला लाओ।"

जब वह आदमी आया। प्रताप ने अच्छी तरह देखा लेकिन पहचानाहुआ आदमी नहीं था। और मोके पर संत्री खड़ा रहता था लेकिन इस बूढे के भीतर जाते ही वह किवाड़ बन्द करके बाहर चला गया।

प्रताप ने पूछा—"आप कौन हैं मैं पहचानता नही।"

"मेरा नाम सुनने से पहले जिस काम के लिये आया हूँ। वही सुन लो।"

प्र०—नहीं पहले आप अपना नाम बतलाइये।

"नाम लेकर क्या करोगे मेरा नाम तो भगू है।"

प्र०—यह नाम तो मैंने कभी सुना नहीं था।"

"हाँ कितनी बातें है जो तुमने अभी नहीं सुनी बच्चा। ससार में अभी बहुत कुछ तुम को सुनना है। मैं जिस काम के लिये आया हूँ उसको सुनना चाहते हो?"

प्र०—अच्छा कहिये। आपकी बातों से तो मुझे बड़ा स्नेह भाव मिल रहा है। भगवान को न जानें क्या करना है!

"अगर मेरी बात मानो तो मैं तुम को रिहाई दे सकता हूँ।"

प्र०—यह तो बड़े अचरज की बात आप कह रहे हैं।

"मेरी बातों से कुछ सन्तोप नहीं होता खाली अचरज ही?"

प्र०—मैंने यह बात कभी सोची नही इससे यह नही समझ में आता कि इसका क्या जवाब दूँ।

"मैं तुम को बचा सकता हूँ।"

प्र०—लेकिन इस सङ्गीन काम के लिये कुछ शर्तें भी तो होगी?

"हाँ! हाँ जरूर है।"

प्र०—अच्छा मान लीजिये कि मैं जेल से भाग गया तो मेरा कलङ्क कहाँ जायगा। पुलीस मेरे पीछे पीछे घूमेगी। यह तो और आफत की बात होगी न?

"नहीं, नहीं यह बात नहीं होगी। तुम बेखटके मौज करोगे। तुम को कोई अपराधी नहीं कहेगा।"

प्र०—आपकी इस बात से तो मेरी बोलती बन्द हो गयी है।

"हाँ मैं भी ऐसा ही समझता था।"

प्र०—आप कैसे क्या करेंगे?

"तुम्हारा बेगुनाह होना साबित करेंगे। तुम को जेल से भागना नहीं पड़ेगा।

प्र०—तो आप मुझे बेकसूर समझते हैं?"

"हाँ! हाँ!"

प्र०—तो मुझे बेकसूर साबित कर देंगे।

"हाँ जरूर कर दूंगा।"

प्र०—तो फिर मुझे आपने कैदखाने में क्यों बन्द कर रखा है। संसार में सच्ची बात क्यों नहीं जाहिर कर देते आप सज्जन आदमी हो कर एक बेगुनाह को नाहक कष्ट सहते क्यों देख रहे हैं?

"यह तो हमारी इच्छा पर है।"

प्र०—तो मालूम हुआ आप आदमी नहीं आदमी के रूप में पशु हैं। आप से मैं कुछ भी नहीं चाहता। कृपा कीजिये आप जाइये यहां से।

"तो फिर रिहाई पाना चाहते हो या नहीं सो कहो।

प्र० यह तो स्वाभाविक बात है कौन रिहाई नहीं चाहेगा।

जन्म मरन से आदमी रिहाई चाहता है तब इस बंधन से कौन रिहाई नहीं चाहेगा।"

"देखो तुम गीता का ज्ञान तो इसघडी छोडो मत मुझे सीधी सीधी बातें बताते चलो।"

प्र०-मुझे दुःख इसी बात का है कि आप इस मामले में जान सुनकर भी चुप क्यों हैं?

"यह तो मैं बतला चुका कि इसका कुछ मतलब है।"

प्र०—वह मतलब तो सुनें?

"मुझे रुपये का मतलब है।"

प्र०-ओफ! तो यही पहले क्यों नहीं कहा आपने? फांसी का हुक्म होने पर क्यों आये?

"इसका भी मतलब है।"

प्र०—वह मतलब क्या है?

"कह तो दिया रुपया।"

प्र०—तो रुपया पाने से आप मुझे बेगुनाह साबित करके रिहाई करा देंगे?

"हां करादेंगे।"

प्र०-तो आजादी और इज्जत के सामने रुपया क्या चीज है?

"हां! हां यह तो मैं भी कहता हूं।"

प्र०–कितना रुपया चाहते हैं?

"तुम्हारा सर्वस्व चाहते हैं।"

प्र०—सर्वस्व! तो रिहाई होने पर या पहले।

"पहले ही।"

प्र० और कुछ?

"हां और है?

प्र -और क्या है ?

"तुम को यह लिख देना होगा कि तुम को जिन्होंने हैरान और वेइज्जत किया है उन पर कुछ दावा नहीं करोगे यह हलफ से लिखना होगा।"

प्र०—ओ हो। यह बात है ?

"देखो अब दिन तुम्हारे पूरे हो आये हैं। कुछ घंटे बाकी है। फिर तो तुमको तिकठी पर लटकना होगा।"

प्र०—लेकिन जिन्होंने चक्र रचकर एक बेकसूर को फांसी दिलाने में कसर नहीं की उनका विश्वास कैसे किया जायगा।

"यह आप की मरजी पर है।"

प्र०—अगर मैं विश्वास नहीं करूं तब।

"तब क्या मरना होगा तुमको। जान से हाथ धोओगे।"

प्र०—अच्छा जाइये आप। मैं यह सब नहीं मानता।

इतनी देर तक प्रताप ने उनकी बातें सुनीं और उसका चेहरा खूब खबरदारी से देख रहे थे। जब जवाब सुना तब उस आदमी का रूप फक हो गया। दो कदम वह और पीछे हट गया। आंखें फाड़ फाड़कर देखने लगा। छाती धुकुर पुकुर करने लगी। प्रताप ने फिर पूछा—"अच्छा आप कौन हो मुझे बतलाओ।"

"मैं तो नाम बतला ही चुका हूं।"

प्र०—नहीं वह झूठा नाम है। आप वेष बदले हुए हैं। अब मुझे पहचान में आया है।

"अच्छी बात है। तो कह क्यों नहीं देते कि मैं कौन हूं।"

प्र०—जिस स्त्री का—

बात पूरी होने से पहले ही झनाके से दरवाजा खुला और

संत्री ने भीतर पहुँच कर इशारे से प्रताप को चुप किया और बूढ़े को पकड़ कर बाहर ले गया।

जब दोनों आफिस में बैठे रक्षक ने कहा—"ओफ! आज तो मैं बहुत सस्ते बचा।"

"कैसे! कैसे?"

रक्षक—कैसे पूछते हो असामी के दुश्मनों को अगर खबर हो जाती कि मैं आप को भीतर लाया हूँ तब तो मैं खतम हो चुका था।

"उनको खबर होती कैसे?"

र०—मैं तो समझता हूँ साहब यह केशव ज्योतिष जानता है नहीं तो कैसे उसको पता लग गया।

"तो मुझे भीतर ले जाने से पहले ही इस बात को सोच लेना था।"

र०—हां सो तो ठीक ही है लेकिन मन में आया कि आस पास कोई देखता नहीं है। थोड़ा सा आप से पैदा कर लूं इसी मतलब से मैं ले गया था।

"तो फिर हुआ क्या?"

र०—होने की बात मत पूछिये यह बूढ़ा जेल के आस पास घूमता है। पता नहीं साहब कि ये सब कब किस रूप में घूम रहे हैं। इसी से मैं डर गया।

"छिः छिः तुम ने तो सब गुड़ गोबर कर दिया। मेरा काम सिद्ध हो रहा था कि बीच में ही तुम ने सब चौपट कर दिया।"

र०—क्या करता साहब! आप तो पूरा आधा घंटा भीतर रहे।

"अच्छा जाने दो फांसी कब होगी।"

र०—फांसी सोमवार को है।

"क्यों मुल्तवी नहीं हुई ?"

र०—नहीं, नहीं !

"क्या बात हुई। प्रताप के तो बहुत हित मित्र धनी और बड़े लोग हैं मुल्तवी नहीं करा सके।"

र०—इसी से तो मुल्तवी नहीं हुआ।

"वाह ! कैसी बात करते हो इसी से तो मुल्तवी हुआ करता है।"

र०—हाँ लेकिन यहाँ यह बात नहीं हुई।

"अच्छा इस में सुना है कोई जासूस छूटा है।"

"वह कौन जासूस है जानते हो ?"

र०—नहीं साहब ! मुझे खबर नहीं है इसकी। लेकिन नहीं मालूम मौके पर कहाँ से आ पहुँचता है। ये लोग भट मौके से आकर असामी को बेगुनाह छुड़ा ले जाते हैं।

"नहीं ऐसा नहीं हो सकता इसमें।"

र०—काहे साहब बात क्या है आप तो मालूम होता है जानते हैं कुछ।

"नहीं इसकी वजह है न ?"

र०—क्या वजह है !

"वह मर गयी है।"

र०—मुझे तो विश्वास नहीं होता साहब। वैसे आदमी मरते नहीं हैं। देखना जरूर मौके पर कहीं न कहीं से आ धमकेगी।

"अच्छा वह लँगटू बाबा मर गया ?"

र०—क्या जानें मुझे तो मालुम नहीं है।

'वही तो जासूस था इसमें ?"

र०—ऐं ! वही था ! नहीं ! नहीं ! ऐसा नहीं है।

"मैं कहता हूँ ऐसा ही है।"

र०—आप हैं कौन साहब ?

"प्रताप का भी यही सवाल बराबर रहा।"

र०—बतला दिया उसको ?

"नहीं ! नहीं !"

र०—हमको बतला दीजिये !

"नहीं ! नहीं !"

र०—कौन जाने आप ही वह जासूस हों !

"नहीं मेरा कहना तो यह कि वह मर गया है। अच्छा सुनो एक बात मैं परसों फिर प्रताप से भेंट करने आऊँगा। अगर भेंट करा दोगे तो आज का दूना ! समझे !

र०—अच्छा परसों की बात परसों देखी जायगी।

"अच्छा अब चलता हूँ। जय रामजी की।"

"जय रामजी की।"

जब बूढा चला गया। जेल का असिस्टेंट आप ही आप कहने लगा-"फिर तुम को हम घुसने देंगे अब क्या फिर सियार ताड़ तले आयेंगे / असामी भगाने की नीयत से यह बूढ़ा आता है। पहले मालूम होता तो मैं भीतर आने ही नहीं देता एक तो बूढा दूसरे गेरुआ वस्त्र इसी से जाने दिया था नहीं तो मुझे क्या कुत्ता काटे था कि ऐसे आदमी को ले जाता। बाप रे! बाप ! रुपये के वास्ते जान कौन देने जाय ?"

जब यह बूढ़ा प्रताप के कमरे से दूर हुआ तभी उन्हों ने

विचार किया कि अपने वकील को सब कह दूँ अभी न्याय पाने की आशा है। जब तक सांस तब तक आस! अभी दुनिया से सत्य और धर्म्म तो उठ नही गया है न!

छब्बीसवां बयान



मारतों के पीछे भागतों के आगे।

जब बूढा निराश हो कर पूना के घर से चला गया तब वह अपनी मा से बोली-"यह बूढा आज टिक रहता तो हरज नही था।"

मा०- इतना भोग कर भी होश नहीं आता बेटी! बे जाने पहचाने का क्या ठिकाना है।

पू —ना माई! यह बूढा तो भला आद ी रहा है।

मा —सो हो सकता है लेकिन तुम्हारे बाबू जी कहते रहे हैं कि जिन बदमाशों ने प्रताप की जान पर चक्र रचा है उनका मतलब तुम को भी मारे बिना नही सिद्ध होगा।

पूना कुछ अपनी विपत्ति सोच रही थी मा की बात उसके कानों में गयी ही नही लेकिन प्रताप का नाम सुनते ही मानो नींद से चौंक उठी। छाती धड़कने लगी। मा से उसने पूछा—"क्या कहा मा! प्रताप के लिये जान पर क्या?"

मा०—कुछ नही बेटी! अब कुछ होगा नहीं उनकी जान बचाने के लिये बड़ी बड़ी तैयारियां हो रही हैं। आज तुम्हारे बाबू जी भी उसी में गये हैं

पू०—काहे मा! उनकी फांसी का दिन पड गया है।

मा०- ना बेटी हम को तो मालूम नहीं है।

पू०—अच्छा लँगटू बाबा की कुछ खबर मिली है मा ?

मा०—उनके तो मरने की खबर सुनती हूँ बेटी ?

पू०—ऍं मर गये ?

मा०—कहते तो लोग ऐसा ही हैं लेकिन तुम्हारे बाबू जी को विश्वास नहीं है।

पू०--मैं इस पर विश्वास करती हूँ।

मा० क्यों !

पू०--दुश्मनों को उनसे बड़ा डर था। मार डाला हो तो आश्चर्य नहीं है लेकिन उनके खून की तहकीकात नहीं हुई काहे !

मा०--सुनती हूँ पुलीस वाले उनको रगेदे जाते थे वह पानी में डूब मरे।

पू०—तो कुछ उस मामले की जाँच हुई ?

मा०--अब लावारिश लाश की जाँच क्या होगी।

पू०- काहे ?

मा०—सुना है पुलीस के पीछा करने पर लँगटू बाबा भागा है और जमुना में एक डोंगी पर चढ़ कर आप ही डॉड लेकर भागा। लेकिन उधर से आँधी आयी डोंगी डूब गयी। लाश का पता ही नहीं लगा।

पू०—तो जिन्हों ने पीछा किया था वे सब पुलीस वाले रहे या और कोई !

मा०—असल बात की किसी को खबर नहीं है। वह मामला अब दब गया है।

पू०- ओ हो ! यह भी उन्हीं चक्र वालियों का चार है।

बेचारा लँगटू बाबा मार डाला गया। बड़ा उपकारी देवता था। अब हमारे प्यारे की कुछ आशा नहीं रही। काहे मां! मैं चाहती हूँ उनसे जेल में भेंट करके कुछ बातें कह दूँ जिनसे उनके मित्रों को काम में सुभीता होगा।

मा० -- अच्छा देखा जायगा।

पू० -- देखा नहीं जायगा मा! मैं जरूर भेंट करूँगी।

यही कहकर वह जोश के मारे अपने कमरे में गयी लेकिन वहाँ जाते ही नींद आ गयी।

जब आधी रात बीत चुकी कोई एक बजने के बाद दो आदमी उसके द्वार के सामने सड़क से जा रहे थे। एक ने कहा--"यह तो बड़ा दुर्दिन है यार जान पड़ता है पानी आवेगा आंधी के मारे तो बुरी हालत है कहीं पानी आया तब तो दुबले और दो असाढ़ का मामला हो जायगा।"

दूसरा बोला--"अरे इसी में तो मजा है। हम लोगों के लिये दुर्दिन ही तो अवलम्ब होता है। तुम ने नहीं सुना। चोर न भावे उजाली रात।"

पूना के कमरे में सन्नाटा है। टेबुल पर का लम्प टिम टिमा रहा है सोते समय उसकी रोशनी कम कर दी गयी थी। इसी समय ठक से आवाज आयी पूना ने खास कर करवट बदला। आवाज रुक गयी। थोड़ी देर पर फिर आवाज वैसीही आयी। मालूम हुआ किसी ने झिलमिली उठायी। उसने भीतर मुँह डालकर झांका और चारों ओर अच्छी तरह देखा। पूना ने आहट पाकर पड़े ही पड़े ताका लेकिन उसने झिलमिली की ओर नहीं देखा नहीं तो सामने ही दिखाई देता कि कोई नकली चेहरा लिये भीतर ताक रहा है। उसकी सूरत देखते ही वह तो चिल्ला उठती।

पूना फिर तैयार करे उठी और चारों ओर देख कर लेट गयी। उसने वहाँ किसी को नहीं देखा।

यह आदमी जब नीचे उतरने लगा। साथी ने कहा—"क्या हुआ रे?"

'अभी तो मा की लोंड़ी जागती है।"

"रात भर जागती रही?"

"ना! ना! आहट पाकर उठ बैठी है। मुझ से ही कुछ भूल हो गयी।"

"अच्छा फिर सो जायगी। आध देखो अब सो भी गयी होगी। कम उम्र के आदमी को नींद घरते कितनी देर लगती है। तुम बाहर निकाल दो मैं लेकर चलदूँगा। बस काम फतह है।"

अब उसने फिर जाकर देखा तो पूना की नाक बज रही है। बस धीरे धीरे पञ्जे के बल भीतर चला। पहले बाहर ही से झिलमिली में हाथ डाल कर सिटकिनी उसने खोली फिर आइने के नीचे की सिटकिनी के पास घूसा मार कर कांच तोड़ा और उसको भी बहुत धीरे खोल कर भीतर घुस गया। सिरहाने जाकर उसने दवा भरा एक रूमाल नाक पर रखकर पञ्जे के बल बाहर आया। और अपने साथी से बोला—"तैयार है?"

"हाँ! हाँ! ठंढा कर दिया है?"

"हाँ करता हूँ। जल्दी लेना।"

अब यह पलङ्ग के पास गया और रूमाल पर मोठी और दवा छिड़का। फिर नाक पर देकर बिछौने की चादर से कस के बाँधा उसे उठा कर उसने अपने साथी के हवाले किया वह उसे टाँगे हुए नीचे उतर गया

दूसरा साथी बक्स पेटारी तोड कर जो कुछ पाया ले कर चलता हुआ। जब हवा लगने से पूना को होश होने का हुआ। उसने फिर रूमाल में दवा डाल कर नाक पर रखा फिर वह वैसी ही बेहोश हो गयी। मरती बेर के समान घरना बजने लगा।

अब दोनों उसे लेकर साथ चले। एक ने कहा—"जल्द चलो रुपया ले कर हम लोग चल चलें।"

"खबरदार एक पग भी हटा कि खोपड़ी खतम्म।" यह कहकर सामने ही वह बहरा बूढा आ खडा हुआ। अब उस डाकू ने पूना को पटक दिया और आप खडा हुआ। इधर लॅगट्ट ने जेब से हथकडी निकाल कर उस डाकू के कस दी लेकिन दूसरा धीरे धीरे यह कहता हुआ वहाँ से सरक "मारतों के पीछे भागतों के आगे।"

अट्ठाईसवाँ बयान

पूना होश में।

अब घर के और सब भी जाग उठे। पूना की मा ने खिडकी से देखा तो पूना बेहोश है।

यह बूढा उसको पकडे है। बस चिल्लाने और "वही बूढा" कहने लगी नोकर लौंडी भी चिल्लायी।

जब पूना होश में आयी। दूसरी ओर से जासूस दुतदमडी भी आ गया। अब लॅगट्ट ने पकडे हुए आदमी को दमडी के हवाले

करके पूना को उसके कमरे में पहुचाया। पूना की मा ने गुस्से में भर कर कहा—"अरे! तू कौन है?"

लँ०—आप चिल्लाना नही माई नही तो गुण्डे आ पडेंगे।

मा०—तू करता क्या था?

लँ०—मैंने दो गुण्डों के हाथ से पूना को उबारा है अब मैं इसको यहाँ पहुचाये जाता हू।

मा०—तू है कौन।

"मैं लँगड़ू हूँ माई।"

इतने में पूना होश में आकर बोली-"अरे बाबा! तुम जीते हो बड़े भाग्य हैं बाबा! तुम्हारा फिर दर्शन तो मिला।"

लँ०—हाँ बेटी उस चाण्डाल केशव के खप्पर में से तुमको निकाल लाया हू। जरा और देर होती तो सर्व नाश हो चुका था। अच्छा अब अपनी मा को समझाओ बुझाओ बेटी। मैं चलता हू नही तो और गुण्डे आ पहुचेंगे।

पूना के समझाने से मा का मिजाज ठिकाने आया। लँगड़ू ने कहा—"अब मैं ठहर नही सकता बेटी। मेरा मुर्दा यमराज के यहां से लौट आया है समझा न? मै उसीके पीछे लगा हू। लेकिन तुम पर बडी आफत है।"

"सो मै अच्छी तरह समझती हूँ।"

लँ०—आप अपने पिता से कह देना। कल्ह सबेरे ही आप को साथ लेकर यहा से हट जायँ। क्योंकि प्रताप की जान जो लोग लेना चाहते हैं उनका भार तुम पर भी वैसा ही है।

पू०-अच्छा बाबा! तुम पुलीस में जाकर यह सब कह काहे नही देते हो?

लँ०—सब समय पर होता है बेटी। उबताने से गूलर

नही पकती। केशव ने बडी चालाकी से मेरे लिये वह इनाम बोला है। देखो मैं भी उसकी सब तैयारी पर मानी फेर देता हूँ। अच्छा हां याद रखना कल्ह जरूर यहाँ से चली जाना।"

पू०—मैं उनसे जेल में भेट करूं ?

ल —ना ! ना ! ऐसा हरगिज मत करना। वह खुद छूटने पर तुम्हारे पास आवेंगे।

पू०—फांसी का समय तो आ गया।

लं—मैं तो बेटी तुम को बार बार कहता हूँ कि उनको फांसी नही होने दूँगा। उनको बेगुनाह साबित करके विजय का डङ्का बजाकर जेल से छुड़ाऊगा और दुश्मनों के मुह में कालिख पोतूँगा। अब मैं जाता हूँ बेटी ! खबरदार ! खबरदार !

पू०—अरे तुम यही ठहरो। मुझे अकेले छोडकर मत जाव क्या जानें फिर बदमाश सब आवें इस पकडे हुए को कल्ह पुलीस में दे देना सब आपही पकड जायगे। तुम जाते क्यों हो ?

"इस घडी कुछ खास कारण है अभी कानून से हमारी विजय नही होगी। सब मौके पर देखा जायगा।

पू०—तो कल सवेरे मुझे यहां से हटने को कहते हो। अगर सवेरे तक जीती बची रहूंगी तब न ?

"हां ! हां मेरा कहना सुनो देखो खूब खबरदार भूलना मत।"

वे सब अभी इतना जल्दी नहीं आवेंगे। कोई दूसरा फन्दा तैयार करके तो पहुचेंगे।"

पू०—लेकिन हम लोग चले जाय तो बिना पता पाये तुम आयोगे कैसे ?

"उसकी चिन्ता मत करो हम ढूंढ़ लेंगे।" कह कर लगड़ा बाबा वहां से चलते हुए।

उनतीसवां बयान

इनाम का इश्तहार।

लगट्टू जब पूना को अलग जाकर बातें करते थे तब दमडी कैदी को लिये दूर खडा था। वह कैदी बोला—"अबे इस तरह से पिस्तौल मत कर लौंडे!"

द०—काहे और कान के पास कर दूँ"

"क्यों रे जानवर! मानेगा नहीं?"

द०—पास रहेगा तभी न उसकी आवाज अच्छी तरह सुनायी देगी बहादुर?

"अच्छा बच्चा कभी तो मेरे हाथ में पडोगे तब आटा दाल का भाव मालूम पडेगा।"

द०—यह बात है।

"बहुत बढो मत बच्चा हम कहे देते हैं।"

द०-अरे कह तो दिया। हवास न बैठा रह नहीं तेरी खोपडी घोंघे की तरह फोड दूँगा समझता है कि नहीं।

उस समय उस गुण्डे ने देखा कि दमडी अकेले हैं। झट घात पाकर उस पर झपटा। दमडी बगल काट गया। अब वह गुण्डा धम्म से एक गहरे चहबच्चे में गिर गया। उसी में वह चुभकिया खाने लगा। दमडी ने उसका पाँव पकड कर खींचा। फिर सिर के बाल धर कर घसीटने और कहने लगा—"हो जैसी करनी वैसी भरनी।"

इसी समय लँगट्टू वहां आ पहुंचा। दमडी ने अब उससे

गुण्डे की सब बहादुरी बतलायीं। सुनकर लॅंगट्ट बाबा ने गुण्डे से कहा—"देखो बहादुर ! तुम से हम को एक समझौता करना है।"

'अच्छी बात है लेकिन पहले यह हाथ का कफ्न तो।"

लॅ०—नहीं ! नहीं ! वह बात नहीं है। मैं जो कहता हूँ पहले उसको पसन्द से या नापसन्द से कर लो तो पीछे बात।

गु०—हां अब हाथ में पड गये हैं तो ऐसा कहते हो एक दिन तुम भी पाले पडोगे तो हम सूद सहित चुका लेंगे।

"अच्छा अब जो हम करते हैं वही तुम भी कर लेना" कहकर लॅंगट्ट ने उसके कपड़े देखे उसमें से एक भुजाली निकाली और एक छोटा पिस्तौल भी मिला। दोनों चीजें अपने अधिकार में करके लगट्ट ने कहा—'अब इसको छोड़ दो बच्चा। गोल माल करने का काम नहीं है।"

गु०—यही तो हम भी कहते हैं कि गोल माल करके नाहक हमारे साथियों को बुलाना और जान आफत में डालना समझदार का काम नही है।

द०—अरे चिल्लायगा तो गला दबा दूँगा। समझा ?

गु०—अरे हुआ ! हुआ ! ढेर हुआ !

लॅ०—बस ! बस ! बकने का काम नहीं बेटा चले चलो चुप चाप।

गु०—चला कर क्या करना है बाबा ! पुलीस में तो तुम हम को दे नहीं सकते। तुम्हारे पकडने के लिये इनाम बोला गया है।

"अच्छा चल बेटा ! तेरे लिये भी हम इनाम पावेंगे। "कह कर दमडी ने गुण्डे का हाथ पकडा।

तीसवां बयान



घुड़सवार डाकू ।

वे लोग दो घंटे तक कैदी को लिये हुए चलते गये। जब जाते जाते नदी के किनारे पहुँचे तब तक किसी से उनकी मुलाकात नही हुई।

रात का अंधकार दूर हो गया था। पूरब ओर से खूब प्रकाश हुआ इसी समय गाडी की आवाज आयी। लॅगट्ट ने ऊँचे चढ़ कर देखा बडी भारी गाडी तेजी से आ रही थी।

साथही साथ एक आदमी घोडे पर चढा आ रहा था। लॅगट्ट ने उसे पहचान लिया यह केशव का प्रधान साथी लच्छन था।

लॅगट्ट ने समझ लिया कि गाडी में बदमाश लदे हैं। जरूर उसी के पीछे वे सब आ रहे हैं। अब तो बडी आफत हुई। ये बदमाश दो बार जान मारने पर उतारू हुए और दोनों बार इन्हीं ने मुँह की खायी। अब क्या करूं। चिल्लाकर आदमी बुलाऊँ और पुलीस के हवाले कर दूँ या देखूं कि आगे क्या क्या होता है। इन्ही के हथियार से इनको मार सकता हूँ या नही ? अगर मैं मर गया तब तो बेचारा प्रतापबडी आफत में पडेगा। मेरे मरने पर उस बेचारे प्रताप की भी मरन हो जायगी। देख लें कि भगवान् को क्या करना है। अब तक तो मैंने कोई पातक नही किया है। लेकिन देखू आज क्या करना होता है।

यही मन में लॅगट्ट सोच रहे थे कि पीछे से किसी ने पहुँच

कर उनके सर में लाठी मारी। लँगटू वहीं धड़ाम से गिर गये। बँधे हुए गुण्डे ने कहा—"कहा था न कि कभी हमारा भी पाला पड़ेगा। अब उलट गयी न बाजी।"

इसी समय गाडी की आहट मिली बंधे हुए गुण्डे ने ऊचक कर देखा। अपने साथी लच्छन को देख कर खुशी के मारे उछल गया। अब यहां हम यह बतला देना उचित समझते हैं कि कैसे क्या हुआ और बाजी किस तरह उलट पड़ी।

बात यों हुई कि दमड़ी अपने कैदी को लेकर एक मैदान में पहुँचा और एक पेड में उसे नाँध कर लँगटू की राह ताकता था। क्योंकि लँगटू थोडी दूर साथ चल कर पूना से कुछ कहने जाते हैं कहकर लौट गया था।

दमडी ने उसको बाँधते समय कहा—"जरा यहीं ठहरो पहलवान। साफ़ हो जाय और तुम्हारा मुँह अच्छी तरह देख कर पहचान लूँ तब आगे कदम बढ़ाऊ। खबरदार रहना। अगर अब-भागोगे तो इस बार पकडते ही कलम कर दूँगा।"

लेकिन वह गुण्डा उस घडी यह सोच रहा था कि किस तरह इसके पञ्जे से भागूँ। इसी कारण उस बात पर कान नहीं दिया। दमड़ी साँप से बहुत डरता था। उसने देखा कि एक साँप पेड के एक खोढरे में गेंडुर मारे बैठा है। उसको देखते ही दमडी पेड पर से कूदा और बँधे हुए गुण्डे पर जा गिरा।

कैदी को इस हरकत से बडा क्रोध आया वह सम्हल कर दमड़ी को हथकड़ी बँधे हाथों से पीटने और कहने लगा—"बच्चा बडे बढ गये हो अभी लडकू को पहचानते नहीं। लो पूजा अच्छी तरह।"

जब मार कर खडक् ने दमडी को बेहोश कर दिया तब वही छोड कर लँगट्ट की खोज में चला। रास्ते में उसने लँगट्ट को पाया और अचानक उसको भी उन्हीं हाथों मार गिराया फिर लच्छन को चिल्ला कर बोला—"ठहरो! ठहरो! पलटन रोको!"

लच्छन नेअपने साथी खडक् की बोली पहचानी और सबको रोक कर अपने घोडे की बाग रोकी बोला—"अरे कहाँ आया खडक् तू किधर से?"

ख०—मैं यहीं था आया नहीं।

ल०—सो तो देखता हूं लेकिन यह जेवर किसने पहनाया?

ख०—तुम्हारे ही काम में यह इनाम मिला है यार! ऐसी करने से पहले इसको खोलो तब बात सब कहूँ।

इसी समय गाडी हाँकने वाला कूद कर खडक् के पास हुआ बोला-"अरे! उसी बूढे की यह करनी है वह है कहाँ यार"

"उसको आगे सुला आया हूं। उसने जैसे मेरा काम चौपट किया था उसको भी लीप पोत कर आया हूँ हाथों हाथ बदला दिया है उसको तो।

ल०—हैं! किसका काम लीप पोत कर आया है खडक्?

ख०—उसी लँगटुआ को मार के मारे बेहोश करके तो आया हूँ।

ल०—अरे! तो उसको पाया कहाँ तुम ने?

ख०—उसकी बात क्या कहते हो? उसका हाल लिये आया हूँ। हम लोगों ने उस लौंडिया को ज्यों ही हाथ में दिया न जाने कहाँ से आकर उसने सब मिट्टी कर दिया। और मेरे हाथ

में उसने हथकडी कसके पकडा था। लेकिन बच्चाजी को अब आटा दाल का भाव मालूम हो गया होगा।

ल०—अब तो हाथ में कर लिया है न?

ख०—अरे अब? अब तो वह हिल भी नहीं रहा है। उसी के हथियार से उसको काबू किया है मैंने।

यही कहकर खडकू ने हथकडी दिखायी। अब गाडीवान ने पूछा—"वह लौंडा कहां गया इसका दूत वह भी थोडी दूर पर आगे पडा है।"

लच्छन चौंककर बोला "एं। कोई और था?"

ख० - हां साहब वह भी सांप का पोवा है।

ल०—वह कौन है?

"अरे वही रहा दमडिया।" जब खडकू से सुना तब लच्छन घोडे से उतर कर लँगडू को देखने चला।

इकतीसवां बयान 25

मुर्दा गायब।



अब लच्छन ने पूछा—"तो दमड़िया कहां है?"

"आगे चलिये हम उसको दिखाते हैं।" लेकिन जब खडकू उस पेड के पास गया तब उसे न पाकर बडा अकचकाया। बोला "अरे यह पोवा क्या हवा पीकर भाग गया?"

अब गाडीवान बोला "लो इसको हम लोग देखने आये तब तक वह भी हम जानते हैं झाड पोंछकर चलता बना होगा।"

अब सब के सब वहां चले जहां लँगट्ट मूर्च्छित पड़ा था। वहां जाने पर कुछ दूरी पर से एक स्त्री की चिल्लाहट सुनाई दी। यह आवाज अब और पास आने लगी। क्योंकि जिधर से आवाज आ रही थी उधर ही को वे सब जारहे थे। मालूम हुआ कि किसी स्त्री पर कोई दानवी अत्याचार हो रहा है।

लेकिन अब ऐसा मालूम हुआ कि वे सब जितना आगे बढ़ते हैं उतना ही वह आवाज भी आगे जा रही है। इस बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया था अब लच्छन सब को रोककर बोला —"यह बड़े अचरज की बात है ज्यों ज्यों हम लोग आगे बढ़ते हैं त्यों त्यों वह आवाज भी आगे जारही है।"

एक दूसरा बोला—"हां भाई! यह तो अब मालूम हुआ वह आवाज भी हवाकीतरह उड़ती आरही है। अब सब लोग खड़े होकर सुनने लगे तो आवाज एकदम बन्द हो गयी। लड़कू ने मानो नींद से उठकर कहा "अरे! यह हम कहां चुडैल के पीछे चले आये। तब तक वह लँगट्ट लम्बा न हो गया हो?"

अब सब के सब वहां को लौटे जहां लँगट्ट पड़ा था। लेकिन फिर वह आवाज और कातर होकर सुनाई देने लगी वह स्त्री बड़े जोरसे रो रोकर कहने लगी 'अरे दौड़ो दौड़ो! गाय गुहार तिरिया गुहार जो जहां हो दौड़ो दौड़ो —?-

अब सब मुंह तकौअल करने लगे। फिर आवाज आयी। —"अरे बचाओ! बचाओ! तिरिया गुहार गाय गुहार" -

अब लच्छन ने चिल्लाकर कहा "अरे कौन हो तुम कहां?"

"अरे यहा यहां! इधर! देरी मत करो! मरती हूँ। जान गयी-गयी"

गाड़ीवान बोला-"यह कोई चुडैल है भाई आदमी नहीं है।

अब लच्छन बोला—"अरे आवाज मैं पहचान गया। जाव-तुम लोग लॅगड़ को देखो मैं इसके साथ उसकी ओर जाता हूँ। जहां से आवाज आरही है।

अच्छी बात है कहकर खड़कू और गाड़ीवान लँगड़ की ओर गये। जब उजियाला अच्छी तरह हो आया तब खड़कू ने उस गाड़ीवान का मुह ताक कर कहां-'क्यों ऐसा तुम्हारा चेहरा क्यों हो रहा है?"

"क्या जाने भाई जब से मैने उस स्त्री की चिल्लाहट सुनी है तब से मेरे भीतर कैसा तो हो रहा है।"

ख:—अरे चिल्लाने में तुम्हारा क्या हुआ?

'हुआ कुछ नहीं। मुझे तो वह आदमी की चिल्लाहट नहीं मालूम हुई यार।"

ख—अरे तो क्या भूत समझता है?

'भूत नही चुडैल रही भाई उतनी दूर हम लोग गये कोई आदमी दिखाई नही दिया और वह आवाज भी भागती ही गयी।"

ख०--थोड़ा और जाने से भेट हो जाती।

'नही यार तुम आगे जाते तो आवाज भी आगे जाती। यह खून का बदला खून है दूसरा कुछ नहीं।"

ख०-अरे तू तो पगला है।

'ना! ना! वह आवाज मैं सुन चुका हूँ। पहचानता [illegible]। उस घड़ी आदमी की आवाज थी। इस बड़ी फत्र में मे वही बोल रही थी।"

ख—तो यही हम लोग भूत चुडैल पर बहस करते हैं उधर लगड़ रफूचकर हो जायगा।

"और नहीं तो वह तुम्हारे सामने अभी पड़ा है क्या ?"

ख०—लेकिन यार अब तो वेला दूसरी हुई।

"हां यार है तो ऐसा ही लेकिन हम कहते हैं, अगर वह मरा नहीं होतो बेचारे साधू सयाली को छोड़ देना बेहतर है।"

ख०—अरे यह सब आव भगत काम की नहीं करता।

"अरे बाप रे ! वह चिल्लाहट तो मैं ने नहीं सुनता तभी अच्छा था।"

ख०- अरे वह सब कुछ नहीं खाली खयाल ही खयाल रहा यार।

"धत्तेरे खयाल की नानी मेरे सब ने आवाज सुनी। मैं ने अपने कानों सुना। तुम ने भी सुना तो भी खयाल ही खयाल करते हो।"

अब खड़कू ने ढङ्ग अच्छा नहीं देख कर गाड़ी वाले को एक बोतल दिया। उसको मन भर पीकर जब मस्त हुआ तब बोला- चला यार अब ठीक ख्याल में मैं आ गया। नहीं तो मालूम हुआ कोई चीज खो गई थी।

जब दोनों वहां पहुंचे जहाँ लँगड़ू को बेहोश छोड़ गये थे वहाँ देखा तो कोई नहीं है। अब खड़कू बोला-"अरे ! राम इस नोसो पर भी ठाट पड़ा यार ! गया कहां ?"

गा०—देखो कहीं यहीं मरा पड़ा होगा जायगा कहाँ मुर्दा भी चलता है।"

ख०-अरे यार यह बड़ा सिकड़ आदमी है। मरा नहीं होश में आकर कहीं छिपा है लेकिन कहां पाऊँ तो होगा। चलो ता देखें।

गा०—यहीं तो रख गये थे देखा न यही जगह है।

ख०—हाँ यार लेकिन देखो खून गिरा है चलो यही दाग देखते हुए चलें जरूर मिलेगा।

कुछ दूर दाग देखते हुए जाने पर दोनों एक नाले के पास पहुँचे। वहाँ जाने पर खड़कू बोला "बस अब क्या! पछी उड़ गया यार!"

गा०—क्यों! क्यों!

खड़०—देखते नहीं दाग अब नहीं है।

गा०—तो वह मरा नहीं बहाने से मुर्दा बना पड़ा था।

ख० नहीं यार सांस नहीं चलती थी। "मैंने हाथ की नाड़ी तक देखी थी बन्द पड़ी थी। जरूर इसमें कुछ गोल माल है देखो मेरे रोयें खड़े हो रहे हैं।"

गा०—तो साफ क्यों नहीं कहते क्या मतलब है?

उसी समय एक जगह से आवाज आयी—"खबरदार! खबर ० जासूस सर्दार!"

इस खड़कू ने चौंक कर कहा—"बस यार वही है। देखो न यहाँ उसने खून धोया है।

अरे यार वही भूत हुआ है मर के।

ख०—फिर तुम पागल पना बकने लगे न?

यही कहकर खड़कू हँसने लगा। एक ओर से लच्छन भी अपने साथियों सहित वहीं आ पहुँचा। यह जगह वहां गङ्गा पार करने पर है जहां झूंसी बसी है।

बत्तीसवाँ बयान



कोशिश करो।

जब लच्छन अपनेसाथियों सहित आवाज की टोह में बहुत दूर जाने पर भी किसी को नहीं देख पाया तब बोला-"अच्छा अब मैं जाता हू कौन चिल्लानेवाला है बोलो नहीं तो मैं लौट पड़ूगा।"

फिर आवाज आयी-"ना! ना! लौटो मत। मुझे छोड़कर मत जाव मुझे काल के गाल से उबारो।"

ल०—अच्छा तुम हो कौन?

"मैं हूं केशिनी।"

ल०—सो तो मैं आवाज से पहचानता हूँ लेकिन सामने आती काहे नहीं?

'पार आओ नाला पार।"

अब झट लच्छन नाला पार गया। तो देखा कहीं कोई नहीं फिर बोला--"अब आती काहे नहीं?"

आवाज आयी—"कुछ खाने को दो भाई।"

अब बात असल लच्छन की समझ में आ गयी। झुंझलाकर बोला--"अरे पाजी! तूही है जा! जा! एक बार तेरा पीछा करके देख चुका हूं। तेरे पीछे कौन लगे जा।"

यही कहकर लच्छन वहाँ को चला जहाँ लँगड़ू को छोड़ गया था वहाँ रामफू और गाड़ी वाले को देखकर पूछा-'क्यों क्या हुआ? वह लँगड़ू कहाँ है?"

ख० -वह तो भाग गया। लेकिन जो चिल्लाती थी उ को देख आये ?

ल०—अरे कोई स्त्री विस्त्री नहीं रही जी वहां तो।

ख०—तब क्या चुड़ैल थी ?

ल०—चुड़ैल नही वही तुम्हारा सांप का पोवा था।

ख०—अरे तो उस बदमाश को पकडा नहीं ?

ल०—नाः

ख०—ओफ ! एक बेर और उस को कोई पकड कर लावे तो उस को हम दो सौ कल्दार गिन दे ।

ल०—पास ही कहीं लगट्टू है।

ख०—कौन जाने भाई कैसे वह भाग गया। मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता।

ल०—उस को तुम पकडो तो हम आधा मन कलदार तुम को देंगे।

ख०—उस को पावें कहाँ हम ?

ल०—यहीं अगल बगल में वह पडा है। केशव ने उसको पकडने के लिये ढिढोंरा पिटवाया है । यहाँ किसी के घर में होता तो अब तक जरूर पकड गया होता। उस को पकडने से खूब इनाम मिलेगा। समझे खडकू

ख०— और यह क्या करेगा ?

" इस को भी खडकू तुम अपने साथ रखो। दोनों आदमी मिल कर कोशिश करो। मैं गाडी ले जाता हूँ।"

अच्छी बात है कह कर सबने अपना अपना रास्ता लिया।

तैंतीसवाँ बयान।



पलीते में आग।

अब खड़कू और गाड़ीवान दोनों एक साथ लँगड़े की खोज में वहां से रवाना हुए। लेकिन थोड़ी ही दूर चलने पर खड़कू ने कहा "यार भूख बड़ी लगी है पहले चलो कहीं पेट भर लें तब और कुछ काम होगा।"

गा०—मैं भी तो यही चाहता था। कल्ह रात को भी मुझे खाना नसीब नहीं हुआ।

अब दोनों एक राय होकर खाने की टोह में चले लेकिन रास्ते में एक जगह खून गिरा देख कर खड़कू वहीं रुक गया। कहा-"कहो यार शिकार तो मिल गया। अब पहले शिकार मारोगे या खाओगे?"

गा०—अच्छा अगर शिकार मिल जाय तो अच्छा है। पहले खावज तो लो खाना कहाँ जायगा?

"अच्छी बात है चलो तब आओ।" कह कर खून का दाग देखता खड़कू चलता हुआ।

कुछ दूर आगे जाने पर खून के दाग तो नहीं मिले लेकिन घड़ घरावर अटकल पर चला गया। रेल कम्पनी की एक गुमटी सामने मिली। उसके पास ही एक गादाम दीख पड़ी। खड़कू को मालूम था कि रेलवे गेंग वाले कुली उसमें अपना सब्बलगैता आदि औजार रखा करते हैं।

खडकू ने अटकल किया कि उसी में या आस पास लँगट्ट कहीं छिपा है। गाडीवान की भी राय मिल गयी। अब दोनों उस घर की तलाशी के लिये तुरत कोशिश करने लगे। खडकू ने कहा-"देखो यह आदमी ऐसा वैसा नहीं है। जैसी ही अकल और चालाकी उसको है वैसी ही ताकत भी है। खबरदारी से खूब होशियार होकर यहाँ रहना होगा। तुम यहीं रहो। चारों ओर नजर रखो मैं जरा अन्दर जाकर देख आऊं।"

"अच्छी बात है। यहां की चिन्ता नहीं मैं खबरदार हूँ।" जब गाडीवान ने कहा तब खड़कू वहाँ से बहुत धीरे धीरे पञ्जे के बल गोदाम की ओर चलता हुआ।

लेकिन रोक कर गाडीवान बोला-"तुम्हीं यहाँ ठहरो। मैं जाता हूँ देख आऊंगा।"

इस तरह दोनों में बहस हुई। लेकिन अन्त को गाडीवान का जाना ठीक ठहरा। वही गया। वहाँ पहुँच कर उसने फटी दीवार में दरार से देखा तो भीतर लँगट्ट सोया है। और डाइनामाइट और पलीता रखा है। गाडीवान ने पहुंच कर खडकू से कहा-"यार मामला तो तैयार है कहो तो घरके साथही उसको भी उडा दें यह जो बारूद खाना है इसी में वह बैठा है।

ख०—बात तो तुमने ठीक विचारी लेकिन बडी खबरदारी से काम करना होगा। यह बडा सङ्गीन मामला है। जब मैं पहरे पर हूँ यहाँ।

"सो तो बनी बात है।" कह कर गाडीवान गोदाम को गया। दरवाजे पर जाकर उसने जोडा खोला। उँगली से ठेलते

ही दरवाजा सुगमता से खुल गया। अब गाडीवाला भीतर आकर घात विचारने लगा। घात ठीक करते उसको देर नहीं लगी। झट उसने पलीते का बण्डल उठाया और बारूद भरे कनस्तरे से उसको मिला दिया। फिर उसे उभाडता हुआ बाहर गया। झट खडकू के पास जाकर काँपता हुआ बोला— "कोई आदमी तो नही आया न ?"

ख०—आया कोई नही लेकिन इतना कांपता क्यों है। काम फतह कर आया या नही ?

"कांपता मैं कहाँ हु । लेकिन यार उस गोदाम में दामी चीजें रखी हैं। सब उड जाने से बडी सनसनी फैलेगी। इसीसे तुम से पूछने आया। पकडने के लिये चारों ओर धमा चौकडी होने लगेगी। अब सब ठीक कर के आया हूँ। पलीते में आग देने की देर रह गयी है।

ख०—तो उसको किसके वास्ते छोड आये हो यार जाय निबटाते आओ मुझे भूख बहुत लगी है।

"तो जाने दो रात को यह काम होना अच्छा है।"

ख०—तब तो पछी उसमें से उड जायगा।

"पछी उडने का नही है। उसके डेने टूट गये हैं बडा जुल्म हो गया है। डाक्टर के बिना यह आराम थोडे होगा।"

ख०—अरे यह सब कबिलांव छोड दे। जा आग लगाता आ।

"तुम्ही क्यों नही जाते। जाउ।"

ख०—हाँ अगर तुमसे नहीं बनेगा तब मैं जाऊंगा न करूंगा क्या ?

"जो असल काम था वह तो मैं कर आया।"

ख०--इसी से तो कहता हूँ। तुम्हारा जाना बूझा है। आग देकर सब निबटाते आओ।

अब गाड़ीवान वहाँ से धीरे धीरे चला। मौके पर पहुँच कर उसने जेब से दियासलाई निकाली और चारों ओर ताक कर उसकी बत्ती घिसने लगा। एक बार बत्ती भक से जली फिर हवा से बुझ गयी-"ओफ यह काम हमारे किये न होगा" कह कर उसने दियासलाई की बत्ती पलीते पर फेंक दी और आप दौड़ा हुआ साथी के पास पहुच कर बोला-"आग तो लगा आया यार।"

अब दोनों वहा से पार होकर स्टेशन को चलते हुए। चौक पर पहुंच कर उन्होंने होली देखी। उसी में घुस कर खाने पीने लगे। बेचारे परोपकारी लँगट्ट की जान लेने के लिये यह सब जो तैयारी हुई उसकी कुछ भी खबर उसे नही हुई।

चौंतीसवां बयान

दाना पानी।

लेकिन गाड़ीवान ने जो बात सोची थी। वह नहीं हुई। उसकी समझ में दियासलाई की बत्ती बुझ गयी लेकिन लवर बुझ जाने पर भी उसकी नोक पर जो आग थी वही काफी हुई।

आग अब पलीते पर चढने लगी। बेचारा लँगट्ट नींद में बेखबर पड़ा था। उधर पलीता चलता चलता बारूद भरे पीपे के पास पहुंच गया। तो भी लँगट्ट को उसकी कुछ खबर नहीं।

एक चूहा बिल से निकल कर बाहर चला। उसकी नजर भी उस लपकती हुई आग पर पड़ी। वह डर कर वहाँ से फिर बिल में जा घुसा। बेचारे लँगट्ट को बिल में घुसने की चिन्ता नहीं न उसको इस महा विपत्ति की कुछ फिक्र है।

इसी समय वीर बालक दमड़ी वहाँ आ पहुंचा। उसने एकही नजर में सब लीला समझ ली। देखा तो जरा देर में महा अनर्थ होता है। झट दौड कर उसने दांतों से पलीता काट लिया। आगे बढ़ती हुई आग बुझ गयी लेकिन दमड़ी की जीभ पर जख़म हो गया।

लँगट्ट की प्राण रक्षा करने से दमड़ी के मन में बड़ी खुशी हुई उसने थूक कर मुंह साफ कर लिया। उसकी इस हरकत से लँगट्ट की नींद खुली सामने ही दमड़ी को देख कर मुसकुराने लगे। दमड़ी ने पूछा—"चोट आपको बहुत लगी है न ?"

लँ०—हां बचा उस बदमाश लड़कुआ ने बड़ी मार मारी थी मुझे।

"मारने में तो उसने मुझे भी कसर नहीं की लेकिन मैं धोखा दे कर भाग गया।"

लँ०—अच्छा मुझे क्यों और कैसे मारा उसने मुझे तो उस घड़ी होश ही नहीं था। अब दमड़ी ने सब कथा लँगट्ट से उसकी कह सुनायी और कहा—"यह तो मैंने समझ लिया

था कि आप थोडी ही देर पर होश में आजायेंगे इसी वास्ते मैं उनको धोखा देकर दूर ले गया था।"

इसी समय लँगटू की नजर बारूद के पीपे पर पडी बोले "इस पर जरा सी चिनगारी पड़े तो सब स्वाहा हो जाय देखते हो ?"

द०—जी हाँ यही तो सब तैयारी थी। अभी मैं आया तो पलीता जल रहा था।

"अरे यह क्या कैसे हुआ यह अनर्थ ?"

यही कह कर लँगटू बड़े अकचकाये। अब दमडी ने सब कहा और अपनी कारवाई तथा जीभ जलने की बात भी सुनायी।

लँ०—अरे तब तो दुश्मन यहाँ भी आये रहे मुझे मार ही डाला था।

द०—और नही क्या। कुछ कसर थी थोडे।

लँ०—तू तो संयोग से आगया नहीं तो अब तक क्या का क्या हो जाता ?

द०-अब तक तो कहाँ न उड़ गये होते।

लँ०—तब बेटा तुम ने तो आज मेरी जान बचा ली।

द०—मैं कौन चीज हूं बाबा। भगवान ही सबकी रक्षा करता है। उसीने मुझे यहाँ इस अवसर पर भेजा है।

लँ०—ओफ ! परमात्मा मुझे मरने में तो कुछ वैसा नहीं था लेकिन बेचारे प्रताप की क्या गति होती ? वह तो खतम हो चुकता।

द०—तो क्या समझते हैं कि प्रताप खतम नही होंगे।

उनको तो परसों फांसी होगी न ? अब आप कैसे बचावेंगे उनको ?

लॅ०—नहीं बेटा । मेरे जीते जी प्रताप को फाँसी नहीं होने पावेगी ।

द०—आप अब क्या करेंगे ? खुद ही तो इस हालत में पड़े हैं ।

लॅ०—नहीं बेटा । मेरी हालत वैसी खराब नहीं है अगर मने तो थोडा पानी और कुछ खाने को ला दे तो मैं अभी उठ बैठूं गा ।

द०—लेकिन मेरे जाने पर बदमाश कोई और आफत डालें तब ?

लॅ—अब मैं तैयार हूं तुम जाव ।

द०—तो मैं आदमी नहीं बुला लाऊँ मदद के वास्ते ।

लॅ—नहीं बेटा । शोर गुल करने की जरूरत नहीं है । हम को पकडने के वास्ते इश्तहार बंटा गया है न ?

द०—सो तो मालूम है ।

लॅ०—मालूम है तो जाव पहले खाना पानी ले आओ पिस्तौल हम को देते जाव ।

अब दमड़ी लँगड़ू के हाथ में पिस्तोल देकर आप चलता हुआ ।

पैंतीसवाँ बयान

हलचल ।

जानसेनगज की हौली में आज पियक्कड़ों की बड़ी धींगा

मस्ती हो रही है। कभी ठठाकर हसने के मारे छुतफटी पडती है। कभी रोने के मारे कुहराम नजर आता है। कभी शोर गुल के मारे महल्ले वालो को कल नहीं। दूकानदार का लडका छयला जुल्फों में वेले का तेल लगाये, लखनौआ दुपलिया बूटेदार टोपी डाँटे, चिकन का कुर्त्ता पहने पान चबाते हुए ग्राहकों का मदिरा दे रहा है दूसरे चौतरे पर गजक और चिखना का ठाट है इसी समय एक और लौंडा उसके सामने दूर ही खडा होकर कुछ इशारा करने लगा। उसने दाहिने हाथ की तर्जनी दोनों ओठों पर रखकर चुप रहने का इशारा किया और बांये हाथ से भीतर का कमरा दिखाया जिस में बैठे दो पियक्कड़ ढलौअल कर रहे थे।

दूकान वाले ने विगड कर कहा-"अरे कौन हो तुम! इशारे बाजी का क्या काम है। मुँह से साफ बोलते काहे नहीं?"

उस ने और पास जाकर जेब से एक कागज दिया। दूकानदार का क्रोध उतर रहा था। कागज पढ़ कर बोला- "अरे यह इश्तहार तो हमने पहले से देख रखा है। यह क्या दिखाते हो हमको?"

"देखते नहीं। एक हजार का इश्तिहार है?"

दू०—हा लेकिन जो लगट्ट को पकड़वा देगा वह न पावेगा एक हजार!

"पकडवाना मुश्किल नहीं। तुम जरा सम्हल कर चलो और अकल से काम लो तो मैं उस को बतला दे सकता हूं।"

दू०—तो तुम्ही क्यों नहीं पकडवाकर हजार मार लेते जो हमको बतलाते हो?

"वह इस वक्त तुम्हारे घर में है मैं कैसे पकडाऊँ।"

दू०—मैं ने तो सुना था वह पुलीस में गिरफ्तार हो कर मर गया है।

"यह सब गप्प है। मैंने अभी उस को देखा है।"

दू०—कब देखा है कहाँ ?

"दस मिनट पहले देखा है।"

दू०—सचमुच ?

"बिलकुल सच्च जैसे सूरज का उगना सच्च वैसेही उस को मेरा देखना सच्च है।

दू०—तुम्हारा मकान ?

"मकान मेरा भूसी में है।"

दू०—नाम ?

"नाम लेकर क्या करोगे मैं तो अभी तुम को दिखा देता हू "

दू०—मुझे इस बात पर विश्वास ही नही होता।

"मैं पहचान करा कर पकडा दूगा। इस पर भी विश्वास नही होता ?"

दू० तुम ने कभी उसको देखा है।"

"हां देखा है। अच्छी तरह पहचानता हूं।"

अब हजार के लोभ में विभोर होकर दूकानदार लौंडा अधीर हो गया। बोला- तो कैसे क्या करना होगा यह तो बोलो" "अच्छा जमादार कहां है ?"

दू०—पासही तो है नाके पर।

"उसी को कहने से काम होगा।"

दू०—अच्छा तुम जाव मेरा नाम लेकर जमादार को बुला लाओ।

"अच्छा मैं जाता हूं लेकिन एक बात याद रखो। वह बड़े घात से बोलेगा। बिलकुल पीर नाबालिग होकर बोलेगा। तुम उसकी चालबाजी में भूलना नहीं। समझा?

वह आदमी वहां से चल पड़ा। थोड़ी देर पर जमादार के साथ लौट आया। इनाम के लोभ में जमादार भी फूले नही समाते थे। उन्हों ने भी समझा कि हजार पर हाथ मारेंगे। दरजा भी बढ़ेगा।

जब जमादार होली में पहुंचे। दूकानदार के साथ उस लौंडे ने एकान्त में सलाह की। अब तीनों का गुट्ट हो गया।

जमादार उस कमरे में गये जिस में पियक्कड़ मस्ती कर रहे थे। इसी समय सयोग से खड़कू दरवाजे पर आ गया। वह ज्योंही लौंडे को देखा उसे यह कहता हुआ दौड़ा—"अरे! सांप का पोवा"

जो लोग ध्यान से यह मामला पढ़ रहे हैं उन्हों ने जरूर पहचाना होगा कि यह सांप का पोवा वही चमड़ी था। जिसको लंगट्ट ने खाना लाने को भेजा था। वह जब शहर में आया। जानसेनगज में होली के सामने पहुंचते पर उसने पियक्कड़ों की धमा चौकड़ी सुनी और कुछ देर खड़े होकर मन में सोचा—"इन बदमाशों को बड़ी खुशी हो रही है। मानो किला फतह करने की खुशी में ढलोअल कर रहे हैं। यहां इन बदमाशों को इसी के फन्दे में फसा देने का अच्छा अवसर है।

यही सोच कर वह दूकानदार के सामने इशारेबाजी करने गया था। उसके बाद की सब बातें तो ऊपर लिखी जा चुकी हैं।

अब दमड़ी को पकड़ने के लिये खडकू झपटा तभी जमादार ने उसे गिरफ्तार करके हथकड़ी भर दी ?

दमड़ी ने कहा—"भीतर एक और है उसके नाम भी वारण्ट है उसको भी गिरफ्तार करो जमादार साहब।" अब जमादार खडकू को दूकानवाले के हवाले करके गाड़ीवान को पकड़ने चला। वह घबराकर खिड़की की ओर भागा।

"अब कहां जायगा बच्चा ? बन का गीदड़ जायगा किधर" बस यही कहता हुआ उसे भी पकड़लिया जब जमादार बाहर आये खडकू ने कहा—"मुझे किस कसूर में गिरफ्तार करते हो जमादार ? "

लेकिन सचमुच खडकू के अपराधों की गिनती नहीं है वह कई बार जेल जा चुका है। उस दांगी के कसूर की गिनती कौन करे तौ भी डॉट के साथ उसने जमादार से कैफियत माँगी। लेकिन बैलान कूदा कूदी गोद की मसल हुई। दूकानदार झट बोल उठा— 'यह देखो इश्तहार तुमको पकड़ने के वास्ते एक हजार का इनाम है।

अब तो खडकू जोर से खड़कने लगा बोला—' थपार में। आँख तो है नहीं पकड़ने चले हो तुम लोग। मै लॅगट्ट नहीं हूं अगर चाहो तो मैं लॅगट्ट का पता दे सकता हूं।"

द०—मैंने तो कहा था न कि वह झट इन्कार करेगा।

ख० ओ हो ! समझ गया साप का पोवा ! यह सब तेरी ही चालाकी है क्यों ?

द०—हां ! हां ! बाबा तुमको कौन नहीं जानता ?

ख०—तू तो जानता है कि में लॅगट्ट नहीं हूं फिर क्यों इतना झूट का जहाज तैयार कर रहा है ?

द०—लॅगट्ट नहीं तो कौन हो तुम ? अब लगे हवा देने हमी को

ख०—अच्छा जमादार साहब ! मैं चलता हू लेकिन इस लौंडे को भी थाने में ले चलो आप।

जमा०—क्यों उसका क्या कसूर है ?

ख०—वह झूठ बोलता है जमादार जी ! मैं साधू तो नहीं हूँ मैं बिलकुल बेगुनाह भी अपने को नही कहता लेकिन मैं लगट्ट नही हूँ।

जमा०—यह जवाब और सुबूत तुम इजलास पर देना।

ख०—अच्छा आप इस लौंडे को भी जरूर ले चलें।

जमा०—अच्छा उसको भी ले चलेंगे।

द०—देखिये जमादारजी ! हमने पकडा दिया है इसी से अदावत करके बातें बनाता है आप इसके फन्दे में मत आइये। एक बात और है यह बडा दतकट्हा है। बात पाते ही काटेगा। देखिये दाँत पीसता है अब !

जमा०—इसमें फन्द फरेब कुछ नहीं तुमको गवाही तो देना ही होगी कि यही लॅगट्ट है !

'वह तो महल्ले में जाने पर सब लोग पहचान लेंगे। खबरदारी से रहना वह काटे नही।" यही कहकर दमडी बडी तेजी से भाग निकला। जमादार को उस पर विश्वास हो गया था और दमडी ने अपना पीछा करने का अवसर भी नही दिया। इस कारण अब खडकू को ही लेकर थाने को चले

उ दमडी खाना पानी लेकर अपने बाबा के पास पहुँचा। बाबा बहुत देर होने से भूख के मारे छटपटा रहे थे।

छत्तीसवां बयान



सङ्गीन काम।

दमड़ी का लाया हुआ आहार पाकर लँगड़ू कुछ ठीक हुआ। दिन भर उसने वहीं काट डाला। जब रात हुई। लँगड़ू का मुँह गम्भीर हो आया। मनमें सोचने लगा-"बेचारे प्रताप की क्या हालत होगी। क्या देव स्वभाव का सच्चा बेगुनाह प्रताप शैतानों के चक्र मे पडकर फाँसी चढ़ेगा? ओफ! क्या धर्म्म की दुहाई दुनियां से उठ गयी। या भगवान क्या करोगे? मैंने इतनी कोशिश की उस बेचारे बेगुनाह को बचाने के वास्ते इतना किया एक दिन सूत मिलने पर भी नहीं मिला। उसको पाते पाते मैं वञ्चित रहा न जाने कहां गायब हो गयी। अब तो समय नहीं रह गया। आज की रात और कल्ह का दिन इतना ही रहा है। एक दिन और दो रात के बाद ही बेचारे को फाँसी हो जायगी। अब तो बिलकुल नाव किनारे आ गयी है।"

यही कह कर लँगड़ू झट उठे और वेष बदल कर बाहर हुए। देखा तो आस्मान में बादल हैं। जान पडता है थोडी ही देर में बरसने लगेंगे। रह रह कर बादलों में मिली हुई बिजली चमक उठती है। उसी रोशनी में लँगड़ू का चेहरा देखकर दमड़ी चौंक गया। लँगड़ू ने आस्मान की ओर देखा। आप ही आप कहा-"ओ हो! अब तो पानी बरसने की पूरी तैयारी है। अच्छी बात है। पानी बरसने की इस मौके पर बड़ी जरूरत है।

इस पानी बूँदी में इस दुर्दिन में काम कर सकोगे हे मन! तुम से बनेगा?

हाँ! हाँ! जरूर बनेगा।

यही कहता हुआ लँगट्टू टहलने लगा इसी समय दमडी को सामने देखकर बोला ' देखो बच्चा आज एक सङ्गीन काम करना होगा॥

द० उसके वास्ते तो मैं सदा आप के प्रसाद से तैयार हूँ। लेकिन पलीता दाँतों काटकर जो सङ्गीन काम किया है अफसोस आप को उसका पता नही लगने पाया।

लँ०-नहीं बेटा! मुझे उसका पता तो लगा है जरूर! तुमने जो बहादुरी की है उसको कहीं और किये होते तो तुम को सोने का तमगा मिलता और किसी राजा महाराजा का होने से जागीरें मिल गयी होतीं लेकिन तुम ने तो एक गरीब रमता राम की जान बचाई है जो खाली आशीर्वाद के सिवाय और कुछ भी अदा नही कर सकता हमको इस मौके पर इसी से इस बडी सन्तोष करना होगा बेटा।

द०—नही बाबा जी! आप ऐसी बात मत कहिये हमारे घर वंश में तो कोई रोने वाला भी नहीं है। आपही मेरे मा बाप हैं। आपने जो शाबास कहके मेरी इतनी पीठ ठोंकी इतनेही से मेरा पेट भर गया। अब मुझे कुछ, नही चाहिये। मेरे लिये तमगा जागीर सब मिट्टी है।

शाबाश! बेटा शाबाश! आज तुमने हमको दिखा दिया कि दूसरे के उपकार के लिये आदमी कैसे अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है। अब मैं अपने काम में वैसाही हे डॅटा रहूँगा। अब

या तो प्रताप को बचाऊँगा नही तो अपनी ही आग में अपने तईं जलाकर भस्म कर डालूँगा बस और कुछ नहीं बेटारख्रा! चला था मेरे पीछे आज तोको एक सङ्गीन काम करना है।"

द०—लेकिन बाबा मेरी बात मानें तो मैं एक और निवेदन करूँ।

लँ०—हाँ बेटा! कहो!

द०—मैं तो एक गरीब लडका हूं। गरीब की बात और कढ़ी का पकवान बासी होने पर ही मीठी लगती है। तौ भी जब आप निडर करते हैं तब पिता के सामने बच्चेको अपने मन की बात कह डालना अनुचित नहीं है। मेरी राय है कि आज आप विश्राम कीजिये। अभी आप बहुत कमजोर हैं।

लँ०-हां बेटा मै कमजोर जरूरहूँ लेकिन एक ऐसी बात मेरे मन में आयी है जिससे मुझे बडा बल हो आया है। अब देर करने का समय नही है। जरा सी देर में एक बेगुनाह की जान जायगी। इसी से बेटा अब आराम या विश्राम का अवसर नही रहा।

द०-लेकिन आँधी पानी तो बडे जोर का आता है।

लँ०-अच्छी बात है आने दो मुझे एक चीज चाहिये।

द०—क्या चीज?

लँ०-एक गैता और एक कुदाली।

"लीजिये गैता और कुदाली" यही कहकर दोनों दमडी ने मुहैय्या कर दिया और पूछा क्या करेंगे?"

लँ० कब्र खोदूंगा।

द०-मुझे कब्र में देंगे क्या?

लँ०-ना! ना!

द०-अपने वास्ते ?

ल०-ना

द०-तब किस के वास्ते कब्र खोदेंगे ?

ल०-हमको एक लाश की जरूरत है।

द०-तो कब्र में से निकालना है?

ल०-हां।

द०-चोट लगने से मगज तो खराब नहीं हुआ ?

ल०—नही ! नहीं ! मैं काम करने चलता हूं मगज खराब नहीं हुआ है।"

द०-हां ! हां ! समझगया इसी से तो मैंने आपको गैता ला दिया है।"

अब दोनों अपने काम को रवाना हुए।

सैंतीसवां बयान।

बुढ़िया की लड़की।

अब लगट्टू और दमडी दोनों कब्रिस्तान म पहुँचे। वहां दमडी का कलेजा कांप गया। उसने कहा-"यहां आप भूतों में आये हो बावा ?"

लॅ०—तो इस में क्या हरज है वेटा ?

द०—मुझे तो बडा डर लगता है।

ल—डर काहे का वेटा ! यहां तो सब मुर्दे पड़े हैं जो जहान से विदा हो चुके। जिनकी यहां मिट्टी देह पडी है उन

से डर काहे का। मच्छड़ चीटी तो तुम्हारी देह में तकलीफ भी पहुंच सकते हैं लेकिन इन मुर्दों से क्या हो सकता है?

द०—काहे! अगर इनमें से कोई निकल कर खड़ा होजाय तब?

लॅं०—तो क्या तुम भूत प्रेत पर विश्वास करते हो बच्चा?

द०—मुझे तो आपही पर विश्वास है बाबा! आप जो कहें सो मैं करूं। अरे! कौन मेरी देह पर हाथ किसने रखा।

इस समय दमड़ी के रोएँ खड़े हो गये। लगट्ट ने कहा—"ना बेटा! तुम को आगे जाना नहीं होगा। यहीं खड़ा रह।"

लेकिन दमड़ी ने नहीं माना न उसको तसल्ली हुई। साथ ही साथ चला। थोड़ी ही देर में खडकू ने एक कब्र खोदी और कुछ हड्डी गुड्डी एक बोरे में भर कर लाया। जब कब्रिस्तान से दोनों बाहर निकले दमड़ी को कुछ साहस हुआ। उसने बोरा गुरु के हाथ से लेकर अपने कपार पर रखा। और दोनों अपनी जगह पर जा पहुँचे। लेटते ही उनको नींद आ गयी।

जब आँखें खुली तब दिन बहुत चढ आया था। दोपहर को लॅगट्ट ने दमड़ी से कहा—'जेलखाने से खबर लाना होगा बच्चा।"

"बहुत अच्छा जाता हूँ।" कह कर दमड़ी वहाँ से रवाना हो गया।

जाते जाते दमड़ी ने देखा एक जगह एक बुढ़िया सड़क की पटरी पर जड़ी बूटी रखे बेच रही है थोड़ी देर पर एक लड़की उसके पास पहुँची। उसको देखते ही बुढ़िया बोली—"अरे तू, कहाँ फिरती है रे?"

लड़की बोली - "मो से कहे रही कि यहाँ बैठी है कि मैं सपना देखती हूँ ?"

बु०—हुआ ! हुआ ! बन्द कर अपना मुह ! हमारा मांस खाने गयी थीं मु करिखहो ।

ल०—ऊँ ! ऊँ ! हमसे चला नही जायगा । अमा ! रेल से चली चलो !

बु०- चला नही जायगा तो खा जायगा । बढियां बढ़ियां माल गटकने को तो बडी तेज चलने की बेर नाकी देती है । हरहँगा को परुआ पगुरे को रथ ? अब तक की- कभी घर पहुँचगयी होती । दूकाने ढूंढ रही हैं जानो ।

ल०—ना अम्मा ! मैं दूकान नही जेल में गयी थी ।

अब बुढिया दांत पीसकर बोली—"अरे तू जेल का करने गयी रही रे ! तोको ओही जेल में जाना होगा देखती हूँ । जेल में का मरने गयी रही ?"

लु०—कल्ह फासी होगी न ?

बु०—फांसी होगी तो तोको का ?

ल०—जौन फांसी पडेगा उसी को देखने गयी रहीअम्मा !

बु०—अरे चल चल रे मु करिखही चल नही एक हाड़ एक जगह नहीं रक्खूंगी । जो एही बाबू जाते हैं इनसे पूछ गाडी कब आवेगी ।

बुढिया की बात बाबू ने सुनी एक मर्द के पास आकर पूछने लगे-"केशव बाबू किस गाडी से जाने वाले हैं ?"

"शहर से गाडी आवेगी कब ?"

बा०—पाच घज के पचास मिनट पर ।

अब केशव ने लडकी से कहा—"सुन लिया न ? जाव अपनी मा से कह दो ।"

ल०—अच्छा शहर जाने के वास्ते गाडी कब आवेगी ?

बुढिया ने सुन लिया था । बोली—"चल चल पैदल चल चलें अभी बहुत देर है ।

ल०—देर कैसे अब तो घडी भर भी नहीं है ।

बु०—अच्छा तो गाडी ही पर चलना मैं भी थक गयी हूँ । चलते चलते पांव में फोडे पड गये हैं । इहां दो रुपये का सौदा भी तो नहीं बिका ।

बुढिया की अब बराबर नजर प्लाटफार्म पर ही रही गाडी आयी और हर हराती हुई निकल गयी तब बोली-"अरे घडी भर तो बीत गयी । गाडी नहीं आयी । इसी समय सीटी बजी । बुढिया बोली-"हाँ आयी है गाडी ।"

"क्यों मामला क्या है तू बकती क्या है ?"

बु०—बकती नहीं शहर से जो गाडी आने वाली है उसी में पूना आवेगी ।

"अरे दोनों गाडी तो साथ ही आ गयी । इसी गाडी में केशव बाबू शहर जायगे ।"

बुढिया ने देखा कि उसकी बातें वह केशव कान दे कर घूरता और सुनता है लडकी को डॉट कर बोली—"अच्छा चल घरे बिपतलोनी ! तो मालिक से कह के खूब घर दी गुड पिलाऊगी ।"

दोनोंओर से गाडियां आकर अपडाउन प्लाटफार्म पर खडी हुई थीं । मुसाफिर चढते उतरते थे । केशव बाबू भी एक और ओर खडे रहे । किसी पर सवार नहीं हुए तब

लडकी दौड कर बुढिया से बोली—"काठ की तरह खड़ा है अब चढ़ता उतरता कुछ नहीं।"

बु०—अच्छा जाने दे। अवकी बार काल आया है। अब हमारे मामले में पडा है तब मरे बिना नही रहता चल।

इसी समय दो भले आदमी एक पुत्र वाली स्त्री को गार्ड। से उतारने लगे। केशव उसकी ओर पीठ करके कुछ सोच रहा था बडी आफत थी अगर केशव एक बार भी पीछे फिर कर देखे तो पहचान लेगा। बड़े सङ्कट का समय आया।

बुढिया ने लडकी के कान में धीरे धीरे कुछ कहा। लडकी पूना के पास जाकर बोली—"आगे जाइये वह जड़ी बूटी वाली आपकी उपकारिणी है।"

पूना ने आवाज पहचान ली। उसी समय वह जडी बूटी वाली के पास गयी। वह इशारे से और पास बुलाने लगी—जब और पास गयी तब तक गाड़ी खुल चुकी थी। दोनों गाडियां चलने लगीं। लेकिन जो पीछे खुली उसी पर केशव कूद कर बडी तेजी से चढ गया।

अब पूना ने अपने साथियों को आगे चलने का इशारा करके कहा—"आप लोग आगे बढें मुझे इस बुढ़िया से कुछ बातें करना है।"

बुढ़िया बोली—"अच्छा हुआ जो तुम आगयी कहो भरोसा तो है?"

"आशा तो मैंने नही छोडी माई जब तक सांस तब तक आस पर जीती हू। देखूं भगवान को क्या करना है।"

बु०—आज रात के प्रताप की रिहाई होगी।

इतना सुनते ही पूना मानो आसमान से गिरी बुढ़िया का पाँव पकड़ कर बोली—"आप कौन हैं ?"

"अरे तू लँगटू को नहीं पहचानती बेटी ?"

पू०—ओहो ! मैंने बिलकुल नहीं पहचाना बाबा ! तुम जो कहते हो उस पर कभी कभी मुझे बड़ा सन्देह होता है बाबा ! लेकिन कल्ह जो कुछ देखा है उससे सब सन्देह जाता रहा।

"क्या देखा है बेटी ?"

पू०—जिसके खून होने के कसूर में उनको फांसी होगी उसीको जीता जागता देखा है

'कहा देखा है ?"

पू०—मैंने एक गाडी में सवार होकर उसको जाते देखा है।

'हां बेटी ! ठीक बात है। अब तो तुम को तसल्ली हो गयी ?"

पू०—इस बात की तो तसल्ली हो गयी कि वह जीती है। अच्छा हम और तुम दोनों इजलास पर हलफ लेकर गवाही दें कि केशनी जीती है तब भी फांसी नहीं रुकेगी ?

"ना"

पू०—काहे बाबा ?

"अब तो कल्ह सवेरेही फांसी हो जायगी। अब समय इन बातों के लिये नही है। इसके सिवाय तुम्हारी बातों पर कुछ विश्वास नहीं होगा। हां एक उपाय है। अगर हम लोग कल सवेरे केशिनी को किसी तरह हाजिर कर दें तो काम बन सकता है। लेकिन वह बात होती नहीं दिखाई देती तो भी प्रताप को बचाना ही होगा। चाहे जैसे हो।'

पू०— तो मुझे क्या करने को कहते हो बाबा !

बुढ़िया ने ऐसा भाव देखाया। मानो उसके हाथमें कोई डबी दवासे भरी दे रही है। देकर बहुत धीरे बोली—"इसी वक्त इसमें की चिट्ठी प्रताप के पास पहुचा दो देर हरगिज न होने पावे। और यह जाहिर होना चाहिये कि रात के वहां पहरे पर कौन रहेगा। के आदमी पहरे पर रहते हैं। और जो कुछ पता लगे सो हमको आकर खबर देना।

इतना ही कह कर बुढिया उठी और अपनी लडकी के साथ एक ओर चली गयी। पूना वहां से चल कर अपने साथियों से जा मिली।

अढतीसवां बयान।

लॅगट्ट का वारिस।

नैनी के सेंट्रलजेल में सन्ध्या के लोगों की बडी भीड हुई। हुक्म ले लेकर लोग भीतर जाने लगे। बाहर दालमोट, सेव, चटनी आदि बेचने वालों की आवाजें लग रही हैं। एक बूढा लम्बी सफेद दाढी लिये टहल रहा है।

इसी समय एक अच्छी पोशाक पहने जवान ने सामने आकर बूढ़े को बड़े आदर से प्रणाम किया। बूढ़े ने पूछा "भेट हुई उनसे ?"

"हां"

बू०—कहां ?

"रास्ते में।"

बू०—साथ में कोई और था।

"हां वही मूला बीवी थी।"

बू०—बीवी रही या साहब ?

"बीवी रही। बीबी ?"

बू०—तो वह औजार सब लाये हो ?

"जी हां।"

बू०—कहां है दो ?

अब उस जवान ने दो पिस्तोल और एक भुजाली दी उन्होंने अपने कपडे में अच्छी तरह छिपा लिया जवान ने पूछा— 'इन सब का काम पडेगा !"

बू०—काम तो नहीं पडेगा लेकिन खबरदारी तो अच्छी है न"

बू०—वह शीशी कहा है ?

"वह भी तो लाया हूं। आप का उपदेश और कथा सुनते सुनते अगर नींद नहीं आवे तो यह बोतल उसकी अचूक दवा है।

डाढी वाले की सूरत देखकर लोग उसे परमहंस का रूप समझते थे। गले में माला, लिलार पर लम्बा तिलक, शरीर में पीताम्बर और पॉव में खडाऊ देख कर सब को श्रद्धा होती थी लेकिन लडके के हाथ से जब बोतल लिया तब बहुतों के मन म सन्देह हुआ।

परमहंस ने कहा—"देखो बेटा। आज तुम को यहाँ

आधी रात तक रहना होगा। और जो जो मैं ने कहा है उस में चूकना नहीं खबरदार।"

यही कह कर वह बूढा साधू वहाँ से चला गया। लेकिन थोड़ेही देर में लौट आकर फिर बोला-"देखो बच्चा! आज हमारी तुम्हारी अन्त की भेट है।"

"क्यों काल बुला लिया! मौत ने टाँग पकड़ ली।"

बू०—नहीं बेटा! हसी नहीं मैं ठीक कहता हू। जो कुछ तुम को समझा दिया है। पक्का रहना उस में।

"कुछ परवाह नहीं! मेरा दुनियां में कोई है नहीं बाबा। आपही मेरे सब कुछ है। आप के मरने पर मैं जीता रहूगा। ऐसा आप मत समझियेगा। आप की ही रथी पर मैं धरना देकर न मरूं तो मेरा नाम दमडी नहीं।

बू०—छि. छि बेटा! ऐसी बात नहीं करना मैं खूब जानता हू कि तुम में साहस है। तुम इस शहर का भिखारी होने पर भी तूही लॅगट्ट का उत्तराधिकारी है। तू भिखमगा आदमी होकर लाखों का मालिक है।

इतना सुनतेही दमड़ी हसने लगा। बूढे ने कहा-"क्यों बेटा! हसता क्यों है, मेरी बात पर विश्वास नहीं होता?"

द०—नहीं मेरा आप की बात पर विश्वास नहीं यह बात तो इस जिन्दगी में होने की नहीं है। लेकिन दमडी को आप लखपती कहते हैं। इसी से मुझे हंसी आती है। भला जो दमडी सडक का भिखारी है आप की कृपा नहीं होने से जो रास्ते पर कुत्ते की तरह फिरा करता वह लखपती होगा यह हंसने की बात नहीं है क्या?

बू०—अच्छा अगर मैं आज मरा तो देखना दमडी लख पती होता है या नहीं ?

द०—अच्छा बाबा ! एक बात बतलाइये आपके पास इतना रुपया है तब आप इस तरह खाने बदोस की तरह क्यों फिरा करते हैं ?

"वह बात किसी से कहने की नहीं है बेटा।" यही कह कर बूढ़े ने दमडी को छाती से लगाया और "खबरदार रहो" कहकर चलता हुआ।

उन्तालिसवां बयान



जेल से बाहर।

अब हमारे पाठक बूढे को पहचान गये होंगे, वह लँगड्ड इसी महात्मा के वेष में आगे बढा। चलते चलते एक जगह जाकर देखा तो जासूसिनी मूला पूना से बातें कर रही है मूला बोली—"देखना खूब सम्हाल कर घबराना नहीं हिम्मत नहीं खोना। खूब छाती पोढ करके काम करना होगा तुम्हारे ही ऊपर बड़ा भरोसा है।"

पू०—लेकिन कुछ गोलमाल हो जाय तब ?

"गोल माल कुछ नहीं होगा। लँगड्ड की सलाह पर चलने से ही विजय है वह नीति में जैसा चाणक्य है। काम करने में भी उसको धनजय समझना।"

"तब मैं क्यों पीछे हटूँगी ?"

मू०—प्रताप भी वैसाही वीर है। लेकिन तुम कदराने लगी तब तो नाव किनारे ही बोरदेगी।

पू०—ना ! ना ! अब मैं कादर नहीं हूँगी। इसी समय मूला बोली—"लो आ गये बाबा।"

अब तीनों ने वहाँ बहुत देर तक अकेले में सलाह की उधर बारह का घंटा बजा। अब जेल के दरवाजे पर पहुँच कर उन लोगों ने भीतर जाने की परवानगी मांगी। जेलर ने झुंझला कर पूछा—"कौन है भाई इतनी रात को बखेड़ा करने आये तुम लोग ?"

मू०—नहीं साहब हम लोग बखेड़ा करने नहीं आये। यह हमारे पुरोहित है। जिन्दगी के जो कुछ घंटे प्रताप के के बाकी हैं। उसमें यह उनको अन्तिम उपदेश देंगे।

"हुक्म लाये हो ?"

मू०—हां साहब बिना हुक्म के कैसे आवेंगे लीजिये लीजिये हुक्म नामा।

अब जेलर उनतीनों को लेकर आफ़िस में गये। लेकिन वहाँ बूढ़े का चेहरा देखकर बड़े अकचकाये वह रूप पहचाना हुआ है लेकिन कहाँ देखा है इसकी याद नहीं आयी। उनसे बोले—"मैंने आपको कहाँ देखा है यही ख्याल नहीं आता।

बूढा वेषधारी लंगटू ने कहा—"देखा होगा"

अब जेलर ने उससे तो कुछ नहीं कहा। लेकिन उन दोनों स्त्रियों को समझाया—"आप लोग अपना नकली रूप उतार असली चेहरा दिखाइये तो मैं आगे कारवाई करूँ।"

जब उन दोनों ने अपने मुह पर से नकली चेहरा उतार दिया तब मूला को पहचान कर जेलर बोले -"ओ हो! मुझे नहीं मालम था कि आप असामी के मित्र हैं।"

मू०—मैं किसका किसका मित्र हूँ यह तो आप को मालूम है। क्योंकि मेरा पेशा आप जानते हैं।

जे०—हाँ यह बात तो मुझे मालूम है।

मू०—यह भी आप को खबर हो गयी होगी असामी का भला चाहनेवालों को विश्वास हो गया है कि जिसके खूनके अपराध में यह पकडा गया है वह मरी नही जीती जागती है।

जे०—हा यह मैं सुन तो चुका हूँ लेकिन यह उन लोगों की भूल;है।

" अभी इस बात पर बहस करना बेकार है क्योंकि आप को आगे चलकर मालूम होजाता कि इसमें भूल उनकी नहीं आप ही की है। और मैं अपने आने का कारण बतलाना चाहती हूँ। प्रताप के वारिसों ने मुझे उस स्त्री को ढूँढ कर निकालने के लिये तैनात किया है।

जे०—यह कब से मूला बीबी?

मू०—जिस वक्त आपने मुझे पूना की तलाशी लेने कहा था उसी दिन से?

"जी नहीं उससे पहले से नहीं।"

अब जेलर ने पूना से पूछा—"आप क्या रात भर असामी के साथ रहेंगी?"

पू०—हाँ जब तक उनको बाहर नही ले जाया जायगा तब तक।

जे०—लेकिन एक बात कह देना चाहता हूँ तीन बजे केशव बाबू आने वाले हैं।

पू०—वह क्या करने आवेंगे?

जे०—यह हमको मालूम नहीं है लेकिन उस समय शायद आप वहाँ रहना पसद नही करेंगी इसी से मैंने कह दिया है।

अब पूना बिगड कर बोली "तो मैं उससे पहले ही चली जाऊँगी।"

"अच्छी बात है। आइये।" कह कर जेलर ने चाभियों का गुच्छा उठाया। उनके चलने पर मूला को आफ़िस ही में बैठे देखकर पूना ने पूछा—"आप नहीं चलोगी?"

"नहीं मुझ से तो उनकी कुछ जान पहचान भी नहीं है और आपकी उनकी तो मुलाकात होगी उस समय मैं वहाँ रहना भी नही चाहती अगर जरूरत हो तो मुझे बुला लीजियेगा।"

इतना जब मूला बीबी ने कहा तब जेलर बूढ़े और पूना को ही लेकर चले गये। मूला आफिस ही में रहगयी।

अब उसके चेहरे से स्त्री का भाव दूर हुआ उसकी जगह पर खूब साहसी दृढ सङ्कल्प पुरुष का मुह दिखाई दिया उसकी आँखों से तेज की ज्योति निकलने लगी।

उन लोगों ने कैदी की कोठरी में पहुँच कर देखा भीतर बाहर दोनों जगह दो पहरे दार यमदूत की तरह खड़े हैं। पूना भीतर जाने पर अधीर हो पडी। लॅगट्टू ने उसका भाव समझ लिया और पानी जो रखा था वही गिलास में ढाल कर उसको पीने के वास्ते दिया।

पूना पानी पीने लगी लेकिन बडा कडुआ लगा। ताप ने

देखा कि पूना को मूर्च्छा आया चाहती है झट आलिङ्गन करके थाम्ह लिया कहा—"क्यों प्यारी ! यह तुम करती क्या हो ?"

अब पूना होश में आ गयी। पहरेवाला यह दशा देखकर बाहर गया। उसने बाहर से दरवाजा बन्द कर लिया। अब भीतर बूढे पुरोहित वेद मत्र पढने लगे। उनका सिंहनाद और उपदेश सुन कर पहरे वाले भी मुग्ध हो रहे। सब कान टेकर सुनने लगे। इसी समय खट खट की आवाज आयी। पुरोहित बाबा ने कहा—"ओफ बड़ा गरम है। क्यों सिपाही जरा किवाड तो खोलो। गरम के मारे जान निकलती है भाई।"

जब पहरेदार ने दरवाजा खोला बाहर जोडीदार को बोला—"जोडीदार बाहर का दरवाजा खोलना। बाबाजी हवा खाने को बरांडे में जायगे बडी गर्मी है।"

यही कह कर वह पहरेदार भीतर गया। बूढा ढलता पडता बाहरी पहरेदार पर जा गिरा उस के पास क्लोरोफार्म भरा रूमाल था वही उस की नाक पर रख कर उसे बेहोश कर दिया। प्रताप ने भी अपने हाथों भीतरी पहरेदार की वही दशा कर दी।

अब लंगडू ने दोनों बेहोश सिपाहियों का मुह कसकर बाँध दिया और दोनों को हथकडी कसदी।

इसी समय मूला ने आकर कहा—"अब देर मत करो सब दरवाजे खुल गये हैं। निकलो जल्दी।"

अब चारों उसी दम जेल के बाहर होगये। प्रताप ने बहुत दिनों के बाद बाहर की साफ हवा पाकर पूरी तसल्ली

हासिल की। सब के सब बाहर निकल गये कही कुछ खटका या किसी तरह की रुकावट नही पडी।

"खडे नहीं होना। बराबर पॉव उठाते चलो" कहकर लॅगट्ट ने प्रताप का हाथ पकड कर घसीटा प्रताप कुछ कहने को मुह खोलते थे कि लॅगट्ट ने कहा—"यहाँ बात नहीं करना"

इसी समय पीछे से किसी की आहट मिली। लॅगट्ट ने कहा—'बस बराबर सीधे चले जाव। मैदान में एक रास्ता मिलेगा। उसी को पकडे हुए आगे बढ़ते जाना। जहाँ मेंड मिले वहीं खडा होना मैं वहीं मिलूंगा।

बस प्रताप तेजी से चलते गये लेकिन लॅगट्ट यह देखने के लिये खडे रहे कि कौन आता है।

जब वह आदमी पास आया। लँगट्ट हाथ में भुजाली सम्हाल कर एक पेड की आड में छिप गया। वह आदमी पास से निकल गया। तब लॅगट्ट ने देखा कि वह आदमी पहचाना हुआ नही है। अब लॅगट्ट ने कहा—"अच्छा हुआ! अगर इस घडी केशव आता तो बिना खून खराबी हुए नही रहती। आज मैं उसको हरगिज नहीं छोडता।

जब वह आदमी दूर चला गया। तब लॅगट्ट प्रताप की टोह में झटपट वहां से रवाना हुआ।

जहा पहले बतलाया था वहाँ मोड पर पहुच कर देखा तो कोई नही है। तब उसने मुह से सीटी बजायी। जवाब में धीरे से कुत्ते की सी आवाज आयी। तब लँगट्ट को तसल्ली हो गई। थोडी देर में एमडी सामने आगया।

लॅगट्ट ने पूछा—"यहाँ किसी को देखा है बच्चा'?

द०—हां देखा है

लँ—किसको देखा है ?

द०—उन्हीं प्रताप को देखा है और किस को देखता।

लँ—वह कहाँ है।

द०—आगे हैं

लँ—चलो वहीं मुझे ले चलो।

"आइये" कहकर दमड़ी आगे बढ़ा। लगट्ट पीछे पीछे चलते हुए। चलते चलते जाकर लगट्ट बाबा देखते हैं तो एक जगह पत्थर की चट्टान है उसी पर प्रताप बैठे हैं। अब बूढ़े को देख कर प्रताप ने कहा—"अच्छा आप अब मुझे बतलाइये। आप कौन हैं ?"

लँ०—क्यों। आप मुझे पहचानते नहीं हैं ?

प्र०—मैंने नहीं पहचाना। लँगट्ट बाबा ने जो काम करने को कहा था। वही काम आपने किया है।

लँ—यही तो कहता हूं कि तुम लँगट्ट को पहचानते नहीं हो?

प्र०—ओफ! आपही लँगट्ट बाबा हैं ?

लँ०—अब इस घड़ी बातें करने का अवसर नहीं है। मौका पाने पर आप को सब बातें मैं कहूंगा। अभी आप की आफत टली नहीं है यू डिड नाट पास you did not pass danrer yet डेंजर यट। तुम इसी दम किनारे चले जाव और सूरज उगने से पहले ही बहुत दूर पहुच जाव।

"बहुत अच्छा।" कहकर प्रताप तेजी से रवाना हो गये। उधर बन्दूकों के फैर पर फैर होने लगे।

अब वह सब सुनकर लगट्ट ने कहा—"वहाँ मालूम हो गया। अब बिगुल बजता है। खून खराबी की मुहूर्त आगयी।"

चालीसवां बयान

कन्धे पर हाथ।



उधर जेलर ने जब आफिस में पहुच कर देखा। मूला गाल पर हाथ रखे कुछ सोच रही थी। पूछने लगे—"यह पुरोहित है कौन?"

"मुझे मालुम नही शहर से लोग लाये हैं कहते हैं उनके घराने के गुरु हैं। अयोध्या से आये हैं।"

जे०—अच्छा आप से इस मामले का क्या लगाव है सो मेरी समझ में नहीं आता।

"मैंने तो आपको सब कह दिया।"

जे०—अच्छी बात है। तो क्या आपको याद है कि मैं ने आप को पूना के कपडे के भीतर कोई कागज है या नहीं इसकी तलाशी लेने को कहा था?

"हां! अच्छी तरह याद है।"

जे०—लेकिन वह कागज पूना के पास था और आपने जान बूझ कर उसे छोड़ दिया। वह कागज असामी के हाथ में पहुच गया था।

"अगर आप को ऐसा विश्वास है तब तो उसे हटाने का हमारे पास कोई उपाय नही है।"

जे०—आप को सरकार से तनख्वाह मिलती है न?

"जी हां।"

जे०—मैं समझता हू। आपने अपनी ड्युटी पूरी नहीं की उस दिन।

"आप को जो समझ में आवे सो कीजिये मेरी समझ में आप का मग़ज़ खराब हो गया है।"

जे०—सो हो सकता है लेकिन मैं इन पुरोहित का पूरा नाम पता लिये बिना तो जाने नहीं दूंगा। मुझे सन्देह हो रहा है।

"आज तो आपकी एँडी से चोटी तक सन्देह ही सन्देह भरा है।"

जे०—हां लेकिन इसका असल भेद भी तो सवेरे तक सब को मिल जायगा।

"अच्छा पुरोहित गुरुजी के बारे में क्या सन्देह आप करते हैं?"

जे०—मैं समझता हूं यह मेरे यहाँ असामी था जेल से भाग गया है।

"तो यही सन्देह होता होगा कि यह असामी को लेकर भागेगा?"

जे०—ऐसा उसका करना कुछ अचरज तो नहीं है लेकिन यह काम कह देना जितना सहज है उतना करना सुगम नहीं है।

यही कह कर जेलर कुछ लिखने लगे। मूला कुछ देर चुप रह कर वहाँ से उठ खड़ी हुई। अब जेलर अपना लिखना बन्द करके उन पर नजर डालने लगे।

मूला वहीं आफिस में चेहल कदमी कर रही थी। जेलर बैठे लिख रहे थे। इसी बेखबरी में मूला ने झपट कर उनका गला दबाया और क्लोरोफार्म से तर रूमाल नाक पर रख कर बेहोश कर दिया। उसके बाद जो घटना हुई सो हम पहले कह आये हैं।

मूला और पूना जेल के हाते से बाहर जाकर कुछ दूरी पर खड़ी हुईं। इसी समय एक लौंडे ने वहां पहुंच कर कहा—"कुछ खाने को देगी माई?"

पहचान कर स्त्रियों ने पूछा—"क्यों ठीक है सब?"

द०—हां आगे लादेय गाडी तैयार है। अब झट पट मूला पूना को साथ लेकर चली थोड़ी ही दूर जाने पर उनको गाडी मिली उसी पर सवार हो गयी। मूला ने ही बाग पकडी और बडी सावधानी से हाँकने लगी। सवेरा हो चला गाडी चलती चलती एक अड्डे पर जा रुकी लेकिन वहाँ सब अभी सोये पड़े थे। एक आदमी ने आकर गाड़ी पकडी। दोनों उतर पडीं। मूला ने कहा-"खूब तेजी से चलो अब आदमी चारों ओर हम लोगों को पकडने के लिये छूटे होंगे।"

पू०—तो क्या हम लोगों को गिरफ्तार कर लेंगे?

मू०—हाँ पा लेने पर पकड़ेंगे जरूर। जो काम हम लोगों ने किया है उसके वास्ते कालेपानी की सजा होती है।

पू०—कुछ परवा नही हमारे प्यारे को तो रिहाई मिल गयी। फिर जो होगा उसको भोगने के वास्ते मैं खुशी से तैयार हूँ।

मू०—नही इतना डरने की बात नहीं है। दूसरे की गुप्त जगह हम लोगों ने ढूढ ली तब अपने लिये जगह नहीं मिलेगी? अब हम लोगों को कपडे बदल लेना होगा। इस रास्ते से आगे इधर से यह रास्ता अभी बन्द है इसी पर से चलें।

कुछ दूर चलने पर पूना बोली-"एक आदमी हम लोगों की निगरानी करता है।"

मू०—कैसे मालूम हुआ ?

पू०—वह देखो छिप कर घूर रहा है हम लोगों को।

मू०—घूरने दीजिये। आप उधर ताको मत। चुपचाप चली आओ। चिल्लाना उल्लाना कुछ नहीं।

थोड़ी दूर आगे दोनों स्त्रियाँ चली थीं कि किसी ने पीछे से आकर दोनों के कधे पर दो हाथ रखे।

इकतालिसवाँ बयान



असामी पनछुटी पर।

बन्दूक की आवाज होते ही लँगड़े बाबा प्रताप का हाथ धर कर जबरदस्ती घसीट ले चले। दमड़ी भी उनके पीछे पीछे चला। जब एक सुनसान जङ्गल में पहुंचे तब लँगड़े ने कहा–"अब भी हम लोग बेखटके रिहाई पा सकते हैं। हम लोग कानून से लड़ाई नहीं करते दुश्मन से लड़ रहे हैं। इन बदमाशों ने तुम्हारी जान लेने को चक्र रचा है। पूना को देख कर खून करने का वार कर चुके हैं ये शैतान उसके कमरे में घुस कर क्लोरोफाम से बेहोश कर के अपना चक्र चला चुके थे। अगर मैं उस अवसर पर नहीं पहुंच जाता तो उसकी जान अब तक चली गयी होती।"

प्रताप के मन में जो जेल से निकलने पर कानूनी विषय की चिन्ता से आगा पीछा हो रहा था उसी को ताड़ कर लँगड़े ने यह बातें कहीं। उसको सुनने पर प्रताप को बड़ा क्रोध आया। बोले-'अरे! यह सब बातें तो मुझ से पहले नहीं

कही गयी । अच्छा वह दिन आवेगा जब मैं इन शैतानों
इनकी करनी का फल दूँगा ।

लँ०—वह तो सब हो जायगी तुम घबराव मत बेट
धीरज धरो । मेरी ही बात नहीं और आदमियों ने भी केश
को जीता जागता देखा है ।

इसी समय दमड़ी भी पीछे आहट लेने गया था दौड़
हांफता हुआ आया । बोला—"हम लोगों के पीछे तो आद
लगा है ।

लँ०—सो मैं जानता हूँ ।

द०—अब मैं आप लोगों को डोंगी पर पहुंचा दूं त
सुचित्त होऊंगा । उसी एक ही में बैठकर आप मौके से उ
जाइये फिर जङ्गल में पहुंच कर छिपे रहियेगा ।

ल०—अभी डोंगी है कितने दूर ?

द०—अभी कोस भर है ।

अब वे सब बड़ी तेजी से कदम उठाकर चलते गये ।

थोड़ी देर बाद सीटी की आवाज आयी । लगट्ठ ने कह
'पीछे आने वाले हम लोगों को देख रहे हे ।"

ल०—कैसे मालूम हुआ ?

"देखते नहीं सीटी बज रही है । देखो दमड़ी अ
तुम्हारा काम आया ।"

द०—कुछ परवा नहीं बाब ! मैं तैयार हूं । आप लो
चलें मैं झाडी में छिप कर देखूं कौन हैं सब ! "

अब दमड़ी झाडी में छिप रहा । वे दोनों चले गये । थोड़
देर पीछे तीन आदमी आये । जब झाडी के पास से आ
बढ़े तब दमडी ने उनको अच्छी तरह देखा लेकिन पहचा

नहीं सका। और वह धीरे धीरे उनका गुप्त रूप से पीछा करने लगा।

कुछ दूर आगे जाकर वे तीनों सलाह करने लगे। एक ने कहा —"हम लोग किस रास्ते पर आये हैं। एक आदमी को तो मैंने साफ देखा है।

"अभी तो इनको भागे आधा घंटा भी नहीं हुआ। मैंने जब आफिस में पहुंच कर देखा तो जेलर का हाथ पाँव कसा हुआ था। उसको झट पट खोल कर बाहर आया। उसी दम दो दर्जन आदमी छूटे हैं। चारो ओर तार दौड़ाये गये हैं। तोपों की फैर हुई है। बदमाश गया किधर?"

दमड़ी ने आवाज से पहचाना वह केशव था।

"नहीं—यह बात नहीं जिसके मगज से इतना फरेब निकला है वह ऐसा वैसा आदमी नहीं है। उसने चारों ओर तैयारी किये बिना इसमें हाथ नहीं डाला है। असल बात तो यह है कि लंगटू से हम लोग अट नहीं सकते हैं उसके पास जरूर कोई जिन पिशाच है।"

आवाज से दमड़ी ने पहचाना कि यह वही लच्छन था।

केशव ने पूछा —"तो यह आदमी है कौन।"

लॅ०—कौन जाने भाई कैसे कहा जाय कि कौन है?

के०—लेकिन जिस दिन मैं पूना को गिरफ्तार करने गया। उस दिन उसने मेरा असल नाम लेकर पुकारा था। है यह कोई भेदू आदमी जरूर।

"तो क्या?"कहकर लच्छन ने केशव के कान में कुछ कहा।

के०-मैं भी यही समझता हूं। मुझे बहुत दिनों से सन्देह है कि यह वही है।

ल०-तब तो यह बदला ले रहा है जाने दो जरूर यही बात है।

ल०—तो उसको काबू नहीं कर सकते।

के०—लखपती को कौनसा लोभ देकर काबू किया जायगा।

ल०— हम लोग जो भेद जानते हैं उसको जानने के लिये भी तो वह लाखों दे सकता है।

अब केशव और लच्छन बहुत धीरे कान में मुह लगा कर बातें करने लगे। तीसरा बोल उठा—"अरे यहीं खड़ा होने से तो असामी पकड़ा नहीं जायगा। हम लोग ठीक रास्ते पर आ गये हैं। अगर अभी चलते होते तो उसको पकड़ लेते।"

के०—ठीक कहते हो लच्छन। अच्छा चलो किस रास्ते से चलना होगा?

तीसरा बोला—"वह जरूर शहर की ओर गये होंगे। उसी रास्ते से चलना चाहिये।

के०—हां अच्छी बात है चलो चलें। बस अब तीनों उस रास्ते पर चलने लगे।

कुछ दूर चले जाने पर उस तीसरे ने एक आदमी को सामने देख कर कहा-"अरे शिकार तो यह है देखो! देखो!"

अब तीनों छिप कर चले। इसी समय किसी की चिल्लाहट सुनाई दी। सब चौंक उठे लेकिन लच्छन बोला—"हां ठीक है वेही सब हैं।"

अब लँगटू और प्रताप ने भी उन लोगों को देख लिया। लँगटू ने धीरे से कहा—"वे सब हम लोगों को देख रहे हैं जरूर।"

"कैसे मालूम हुआ। यह जो चिल्लाहट सुनाई दी है उसी से?"

लॅ०—नही यह तो दमडी की आवाज है।

"तो क्या वे सब दमडी को पकड कर तकलीफ दे रहे है ?"

लॅ०—नहीं, वह तो अब शैतानों को भुलाने के लिये यह तरकीब कर रहा है।

इसी समय एक और तरह का शब्द हुआ जिस को सुन कर लंगट्ट ने कहा-'यह पुलीस वाले नही खुद केशव बाबू हैं"

"कैसे मालूम हुआ ?"

लॅ०—इशारे से मैं समझ गया हूं। दमडी इशारे की ही आवाज में बतला रहा है कि केशव दो और आदमियों के साथ है।

"वह दो आदमी कौन पुलीस अहलकार है ?"

लॅ०—नहीं एक उनमें लच्छन है दूसरा उसी का साथी एक गुण्डा है।

"यह लच्छन कौन है ?"

लॅ०—लच्छन केशव का दहना हाथ उससे भी बढ चढकर बदमाश है। तुम्हारे ऊपर जो चक्र चला है वह सब उसी की शैतानी है।

"तो ये सब किस हिम्मत पर हम लोगों को पकडने आये हैं ?"

लॅ०—यह सब भी ऐसे वैसे नही विकट शैतान हैं। और लच्छन तो शैतानों का दादा है।

"अच्छा देखता हूँ न कि कैसे पकडते हैं ये सब हम लोगों को ?" यही कह कर प्रताप ने अपना पिस्तोल सम्हाल लिया।"

लॅ०—मेरी भी यही राय है। उन सभों को भी खबर है कि जान लेने देने का मामला आ पडा है और इसी तैयारी से ये

सब भी आये हैं। तुम्हारे ही मामले की बात नहीं है इनसे हमारा बहुत पहले का खाता खुला हुआ है।

प्र०—तो आप इनको पहले से पहचानते है?

लॅ०—मैं बहुत वर्षों से इनके पीछे हूँ। मुझे ये सब जासूस कहते हैं लेकिन यह खबर नहीं है उनको कि इनका ख्याल सोरहो आने सच्चा है।

प्र०—तो क्या आप सचमुच जासूस हैं?

लॅ०—यह सब बातें छोड़ो। जब काम सिद्ध हो जायगा तब असल बात सुन लेना। इस घडी तो मैं लॅगटू बाबा ही हूँ।

प्र०—अरे यह सब तो पास आ गये बाबा अब खबरदार हो जाना चाहिये।

अब आमने सामने दोनों दल पहुँच गये। केशव बाबू के गुण्डे ने कहा-"यहाँ से तो निशाना बहुत ठीक लगेगा। इनको मारने में कुछ भय नही है। करो फैर अब।'

के०—मैं भी यही चाहता हूँ।

अब लच्छन ने ताक कर पिस्तौल छोड़ा। फैर के साथ ही लँगटू चिल्ला कर गिर गया। साथ ही प्रताप से कहा-'भागो भागो! तुम अपनी जान बचाओ।"

प्र०—आप यहाँ मर रहे हो और मैं भागूँ यह नही हो सकता।

ल०—मेरी बात मानो देर मत करो।

लेकिन प्रताप ने नहीं माना कहा-"ऐसा शैतान मुझे मत समझिये।" और पास बैठ कर पांव पर हाथ फेरने लगा और कहने लगा—"कहाँ लगी है चोट?"

अब पूताप पर ही लच्छन का फैर हुआ। लेकिन पूताप ने लँगटू के पायँते बैठ कर देखना शुरू किया।

इस समय तीनों कोई पचीस फुट के फासले पर आ गये थे। अब लँगटू झट पट उठ खडा हुआ और पिस्तौल ताने हुए कडक कर बोला-"खबरदार आगे बढा कि खोपडी खतम्म !" लेकिन इसके जवाब में फिर पिस्तौल का फैर हुआ। तब लँगटू ने ताक कर अपना पिस्तौल छोडा और लच्छन तडप कर वहीं गिर गया। उसके दोनों साथी सहम कर खडे हो गये।

लँगटू ने कहा- "देखते क्या हो ठोंढु !

लच्छन हमारी तरह नकल नहीं करता चलो जी अब इन बदमाशों की नानी मरेगी।

सचमुच अब वे दोनों लच्छन की सेवा सुश्रूपा में लग गये। और लँगटू प्रताप को लेकर बडी तेजी से चलने लगे।

कई घंटे दौडने पर गङ्गा का किनारा मिला वहाँ डोंगी तैयार थी। उसी पर सवार होकर दोगों आगे बढ़े। थोडी दूर जाने पर लँगटू ने कहा—"अब तुम चले जाव-मजिल पर ये लोग पहुचा देंगे।

प्र०—और आप ?

"मुझे यहां भूत पकडता है। हठ मत करो प्रताप ! मेरा कहना मत टाला करो।"

पृ०—बहुत अच्छा लेकिन पूना कहाँ रही ?

लँ०—पूना के लिये चिन्ता मत करना वह मेरे जिम्मे है।

बस उसी दम लँगटू डोंगी से उतर पडे। अब धार पर पतवार पडने लगी और पनसुही तीर की तरह तेजी से आगे बढ़ी।

गयी। अगर दूसरा होता तो हम लोग गिरफ्तार हो चुके थे न? अब चलो बहन जहाँ तक बने जल्दी चलो।"

चलते चलते जब दोनों आदमी एक मकान के सामने पहुँचे। मूला ने कहा-"यहाँ थोडा आराम कर लो बहन।" यही कह कर वह दरवाजा खट खटाने लगी। एक बुढ़िया किवाड खोल कर बाहर आयी। उससे मूला ने कान में कुछ कहा और आप पूना को लिये हुए ऊपर वाले कमरे में चली गयीं।

कमरा साफ सुथरा था आसन भी बैठने को मौजूद देख कर पूना के मन में सन्देह हुआ कि यह कौन जगह है। यह स्त्री भुला कर किसी खराब मतलब से तो नही ले आयी है।

इसी समय वह बुढिया दोनों के खाने को ले आयी। खा पीकर पूना ने पूछा-"यह मकान क्या आप का है?"

"नहीं मेरा नहीं एक जालिया आदमी का यह मकान है।"

०—अरे बाप रे! कैसे मुझे ठीक समझ में नहीं आया।

मू०—तुमको कुछ सन्देह होता है क्या बहन मुझ पर?

पू०—ना, ना! आप ऐसे परोपकारी पर मुझे सन्देह हरगिज नही हो सकता। लेकिन जो बात मेरी समझ में नहीं आती उसको पूछना तो उचित है न?

मू०—जरूर पूछ लेना चाहिये। बात ऐसी है बहन कि यहाँ जो आदमी रहता था वह नकली नोट बनाया करता था। वेष बदल कर मैंने उसको पकडा था। अब वह जेल में है लेकिन अपना घर द्वार मेरे ही जिम्मे कर गया है।

पू०—तो यहा किस मतलब से आयीं?

* उस नकली नोट वाले का मामला आगे छपेगा।

मृ० यहां किसी तरह का डर नहीं है।

पू०—क्यों ?

"क्योंकि सब लोग जानते हैं यह मकान पुलीस के जिम्मे है। इसने पुलीस ही के नौकर लौंडी पहरेदार की तरह रहा करती हैं। इस वास्ते कोई नहीं आता। और हम भी जब तुमको और प्रताप को बे कसूर समझे हुए हैं तब न यहां लाये हैं नहीं तो किसी अपराधी को यहाँ आने थोड़े दिया जाता है।"

तैंतालिसवाँ बयान

जासूस साँवल सिंह।

उधर सवेरा होते ही शहर भर में प्रताप के जेल से भागने की खबर बिजली की तरह फैल गयी। पायनियर, मार्निङ्ग पोस्ट और इण्डियन यूनियन आदि सब अखबारों में इस घटना का बयान छप गया। हाट बाट, घर घाट युनसार सब में यही चरचा होने लगी कि फाँसी से बचने के लिये जूनी प्रताप जेल से भाग गया। जब उसने किसी तरह से कुछ उपाय नहीं देखा तब इस ढङ्ग से उसने अपनी जान बचायी।

किसी ने कहा—"इस तरह भाग कर कोई अङ्गरेजी राज से कहाँ जा सकता है ? जरूर एक न एक दिन पकड़ जाकर तेकठी पर चढ़ा दिया जायगा।"

किसी ने कहा—"नहीं यार पांडेचेरी या चन्दरनगर भाग जाय तो जान बच जायगी उसको कोई नहीं पा सकेगा।"

किसी ने कहा—"सुना है कि नैपाल में भी भाग जाने पर अंग्रेज सरकार का वहां अख्तियार नहीं है।

एक ने समझा कर कहा —"अजी अख्तियार क्यों नहीं है। बात यों कि जो कसूरवार भाग कर वहां जायगा तो जैसे यहां सीधे पकड़ लेते है वैसे नहीं पकड़ सकते। वहां की सरकार को यह सरकार लिखेगी तब वह सरकार गिरफ्तार करके इस सरकार के हवाले करेगी। मतलब यह कि गिरफ्तारी में देर होगी लेकिन वहां जान से रिहाई नहीं हो सकती "

यही सर्वत्र चर्चा थी लोग रात का हाल सुन कर दांतों उंगली दबा रहे थे। राजा होटल में आराम कुर्सी पर बैठे अच्छी पोशाक में एक अमीर घराने के बाबू अखबार पढ़ रहे थे। उनके ललाट पर कुन्तलीन तेल की बसी हुई चौरुखी पट्टी उनकी कमीज के गिनी सोने के चम चमाते बटन, बालों की नोक पर जड़े हीरे की चमक, उनके दहने हाथ की अनामिका की बढ़िया आबदार नीलम जड़ी अंगूठी, उनकी कमर के नीचे फरस डॉगा की ब्लू किनारी वाली भूनी धोती, उनके पांव का डासन कम्पनी वाला सुबुक खुरी का जोड़ा, गले में जड़ाऊ गोप देखने वालों को अच्छी तरह बतला रहा था कि यह बाबू कलकत्ते के टागोरफेमिली के होंगे या किसी राय घराने के भूषण होंगे अथवा राजा पद्योत कुमार के नातेदारों में होंगे।

वह ऊपर से तो अखबार पढ रहे थे लेकिन पासही बैठे चार आदमी जो रात के प्रताप के भाग जाने की बात पर बहस कर रहे थे उन पर उनकी कनखी चल रही थी।

इसी समय उनकी नजर एक दुबले पतले आदमी पर पड़ी। अखबार पढ़ने वाले बाबू ने उसे अक चका कर देखा और जेब से एक फोटू निकालकर मिलाया।

मिलाने पर बाबू को बड़ा आश्चर्य हुआ। थोड़ी देर पर वह दुबला पतला जवान उठ कर वहाँ से चलता हुआ। बाबू भी उसके पीछे नजर बचाकर चले।

स्टेशन के बाहर प्रोफेसर छत्रे का सर्कस आया था। बड़ी धूम धाम से तमाशा कर रहा था। उसको देख भाल कर वह आदमी सूरज कुण्ड पहुँचा। वहाँ पुल के पास न्यू अलफ्रेड नाटक कम्पनी अपना वीर अभिमन्यू नाटक खेल रही थी। वह आदमी टिकट लेकर उसी में घुस गया।

जब बाबू भी टिकट लेकर भीतर जाने लगे तभी एक बूढ़े ने पीछे से पहुच कर उनके कन्धे पर हाथ रक्खा। उन्होंने देखा कोई बूढ़ा सौदागर है। लेकिन चेहरा देखते ही बूढ़े ने माफी माँगी और "मुझसे भूल हुई।" कह कर चला गया।

अब ज्यों ही बाबू भीतर गये थियेटर के एक आदमी ने सामने से झुक कर सलाम किया। और उनसे प्रताप के भागने की चरचा छेड़ कर बातें करने लगे। थियेटर वाले की बातों से मालूम हुआ कि वह उनको सॉवल सिंह जासुस समझते हैं। अब हम भी इन बाबू को सॉवल सिंह ही कहेंगे।

सॉवल सिंह उस दुबले पतले के पास ही जाकर बैठ गये। थोड़ी देर चारो ओर ताक कर उन्होंने उस आदमी से जिसका पीछा करते हुए आये थे कहा– 'आज आदमी बहुत कम हैं?"

उनकी तरफ ताके बिना ही उसने जवाब दिया–' हाँ यहाँ आशिक माशूक के चोंचले नही न हैं। अगर गुलबकावली

इन्द्र सभा होती लयला मजनू का खेल होता तो लोगों की पीठ पर पीठ छिलती होती।"

अब वह बाबू अर्थात् सॉवल सिंह भी बातों में मिस्री घोलने लगे। मुसुकरा कर उन्हों ने पूछा—"यह लम्बी आँख वाली कौन स्टेज पर आयी है यार! इसकी चितवन तो कमाल करती है बाप रे बाप कौन ऐसा है जो इस तीरे निगाह से घायल नही हो जायगा।"

लेकिन वह पहले आया हुआ आदमी इन बातों से खुश नही हुआ। अब वह इनकी बातों का जवाब न जाने क्यों टाल मटोल में देने लगा। उसने कहा—"यह तो प्रोग्राम से, मालूम हो जायगा।"

"यह खेल कैसा है?"

"हाथ कङ्गन को आरसी क्या!"

कहकर वह आदमी उठने लगा। अब सॉवल सिंह ने उसका हाथ पकड़ कर पहले आदर से रोका। कहा—'ठहरिये आपसे कुछ बातें करना है।"

उसने बिगड़ कर कहा—"मैं तो आप को नही पहचानता?"

"नही पहचानते होंगे।" जब सांवलसिंह ने इतना कहा तब उसने झुंझला कर कहा—"तब मुझ से पूछना आप को क्या है?"

सा०—जी कुछ तो पूछना है नही तो नाहक आपको तकलीफ मैं नही देता।

यही कह कर,सॉवल सिंह ने जेब से फोटू निकाल कर उसके हाथ में दिया। कहा—'आप इनको पहचानते है?"

उसने उसी तपाक से कहा—'जी नहं ! मैं ने यह चेहरा कभी नहीं देखा।" यही कह कर वह आदमी चलता हुआ।

साँवल सिंह सहम कर वहीं रुक गये। थोड़ी ही देर पर पीछा करने के लिये बाहर आये लेकिन फिर उसका कुछ पता नहीं चला।

चवालीसवां बयान

स्त्री पुरुष के वेष में।

उस बूढ़े सौदागर को शायद हमारे पाठकों ने पहचाना होगा। वही लँगट्ट बाबा थे। नाटक से उठ कर वह सूरजकुण्ड की एक-गली में गये जहां जूए वालों का एक अड्डा था। वहां पहुंचने पर देखा तो केशव बाबू भी एक दाँव पर बैठे हैं।

थोड़ी देर पर वह दुबला जवान केशव बाबू के बगल में जा बैठा। अब उनकी बातें होने लगीं। लगट्ट भी गुप्तरूप से सब देखने लगे। उसकी आवाज से लगट्ट का चेहरा बिलकुल बदल गया।

उस ज्वान ने लँगट्ट को दिखा कर केशव बाबू के कान में कुछ कहा। अब केशव लँगट्ट की ओर ताक कर बड़ा चकित हुआ। और उस जवान के साथ ही बाहर निकला।

लॅंगट्ट ने भी उसका छिप कर पीछा किया। लेकिन फिर सॉंवल सिंह पहुँच कर लॅंगट्ट के शामिल हुए।

सॉंवल सिंह ने बहुत धीरे धीरे कहा "ओफ चेहरे का ऐसा मिलान हो मैं ने देखा ही नहीं। मुझे तो वह केशिनो ही मालूम देती है।"

'उँ! हूँ! मामला बडे गहरे जा रहा है। चलो अभी उसका पीछा करें।"

अब केशव बाबू उस दुबले पतले को साथ लिये हुए कम्पनी बाग में घुसे। आसमान में बादल छाये थे। काली घटा के मारे इतना अन्धेरा था कि केशव ने टटोल कर कठिनता से बेञ्च पाया।

उसी पर बैठ कर उससे पूछा—"क्यों! कैसा हाल है खबर तो कहो?"

"खबर क्या पूछता है शैतान! तू बोल मेरी बहन का तूने क्या किया! अगर सब हाल साफ नहीं कहेगा तो मैं तुझे फांसी चढ़वा दूँगी। समझता है या नहीं?"

के०—अरे इतना मिजाज आसमान पर क्यों?

'बस अब बहुत सी बातें मुझे मालूम हो गयीं। तू अब मेरी मुट्ठी में है। जब चाहूं तब तुझे तिकठी पर चढ़ा दूं।"

के०—तो यहां फसाद करना है क्या?

"जरूर! करना है।"

के०—लेकिन मेरे पाले पड़ने पर क्या गत होगी सो तो मालूम है न!

"खूब मालूम है।"

के०—तब किस विरते पर हम से दुश्मनी की हिम्मत हुई है तुमको ?

'अब तुम्हारा डर नहीं है मुझको तिल भर भी।"

के०—क्यों क्यों ! अब क्या हुआ ?

"अब मुझे वह सब बातें मालूम हो चुकी जिनके जाहिर कर देने से तुमको फांसी हो जायगी।"

के०—देखो बलकेसा ! मुंह सम्भाल कर बातें करो। यहां इस महा अंधियारी में कोई नहीं है। यहीं गला दबा दूंगा तो कोई गोहार करने नहीं आवेगा।

"अभी मैं पुकारूँ तो तुम्हारे यमराज हसा दम तुम्हारे कपार पर"

"अच्छा तो ले पुकार।" कह कर केशर उस पर टूट पडा और इतना जोर से उसके सिर में मारा कि बेहोशी के मारे वह धरती पर गिर गयी।

लेकिन इसी समय लंगड़ बाबा वहां पहुंच गये। उन्होंने देखा तो केशर भी वहीं मरा पड़ा है। हाथ रखकर देखा तो लाश बरफ सी ठंडी हो गयी है। नाड़ी नहीं चलती। छाती पर हाथ रखा तो धड़कन नहीं है। लंगड़ ने समझ लिया कि दिलकी हरकत बन्द (हार्टफेल) हो जाने से ही यह शैतान मर गया है।

सांवल सिंह जब वहाँ पहुँच गये। लंगड़ ने कहा—"यह पातकी तो आपही मर गया। अच्छा जल्दी एक गाड़ी लाओ।"

साँवल सिंह उसके वास्ते बन्दोबस्त करने चले। लंगड़ ने उस बेचारी का सिर गोद में लेकर देखा तो बेहोश है। खयाल

कर कपडा पानी में भिगो कर मुँह और सर आँखों पर फेर ने लगे थोड़ी देर पर उसने आँखें खोली कहा—"बचाओ बचा-"

ना डरो मत बेटी ! डरो मत।"कहकर लॅगट्ट ने प्रबोध दिया वह फिर बोली—' अरे ! यह कौन बोलता है। मैं कहां हूँ ?"

फिर उसकी नजर केशव की लाश पर पड़ी देखते ही उसने पूछा—"यह कौन है ?"

"यह हमारा और तुम्हारा दुश्मन है। उसी ढोंढू की लाश है।"

अकचकाकर उसने पूछा—"ऐं ! ढोंढू मरा है। उसने तो हमीं सबको मार कर बेहोश किया था।"

लॅ—हाँ लेकिन उसको खबर नही थी कि मारने वाले से बचाने वाला जबरदस्त है।

"अभी उसकी मार से मैं बेहोश हो गयी थी। लेकिन मैं नहीं जानती कि इसको किसने मारा ?"

लॅ०—इसके दिलकी हरकत बन्द हो गयी तुमको मारने के आधे ही सेकण्ड बाद तो यह कटे रूख की तरह गिरा है। इसके पाप की नाव ऐसी लद गयी थी कि तुमको मारने के बाद एक पग भी आगे नही जा सका है।

"आप कौन है ?"

लॅ०—मैं तो दलजीत सिंह हू।

इतना सुनते ही वह मानों आस्मान से गिरी। बोली—' ऐं मरे हुए आदमी को मैं कैसे देखती हू। या भगवान मैं जागती हूँ या सपना देखती हूँ ?"

लॅ० नहीं तुम जागती हो।

"अरे तो यह सफेद बाल तो उनके नही थे !""

अब नकली रूप हटा कर लॅगटू ने अपनी असली सूरत दिखाई अच्छी तरह देखकर उसने उनकी गोद में अपने तई ढील दिया।

अब लॅगटू ने उसको झाड पोंछ कर बिठाया तब वह बोली—"जब मैं इस चाण्डाल के सामने आई तब देखा था तुमने ?"

लॅ०—लेकिन पहचाना नहीं। अब जब तुम्हारी बोली मैंने साफ सुनी तब पहचाना है। मैंने तो पहले तुमको केशिनी समझा था।

'मैं केशिनी के लिये ही केशव से झगड रही थी ?'

लॅ०—वह कौन है।

"वह मेरी जीआं बहन है।"

लॅ०—तो वह है कहाँ ?

मुझे तो अभी मालूम नहीं है। उस पातकी शैतान से मैं यही पूछ रही थी।"

लॅ०-ओहो! बस अब मैं समझ गया अच्छा एक महीने से ऊपर हुआ तुम केशव से एक नाले के किनारे भेंट करने गयी थी ?

"हा गयी थी"

लॅ०—तुम्हारे साथ में कोन था।

"मेरे साथ में वही लच्छन था"

लॅ०—ओहो अब मैं समझ गया तो केशव का खून सचमुच हुआ है!

इसी समय साँवल सिंह वहा जा पहुँचे लँगटू ने उससे पहले ही केशव की लाश का बन्दोबस्त कर दिया था। अब

जवान के वेष में उस युवती को साथ लिये हुए लँगट्ट गाडी पर सवार हुए। सांवल सिंह कोच बक्स पर जा बैठे

कुछ दूर जाने पर दो सिपाहियों ने गाडी रोक ली। एक ने तुरत घोडे के पास पहुँच कर रास पकडी। दूसरा जाकर गाडी का दरवाजा खोलने लगा। लेकिन साँवल सिंह ने उन को डाँट दिया तब पहचान कर दोनों ने गाडी छोड दी।

अब गाडी उस जाली नोट बनाने वाले के मकान पर पहुँची। साँवल सिंह झट उतर पडे। उन्होंने लँगट्ट से पूछा—"इनको क्या करना होगा?"

"अभी मैं बतलाता हूँ। पहले भीतर तो चलें।"

फिर लँगट्ट ने उस स्त्री के कान में कुछ कहा तब वह भी उतर कर उनके साथ चली। साँवल सिंह आगे आगे रास्ता दिखाते हुए चले।

पैंतालीसवाँ बयान



शैतान का साथी।

दूसरे दिन सवेरे उसी जालसाज के मकान में एक छोटी सी सभा बैठी। लँगट्ट बाबा एक अलग आसन पर विराजे। उनकी बगल में एक सुन्दरी विराजमान हुई। यह सुन्दरी वही है जो जवान के वेष में केशव की मार खाकर बेहोश हुई थी। जिनको मारने जाकर केशव आप काल के गाल में जा पडा।

जिस केशिनी के खून का अपराध प्रताप के ऊपर पर थोपा जाकर उसको फांसी का हुक्म दिया गया था उसकी यह स्त्री पूरी नकल है। लेकिन विशेष ध्यान से देखने पर दोनों का अन्तर जान पड़ता है। इस सुन्दरी का नाम बलकेशा बाई है।

बलकेशा के चेहरे पर जो मधुरता और सौम्यभाव है वह केशिनी के चेहरे पर नहीं है। पूना भी वहां बैठी सब का चेहरा बारी बारी से देख रही है। मूला बीबी और सांवल सिंह भी बैठे हैं।

बलकेशा ने ही पहले सन्नाटा तोड़ा कहा—"मैंने समझा था कि नकली वेष में मुझे कोई जीत नहीं सकेगा लेकिन मूला बीबी से मैं हार खा गयी।"

मू०—मैं आज उन्नीस बरस से वेष बदल कर घूमती हूँ। इस काम में मेरा हाथ मँजा हुआ है।

फिर लँगड़े बाबा से कहने लगी-"जब मैं चपरासी बन कर केशव की चपरासगीरी करती थी तब भी मुझे किसी ने नहीं पहचाना। फिर मैं गाड़ीवान बनी। जब आपको उन चाण्डालों ने चोर कोठरी में बन्द किया तब उन शैतानों को इसका पता थोड़े था कि कोई इस बूढ़े को वहां से निकाल देगा।

ल०—सो तो सब मैं मानता हूँ लेकिन उस शैतान लच्छन का सन्देह आप पर खूब था। बड़े संयोग से आप उस मौके पर गयीं।

पूना चुप चाप उन लोगों की बातें सुन रही थी। अब

लॅगट्ट का मुंह लाल हो आया। लेकिन सम्हल कर बोले-"मैंने भोले पन से आपको अपनी हैसियत नहीं बतलायी। मतलब मेरा यह था कि आप मेरे धन को नहीं मुझको प्यार करें। लेकिन अब देखता हूं तो उसी से सब अनर्थ हुए हैं। क्योंकि आपके सरपरस्त सरदार लोग अगर यह जानते कि मुझे आपकी बपौती से कई गुनी अधिक सम्पत्ति है तो वे लोग इतना गोल माल नहीं करते न हम लोगों पर ही इतने ग्रह आते।

बल०—कुछ परवा नहीं। गत न शोचामि कृतम् नमन्ये जो प्रारब्ध है उसको कौन तोड सकता है। किसी कवि ने ठीक कहा है कि भाल लिखो लिपि टारि सकै को। चाहे जो हो। मैं अपना खोया हुआ धन पाकर सब दुःख भूल गयी और भगवान को अब धन्यवाद करती हूँ।

"आप आगे का हाल कहिये सुनने को मन बहुत उकता रहा है।

बल०—आगे का हाल क्या कहना है। मैंने सब से छिपा कर इन्हीं अपने मन के बादशाह से ब्याह करा लिया। जिस रात के शादी हुई उसी रात के ढोंढा और लच्छन ने अपने गुण्डों के साथ तैयार होकर ब्याह मण्डप पर आक्रमण किया। मैं भी अपने प्यारे को बचाने जाकर घायल हुई। जब वे सब बेहोश करके ले जाने लगे तब मैंने अपने प्यारे को खून से लेदफद पडा देखा था। मैं उसी रात के बिराग हो गयी। जब मैं होश में आयी तब अपने तई एक भयावनी कोठरी में बन्द पाकर अपना सङ्कट समझ गयी। एक तो घायल थी ऊपर से कैद की आफत फिर खाने पीने या दवा दारू का

कुछ इन्तजाम नही। जिस चाण्डालिनी के घर में मैं बन्द की गया उस राक्षसी को भी एक वर्ष पर स्वर्ग से बुलौआ आ गया। वह मरती बेर मुझे यह कह कर रिहाई दे गयी कि मेरी बहन जीती है। लेकिन मेरे स्वामी की कुछ बात उसने नही बतलायी। मुझे यह सपने में भी भरोसा नही था कि उनका फिर दर्शन पाऊगी या वह जीते है।

पू०—ओ हो! तब तो अब बडा ही आनन्द का दिन है अच्छा आगे कहिये।

ब०—अब मैं मर्द का वेष लेकर पातकी ढोंढा की खोज में निकली। बहुत दिनों पर यहा उसको मैंने पकडा और अपनी बहन के पुन होने की खबर पढ कर उससे पूछने लगी थी। उसने कहा था कि केशिनी बहन मरी नही है लेकिन उसी के जरिये से प्रताप की दौलत हथियाने का उपाय हो चुका है। मैंने बहन से भेंट करना चाहा उसने कहा यह मामला खतम होने पर दोनों बहन को मिला देगा। मुझे उसने दूतिनी बना कर जेल में भेंट करने को भेजा मैं गयी प्रताप ने मुझे केशिनी समझा। मैंने भी अपने तई छिपा डाला लेकिन फिर ज्यों ही अपना परिचय देने चली त्यों ही मुझे उस कमरे से झट निकाल दिया गया। इसके बाद जब जब मैंने प्रताप का भला करना चाहा तब तब इन शैतानों ने मुझे लाचार कर दिया। अब इरादा था कि फासी के दिन अफसरों से सब हाल कह दू गी इतने में प्रताप के भाग जाने की खबर मिली। फिर कल रात के जासमिनी और जासूस की नजरों में पड कर मैं विस्मय का कारण हुई। थियेटर में ढोंढा को न देख कर मैंने सूरज कुण्ड पर जूए के अड्डे में उसको पकडा। वहाँ मे

उसको साथ लिये हुए मैं बहन को उबारने की गरज से मौके पर पहुंची। वहाँ उस चाण्डाल ने मुझ पर वार किया। मैं बेहोश हो गयी। जब मैं होश में आयी तब मैंने अपने तईं स्वामी की गोद में पाया पहले सपना जान पड़ा लेकिन जब मैंने असली रूप में इनको देखा तब सारा सपना सचा ही हो गया। उस घडी मुझे उस धूर्त्त की लाश दीख पडी।"

सब सुन कर पूना ने बडे आदर से बलकेशी का आलिङ्गन किया। बोली-"वाह बहन! मुझे नही मालूम था कि इन लंगटू बाबा की जटा में भी कोई डिबिया है। खैर आप लोगों के मिलने से मुझे बड़ा आनन्द आया।

बल०—अब मैं चाहती हूं कि पूना से प्रताप का मिलन होवे तब गढ के जलसा किया जाय।

पू०—यह तो भगवान के हाथ है बहन!

बल०—अब उसमें देर नहीं है ढङ्ग से जान पडता है कि दुष्टों के दमन और शिष्टों के पालन का समय आ गया है।

पू०—तुम्हारे मुंह पर चन्दन अक्षत पडे बहन। तुम्हारा जोडा युग युग प्रसन्न रहे। लेकिन बाबा अब तुमको मैं सदा बाबा ही कहूंगी। भला तुम इतने बडे धनी होकर भी ऐसी गरीबी में क्यों दिन बिताते रहे सो तो कहो?

लं०—अच्छा सुनो मैं सब कहता हूं। जब इनसे मेरा ब्याह हुआ तब भी इन्होंने नहीं बतलाया कि इनको कोई जोआं बहन है। खैर मैं ब्याह की रात गुण्डों की शैतानी से बेहोश हो गया। जब होश में आया तब मैं अस्पताल में था। दो धायी सेवा करती थी सामने एक पुलीसमैन था। मुझे आँख खोलते देख कर उन्होंने पूछा-'आप कैसे हैं?" मैंने ब्यारी का

हाल पूछा। उन्होंने कहा पुलीस के आने के पहले ही गुण्डे उनको लेकर कहीं भाग गये। एक ने कहा वह मर गयी इससे लाश हटाई गयी मैं फिर बेहोश हो गया। इक्कीस दिन बाद आराम होकर उठा। लेकिन दुनिया मुझे तुच्छ जँचने लगी। जिसके साथ संसार बसाने की मन में थी उसी को शैतानों ने संसार से विदा कर दिया तब मेरे जीने में क्या है। लेकिन मेरे मन में कोई कहने लगा कि मेरी प्यारी मरी नहीं है। फिर मिलान होगा। तब मैं आशा पर जीने लगा। मुझे पता लगा कि शैतानों ने चांदी के तह में मामले को छिपा डाला। ढोंढा का भी कुछ पता नहीं लगा तब मैंने एक वसीयत करके अपने वकील को दी और कमर कस कर प्यारी को ढूढने के वास्ते निकल पड़ा। जिनकी खोज में खाक छानता हुआ बड़े बड़े नगरों का चक्कर काट के आया एक बार काशी की कुञ्जगली में उनको बड़े ठाट बाट से देख कर दङ्ग होगया जब मेरी समझ में आया कि यह ठाट करके प्रेमी की खोज में गलियों भटक रही है तभी मुझे स्त्री मात्र से घृणा हो गयी। और दुनियां में मैंने जब तक जिन्दगी रहे लोगों का उपकार करना ही ठान लिया। तभी से मैं गरीब भिखमङ्गे के भेष में लंगट्ट होकर रहने लगा। मेरे मन में पहले ही से था कि जासूसी करके सरकार और प्रजा को मदद दूँगा। वही काम मैं करने लगा। इस से जैसे सर्व साधारण प्रसन्न हुए वैसे ही अफसर लोग भी मेरी निःस्वार्थ सेवा से आह्लादित होकर मेरी मान-मर्यादा करने लगे। मैं इन्हीं से रूप बदलने में जैसा पका हुआ जीभ घुमाकर आवाज बदलने में भी वैसे ही मज गया। इस तरह मैं सन्यासी होकर संसार का उप

कार करने लगा। पूना का सच्चा प्रेम और प्रताप का दिल देख कर सदा इन की मदद पर तैयार रहा हूं। उसके बाद तो जो कुछ हुआ वह आप लोगों से छिपा नही है। जब उस रात के केशव ने जवान मर्द को स्त्री का नाम लेकर पुकारा तब मेरा माथा ठनका पीछे तो सब बातें जाहिर हो पडीं।

पूना बोल उठी-"मैं तो बाबा आपकी करनी से उऋण नहीं होऊंगी। हम दोनों आदमी जिन्दगी भर आप के ऋणी रहेंगे। भगवान की दया से आप लोगों का मिलना देखकर जो मुझे आनन्द हुआ है वह कह नहीं सकती।"

इसी समय किसी ने किवाड पर धक्का मारा। मूला ने झट दरवाजा खोला तो दमडी भीतर आया। और अकचका-कर सब की ओर देखने लगा।

लॉं०—क्यों बेटा क्या खबर लाया है?

द०—लच्छन भी विदा हुए।

लॉं०—'कैसे बेटा! कैसे?"

द०—आप ने जो गोली मारी थी उसी से उसकी जान गयी। पहले उसने जखम मामूली समझा था लेकिन जब साथी का मरना सुना तब से वह अब तब की हालत में है। इसी से खबर देने आया हूँ।

लॉं०—अच्छा किया बच्चा। चलो मैं अभी रूप बदलकर आता हूँ। उससे कई बातें पूछने की हैं। अगर मर जायगा तो कुछ भी पता नहीं चलेगा।

———

लँ०—अच्छा किया बच्चा। चलो मैं अभी रूप बदल कर आता हूं। उससे कई बातें पूछने की है अगर मर जायगा तो कुछ भी पता नहीं चलेगा।

छियालीसवां बयान



केशव के महल में डाकृर ने पहुंच कर देखा कि एक सुन्दर हवादार कमरे में लच्छन मरन सेज पर पड़ा है। उस पातकी के चेहरे पर वह तेजी आज नहीं है। उसका निडर-पन अब दूर होगया। ललाट से पसीना चल रहा है। कण्ठ सूखा जाता है। देह में जैसे सैकड़ों बिच्छू डङ्क मार रहे हों वैसे आह के मारे छूट फटी जाती है उसकी बिकलता उसका उद्वेग और उसकी छट पटाहट देखने वाले का धीर छूट जाता है। सामने ही एक ओर डाकृर और दूसरी ओर पड़ोसी बैठे हैं। लँगटू बाबा वहीं पहुंच कर धीरे धीरे बगल में आ खड़े हुए।

लच्छन ने आह करके डाकृर से पूछा—"अब कितनी देर है डाकृर साहब ?"

कुछ देर चुप रह कर डाकृर ने कहा—"कोई डेढ़ दो घंटे के तुम मेहमान हो। जो कुछ करना हो कर डालो ?"

ल०—अब करना धरना क्या कहे कबीर अब का बनिहैं जब चार जना मिलि काध उठाये।

नकली चेहरा उतार कर लँगटू ने सामने जा कहा—"हाँ! हाँ! करना धरना जरूर है।"

उनको देखते ही लच्छन की त्योरी चढ़ गयी। बोला।

—"तुम किस हिम्मत पर यहां आये ?"

लॅ०—खाता तो छौंद करना होगा न ?

"किसका खाता।"

ल०—तुम सच्ची बात कहो केशिनी का किसने खून किया है ?

इतना सुनते ही लच्छन का मुंह लाल हो पडा-"बोला वह तो मरी नही है।"

ल०—कहां है तब ?

"वह नैनी के पागल खाने में है।"

अब लगट्ट ने मुट्ठी गज से आनरेरी मेजिस्ट्रेट को बुला कर कहा सब बातें अब मरती वेर तो कह दो।

तुम लिखो हम सही कर देंगे। अभी हम को बेहोशी नहीं हुई है। यही लिखना सच्ची बात मैं कहता हूँ। जब केशिनी भी कपडे पहने जङ्गल में पहुची। वहीं हम लोग मौजूद थे। उसको घर ले जाकर ही हम लोगों ने प्रताप को पीस डालने से लिये चक्र रचा। तुरत ही कार्फे का हुआ मुर्दा गंगा से उठा लाये और केशिनी के गहने और कपडों से उसको सजा कर जमुना के किनारे रखा। तुरत पुलीस में खबर दी लेकिन चेहरे का मिलान नहीं होने से काट पीट कर ऐसा कर दिया कि पहचानी नहीं जा सके। इधर केशिनी कुछ गडबड न करने पावे इसी डर से उसको वह हथकडी भरकर पागल खाने में भरती करा दिया उसके बाद तो जो कुछ हुआ वह बालक बूढ़े सबको मालूम है।

अब आनरेरी मेजिस्ट्रेट के सामने ही लॅगट्ट ने सब बयान कागज पर लिखा दिया लच्छन ने वेखटके होश हवास में उसपर,

सही की उसकी नकल करके उस पर भी सही करली गयी और ज़िला जज के पास भिजवाने का बन्दोबस्त किया। ज़िले के मालिक कलेक्टर को भी खबर हुई। उसी दम पुलीस भेज कर पागल खाने से केशिनी बुलाई गयी। उस की पहचान भी हुई। मेजिस्ट्रेट ने पहुच कर लच्छन का बयान लिया।

लच्छन ने लगट्टू से कहा-"तुम्हारे यहाँ तो हमारा भी कुछ हिसाब बाकी है। तुमको मैंने बहुत दिनों से पहचाना है। केशव ने भी पहचान लिया था।"

ल०—भगवान ने तो पहलेही वह हिसाब चुकता कर दिया है।

"क्यों क्या बलकेशा तुम को मिल गयी है।"

लॅ०—हाँ केशव की जान जिस भगवान ने ली उसी ने मेरी प्यारी को मुझे उसी रात के सौंप दिया।

इतना सुनतेही लच्छन का चेहरा प्रसन्न हो आया। लगट्टू ने हाथ मिलाया। फिर थोडा हट कर बोले-"तुम ने तो बडे बडे पातक किये हैं लच्छन? मैं चाहता तो कभी का तुम से हिसाब चुकता कर लिया होता। लेकिन सब के सामने फासी चढ़ाने के लिये सबूत जुटाने की कोशिश करता रहा। मुझें नहीं मालूम था कि भगवान तुम लोगों के समान पिशाचों को फाँसी की पवित्र ताँत में लगाना नहीं चाहता इसी से अब इस तरह तुम्हारा अन्त होता है। मरती बेर परमात्मा का गुणानुवाद करो। पापका बोझा हलका हो जायगा। अन्त में शान्ति मिलेगी। जिसका अन्त भला उस का सब भला। अङ्गरेजा में भी कहते हैं। All well which end well

उपसंहार ।

अब सब ठीक होगया। लच्छन के अन्तिम बयान प
भरोसा किया गया। केशनी पागल खाने से इजलास प
लायी गयी। उसकी सहोदरा बहन वलकेशा ने पहचान की
जेल से लगट्टू और प्रताप के भाग जाने का असल भेद जान
पर अधिकारियों ने उन को क्षमा कर दिया।

पूना के मा बाप पहले डरे थे लेकिन लंगट्टू ने खुद जाक
उनकी तसल्ली की थी। अब प्रताप के बेगुनाह छूटने पर ख
में खुशी हुई। पूना से प्रताप का व्याह हो गया उसमें सेश
जज, कमिश्नर और कलेक्टर भी नेवते गये थे।

व्याह हो जाने के बाद खुशी में प्रताप ने मूला को इत
रुपया दिया कि उनके स्वामी कपिलदेव ने भी पुलिस क
नौकरी छोड़ दी।

प्रताप ने भी वकालत करना छोड दिया। अब प्रताप औ
लगट्टू का बडा घरौआ हुआ। पास में धन बहुत था। बङ्क
जमा कर के उसीके सूद से अपना निर्वाह करने लगे
बाकी जिन्दगी प्रताप और लगट्टू दोनों ने संसार का उप
कार करने में बितायी। जैसे पूना और प्रताप तथ
लंगट्टू और वलकेशा का जीवन सुखमय हुआ वैसाही भग
वान सब का करें।